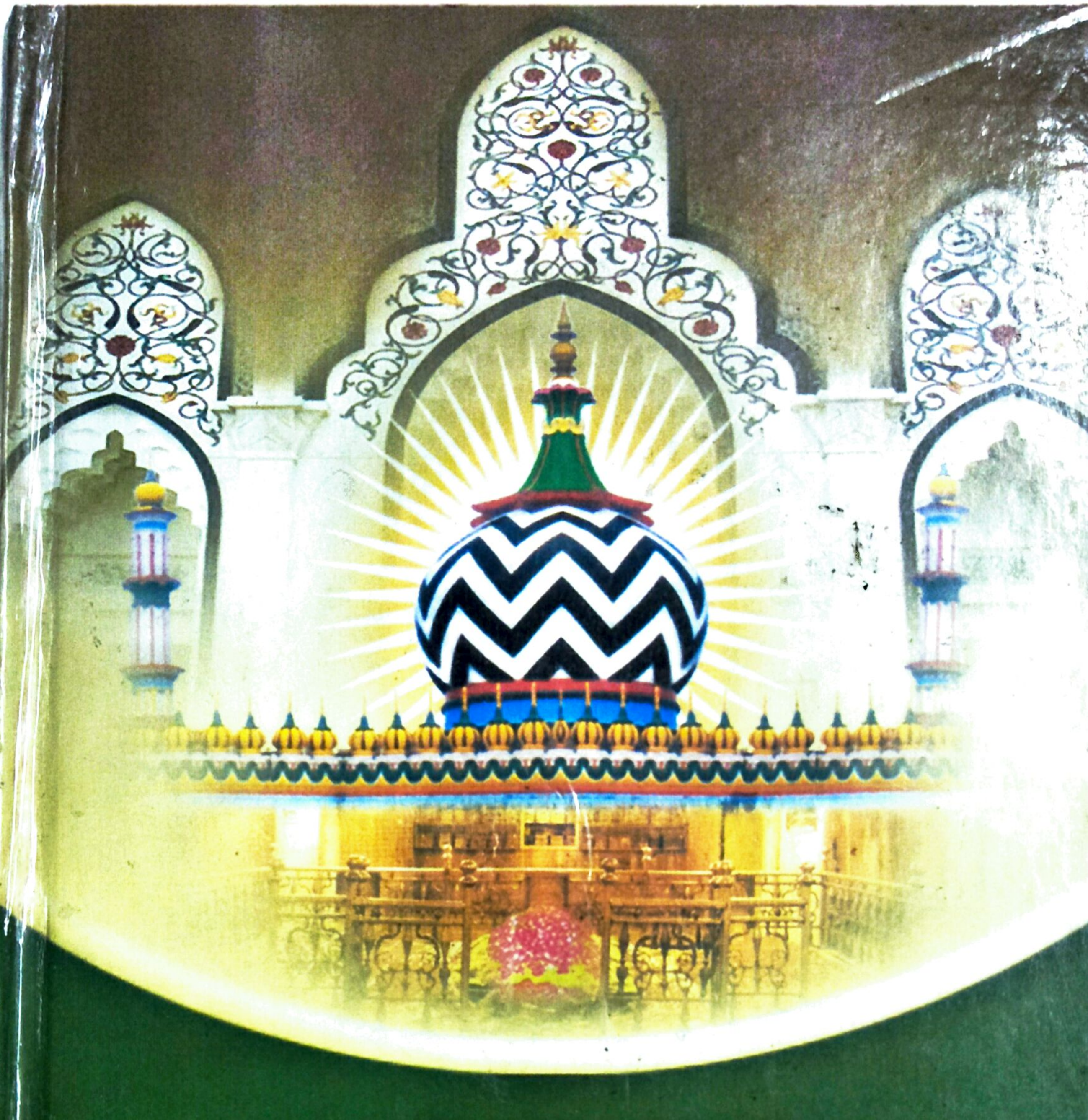

शमा

शबिस्ताने रज़ा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

आला हज़रत अज़ीमुल बरकत और दीगर आकाबिर अहले सुन्नत के मजमूअए अमलियात का ला जवाब इन्तिख़ाब

यानि

शमा शबिस्ताने रज़ा

हिस्सा दोम

मुरत्तिब

इक़बाल अहमद नूरी

अनुवादक

मौलाना मुहम्मद आरिफ

नाशिर

मक्तबा जामे-नूर

422, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली - 6

शमा शबिस्ताने रज़ा

इमाम अहले सुन्नत आला हज़रत, मुजददिदे दीन व मिल्लत शमा शबिस्ताने असफ़िया, ज़ीनत बज़्मे औलिया मौलाना शाह अहमद रज़ा खां साहब रहिमतुल्लाह अलैहि और दीगर औलियाए किराम रहिमहुमुल्लाहु तआला के मजमूआ हाय आमाल का इन्तख़ाब लाजवाब यानि शमा शबिस्ताने रज़ा जिसका पहला हिस्सा कुछ सालों से आम व ख़ास के दिलों को मुनव्वर कर रहा है। इसकी मक़बूलियत का अन्दाज़ा इससे होगा कि पहला हिस्सा बहुत कम मुद्दत में 11 हज़ार की तादाद में ज़ेवरे तबअ से अरास्ता होकर ख़त्म हो चुका। जितनी जितनी शमा अव्वल की मक़बूलियत बढ़ती गयी उतनी ही दूसरे हिस्से की फ़रमा इशात बढ़ती आख़िर वह वक़्त आ ही गया कि अब हिस्सा दोम आपके हाथों में है। पहले हिस्से में ना तजरबा कारी की बिना पर बहुत कुछ ख़ामियां रह गयी थीं इसीलिए दूसरे हिस्से की तर्तीब और इन्तख़ाब में काफ़ी वक़्त सर्फ़ करने का ख़्याल था मगर मौला तआला जो चाहता है वही होता है इसकी तर्तीब व तबाअत का अज़्म उस वक़्त हुआ जबकि उर्स रिज़वी शरीफ़ में सिर्फ़ 22 दिन बाकी हैं इतने वक़्त में तलाश व जुसतजू, तर्तीब व किताबत, तसहीह व तबाअत कितना दुश्वार और अहम काम है ऐसी हालत में कोई लग़ज़िश और इन्तख़ाब व तर्तीब में किसी क़िस्म की ख़ामी न रहना अजीब तर होगा। इसीलिए अहले नज़र से इस्तिदआ है कि वह जहां कहीं भी ख़ामी या कमी पाएं तो बराहे खुदा फ़क़ीर को मुत्तलअ फ़रमा कर माज़ूर हों ताकि अगले एडीशन में इस्लाह कर दी जाए।

इक़बाल अहमद नूरी

फेहरिस्त मज़ामीन (हिस्सा दोम)

क्या.....?	कहां.....?
1. शमा शबिस्ताने रज़ा	159
2. नाज़िरीन शमा से बातें	160
3. हिदायद बराये आमेलीन	161
4. तसख़ीर व मुहब्बत का बेमिस्ल तोहफ़ा	163
5. अमल तसख़ीर व उक्दतुल मुहब्बत	164
6. कितावूत अमराज़	170
7. अमराज़ ज़नाना	178
8. मुत फ़र्रिक़ नक़्श व अमल नुस्ख़ा जात	184
9. इल्मुल आदाद	194
10. इस्तिख़ारा अज़ इल्मुल आदाद	195
11. मिफ़ताहुन्नुकूश यानि कुंजी	203
12. नक़्शा असमाए बारी तआला	206
13. हरूफ़ कमरी के आदाद	209
14. इस्मे आज़म शरीफ़ की तलाश	210
15. मुख़्तसर फ़वायद असमाए हुस्ना	218
16. इस्मे आज़म से मुताल्लिक़ ज़रूरी नोट	254
17. ज़कात की क़िस्में	255
18. अहदनामा मय असनाद व फ़वायद	258
19. चराग़ ख़ुर्द बराए वुसअत रिज़्क़	263
20. क़ज़ाए हाजात के लिए तीरबहदफ़ नमाज़ें	264
21. अमल बेनज़ीर क़ज़ाए हाजात	271
22. हर मुहिम की आसानी के लिए	271
23. नमाज़ क़ज़ाए हाजत	272
24. अमल हल्लुल मुशिकलात	273
25. 20 का नक़्श हर काम के लिए	273
26. दाना सुलेमानी हासिल करने का मुजर्रब अमल	273
27. दावत या बहाब	275
28. अलहम्दु शरीफ़ का अमल	276
29. बड़ी से बड़ी मुश्किलात	276
30. ला जवाब इस्तिख़ारा	277
31. नक़्श दफ़अ जिन्न व आसेब	277
32. नक़्श दफ़अ सहर आसेब देव परी	277
33. बराए बवासीर ख़ूनी	278
34. नक़्श जामिअुल कमालात	278
35. बराए सरअ यानि मिरगी	278
36. नक़्शा हिफ़ाज़त तीर व तुफ़ंग वग़ैरह	279
37. नक़्श सूरह जिन्न	280
38. बराए जमीअ मुहिम्मात ख़त्म सग़ीर हुज़ूर	280
39. बराए वस्ल दोस्त और भागे व बिछड़े हुए से मुलाक़ात के लिए सिर्फ़ एक दिन	281

क्या.....?	कहां.....?
40. क़ैद से ख़लासी के लिए मुजर्रब.........	281
41. हर वह बीमारी जिससे आतिब्बा व मरीज़ आजिज़ हों	281
42. बिस्मिल्लाह शरीफ़ के पढ़ने का	282
43. बराए वुसअत रिज़्क़ व अदाए क़र्ज़.........	282
44. माशूक़ ख़ुद आशिक़ हो जाए	283
45. बराए मुहब्बत ज़न व शोहर	283
46. बराए उल्फ़त व मुहब्बत ज़ोजैन मुजर्रब	284
47. आसेब देव परी जिन्न वग़ैरह	284
48. बराए दफ़अ जुनुन व पागल	286
49. ख़ुद अपनी रूह को हाज़िर करने का अमल	286
50. नक़्श ख़लासी जिन्न व आसेब वग़ैरह	286
51. बराए तसख़ीर ख़ल्क़ अज़ ग़ौस आज़म	287
52. नक़्श दूसरे को अपनी मुहब्बत में मुब्तला करने का अमल	287
53. अमल बराए बुग़्ज़ व जुदाई	288
54. अमल बराए मुहब्बत मुर्जरब व आज़मूदा	288
55. इस्तिख़ारा बराए ख़लासी महबूस	289
56. चोरी का माल वापस मिलने का अमल व नक़्श......	290
57. तसख़ीर का बे नज़ीर मुर्जरब नक़्श	290
58. दिलों को मुसख़्ख़र करने का मुर्जरब अमल	291
59. बुर्ज़ुगों की रूह से मिलने का तरीक़ा	291
60. बदकारी की आदत छुड़ाने के लिए सूरह यासीन शरीफ़ का अमल	291
61. नक़्श हरकारा (हर काम के लिए)	293
62. नक़्श चेचक जदीद बे नज़ीर	294
63. अमल बा मुवक्किल के मुताल्लिक़ ख़ुसूसी हिदायत	294
64. मुवक्किल की क़िस्में	295
65. अमल बा मुवक्किल का अहसन तरीक़ा	296
66. क़िस्मत का इम्तिहान	181
67. लड़का ही होगा	182
68. हर इस्म इस्मे आज़म है	216
69. इस्तिख़ारे के बारे में ख़ुसूसी हिदायत	229
70. सूरह मुज़्ज़म्मिल शरीफ़ का अमल	260

नाज़िरीन शमा शबिस्ताने रज़ा से राज़ो नियाज़ की बातें

शमा अव्वल के बारे में जहां तारीफ़ के सैकड़ों ख़तूत आए कि इस किताब का हर अमल कामयाब हर नक़्श तीर बहदफ़ साबित हुआ वग़ैरह वग़ैरह। इसी सिलसिले में कुछ ख़तूत ऐसे भी आए कि हमने फ़लां अमल किया कामयाबी न हुई। मैं माहनामा "नूरी किरन" में ऐसे ख़तूत और उनके जवाब हमारी डाक के तहत छापता रहा। इस सिलसिले में कुछ बातें कहनी हैं।

1- बिना इजाज़त आमिल को कोई अमल न करना चाहिए आमाले रूहानियत में इजाज़त पहली शर्त है। हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक काफ़िर से फ़रमाते हैं कि इस पेड़ से कह कि तुझको अल्लाह के रसूल बुलाते हैं वह जाकर कहता है और पेड़ ज़मीन चीरता हुआ सरकार की बारगाह में हाज़िर होकर सलाम अर्ज़ करता है फिर हुज़ूर वापसी का हुक्म फ़रमाते हैं वह चला जाता है वह पेड़ यह नहीं देखता कि कहने वाला कौन है मुसलमान है या काफ़िर ? आज मैं आप और दीगर करोड़ों मुसलमान हैं किसी पेड़ के पास जाकर एक दो बार नहीं चालीस दिन एक पांव पर खड़े रह कर इन अलफ़ाज़ को लगातार रात दिन रटते रहें कोई नतीजा फ़राहम नहीं होगा। उस काफ़िर ने एक बार कहा और पेड़ ने उसके हुक्म पर अमल किया। बात केवल वही है हुक्म और इजाज़त लिहाज़ा बिना इजाज़त कोई अमल न किया जाए। शमा शबिस्तान की इजाज़त और उसकी शर्तें हिस्सा अव्वल में दर्ज हैं पहले इन शर्तों को देख लें फिर इसी के मुताबिक़

इजाज़त हासिल करें या किसी अमल की इजाज़त ब तरीक़ रूहानियत लें फिर अमल करें इसके लिए इस्तिख़ारा बेहतर है।

2- यक़ीन कामिल ज़रूरी है इजाज़त और एतक़ाद कामिल किसी अमल के इज़हार के लिए रूहानी बरक़ी दो तार हैं जो दिल व ज़बान के ज़रिए हरकत में आकर इलैक्ट्रिक की तरह असर करते हैं।

हिदायत बराए आमिलीन शमा शबिस्ताने रज़ा

ये हिदायतें हज़रत क़िबला अलहाज सूफ़ी अज़ीज़ अहमद साहब मदाह रसूल रिज़वी बरेलवी मद्द ज़िल्लहु को हज़रत हुज्जतुल इस्लाम मौलाना शाह मुहम्मद हामिद रज़ा खां साहब ख़ल्फ़े अकबर इमाम अहले सुन्नत आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैअत व ख़िलाफ़त सिलसिला आलिया क़ादिरियह रिज़वियह और जुमला तावीज़ात व अमलियात की इजाज़त अता फ़रमाते वक़्त फ़रमायी थी कि ख़िलाफ़े शरअ के लिए न खुद इस्तेमाल करें न किसी और को दें न बताएं

जैसे नम्बर 1- जिस तरह औरतें अक्सर तसख़ीर शोहर चाहती हैं कि हमारे कहने में हो जाए जो हम कहें वही करे, हराम है। हदीस में इसे शिर्क फ़रमाया। अल्लाह अज़्ज़ो जल्ल ने शोहर को हाकिम बनाया न कि महकूम।

नम्बर 2- या यह चाहती हैं कि शोहर अपनी मां बहन से जुदा हो जाए।

नम्बर 3- या उनको कुछ न दे हमको दे। ये मुर्दा ख़्वाहिशात हैं।

नम्बर 4- मुक़दमे फ़ौजदारी में मुसलमानों को नक़्श हिफ़ाज़त दिए जाएं।

नम्बर 5- दीवानी व माल के मुक़दमों में जब तक मालूम न हो कि

فلانہ را لعشق ودوستی فلانہ ابن فلاں بنام خدائے تعالیٰ وبنام سیدنا محمد رسول اللہ صلوٰۃ اللہ
تعالیٰ وسلامہ علیہ وعلیہم وعلیٰ آلہ بحرمۃ البیت الحرام والرکن والمقام وبحرمۃ حظیرۃ القدس
وکالبدر رسول اللہ صلاۃ اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہ وعلیہم وعلیٰ آلہ گرفتم از فرق تا ناخن پائے فلاں
ابن فلانہ را بمہر ودوستی فلاں ابن فلانہ بمحبت وشفقت وعشق ونوازش بحق
قَالَ عِفْرِيتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَن تَقُومَ مِن مَّقَامِكَ ۝ وَإِنِّي
عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ۝ قَالَ الَّذِي عِندَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ
أَن يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَىٰ كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ
أَنَابَ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَن تَنفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ فَانفُذُوا ۚ لَا تَنفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۝ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ نَصِيرًا
یارب بحق وحرمت آں نام کہ بر ساق عرش نوشتہ یارب چنانکہ عرش را بزرگ آفریدی مرا
درچشم ودل فلاں بن فلاں بزرگ گردان وبحق درجہ وسیلت ودوستی کہ با سیدنا محمدن
المصطفیٰ صلوٰۃ اللہ تعالیٰ علیہ داری بحرمۃ آں نام بزرگ کہ بر چشمۂ آفتاب وماہتاب نوشتہ
یارب بحق آں نام بزرگ کہ در زبور حضرت داؤد علیہ السلام نوشتہ یا حی یا قیوم چنانکہ آہن را در
دست داؤد علیہ السلام نرم کردی یارب دل وجان فلاں بن فلاں را برائے من نرم کن ورحیم
گردان یا رحیم یا کریم بحق یا اللہ بحرمۃ آں نام کہ بر خاتم سلیمان علیہ السلام نوشتہ بودی تا بر عالمیان بادشاہ
شد یارب مرا بر سر فلاں بن فلانہ بادشاہ گردان یا اللہ یا رحمٰن یا رحیم یارب بحرمۃ نام مہدی کہ در
قرآن مجید نوشتہ یا شافی چناں کہ سیدنا محمد مصطفیٰ صلوٰۃ اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہ را بر
امت شفیق ومہربان گردانیدی یا مقلب القلوب والابصار دل وجان فلاں بن فلانہ
را مشفق ومہربان من گردان وبر سریر فلک دل فلاں ابن فلاں مرا بادشاہ گردان وہمہ حاجتہائے
مرا رواں گردان یا ذوالجلال والاکرام یا قاضی الحاجات یا کافی المہمات یارب بحرمۃ آں نام
کہ در انجیل نوشتہ یارب بحرمۃ الامام حسن المجتبیٰ وبحرمۃ الامام حسین شہید کربلا وبحرمۃ
الغوث الاعظم قطب الاقطاب يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ وَالْأَبْصَارِ لَيِّنْ عَلَىٰ قُلُوبِ جَمِيعِ الْخَلَائِقِ
بِالرَّحْمَةِ وَالرَّأْفَةِ اللَّهُمَّ سَخِّرْ لِي جَمِيعَ أَوْلَادِ آدَمَ وَبَنَاتِ حَوَّا يَا رَؤُوفُ ۝

तीन बार--- بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

अमल उक़्दतुल मुहब्बत जो कलाम पाक की 114 सूरतों से इन्तख़ाब किए गए हैं। इसके फ़वाइद लिखने के लिए एक दफ़्तर नाकाफ़ी है मगर अक़्लमन्द के लिए यह मुख़्तसर ही काफ़ी है।

1- अगर कोई अपनी उम्र में एक बार पढ़ ले उसमें यह सिफ़त पैदा हो जाए कि जिस किसी के दिल को मुसख़्ख़र करना चाहे तो उसका दिल मोम की तरह हो जाए और मुतीअ हो जाए।

2- अगर एक बार पढ़कर किसी मीठी चीज़ पर दम करके मतलूब को खिला दे तो ऐसा बे क़रार होकर बिना तालिब के मतलूब को क़रार न आए।

3- और अगर रोजाना एक बार पढ़कर अपने ऊपर दम करता रहे तो जो आदमी पढ़ने वाले को देखे तो दोस्ती करने पर मजबूर हो जाए।

4- और अगर गुलाब पर दम करके चेहरे पर मल ले तो अहले दुनिया में से जो भी देखे वह दोस्ती का दम भरे।

5- और अगर गुलाब या किसी और ख़ुश्बू पर दम करके महबूब को सुघा दे तो बिना तालिब के उसे क़रार न आए। अगर चे इसके दरमियान पहले से दुश्मनी ही क्यों न हो फिर भी दोस्त हो जाए।

6- लकड़ी के सौ दाने तसबीह के लेकर हर दाने पर एक बार यह उक़्दुल मुहब्बत पूरी पढ़कर दम करता जाए यह ज़रूरी नहीं कि यह अमल एक ही दिन में करे बल्कि जितने दिनों में कर सकता हो कर ले। जब सौ दानों पर सौ बार खत्म कर चुके तो अकेला मकान में जाकर उन्हें जलाए तो माशूक़ का दिल इस तरह तड़पे कि बिना आशिक़ के एक पल क़रार न आए। (तसव्वुर शर्त है)

7- और अगर मतलूब कहीं दूर चला गया है तो लोबान पर सात बार दम करके उसे जलाए और जिस सिम्त महबूब का जाना मालूम हो उस तरफ़ धुएं को हरक्त दें तो वह बे क़रार होकर फ़ौरन वापस

حرضا او تکون من الھٰلکین ۰ اھدنا الصراط المستقیم ۰ یارب ہردو
دست وسینہ فلاں ابن فلانہ گرفتار من کن بمہر ودوستی بحق فبما رحمۃ من اللہ لنت لھم
ولو کنت فظا غلیظ القلب لانفضوا من حولک فاعف عنھم واستغفر لھم
وشاورھم فی الامر فاذا عزمت فتوکل علی اللہ ان اللہ یحب المتوکلین ۰
بحق کھیعص وبحق طٰہٰ طسم. یٰس ص حم حم عسق ق والقرآن المجید ن والقلم
وما یسطرون گرفتم دل وجان وہفت اندام فلاں ابن فلانہ را بمہر ودوستی والقیت
علیک محبۃ منی ولتصنع علی عینی اذ تمشی اختک فتقول ھل ادلکم علی
من یکفلہ فرجعناک الی امک کی تقر عینھا ولا تحزن ۰ اللھم یا رب
بحق جبرئیل ومیکائیل واسرافیل وعزرائیل وحملۃ العرش والکرسی والروحانیین
اللھم بحق توراۃ موسیٰ وانجیل عیسیٰ وزبور داؤد وصحف ابراھیم وفرقان
سیدنا محمد المصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم وعلیھم اجمعین صراط الذین انعمت
علیھم گرفتم دل وجان وہفت اندام فلاں ابن فلانہ را خواہاں وطالب من گردان و
بمہر ودوستی خود بحق آدم صفی اللہ وحوا وہابیل وشیث وادریس ونوح وابراہیم واسمٰعیل واسحاق

ویعقوب ویونس وہود ولوط وصالح وشعیب وموسیٰ وہارون ویوشع وایوب ویونس وداؤد
وسلیمان وذوالکفل والیسع وشعیا والخضر والیاس ودانیال وجرجیس وارمیا
وحزقیل وشمعون وذی القرنین وعیسیٰ مریم وسیدنا محمد المصطفیٰ صلی
اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وعلیھم اجمعین ۔ یارب مہربان من کن دل وجان فلاں ابن
فلانہ را بحق این آیات مکنون از اول تا آخر یا معشر الجن والانس ان استطعتم ان
تنفذوا من اقطار السموٰت والارض فانفذوا لا تنفذون الا بسلطٰن فبای الاء
ربکما تکذبٰن ۰ اے موکلان واے پریاں بشنوید گفتار من باشید وبفرمان من باشید
ودوستی مرا در دل فلاں بن فلانہ زیادہ گردانید بحق وحرمت ایں آیت ہائے مکنون از
اول تا آخر گرفتم دل وجان وہفت اندام فلاں ابن فلانہ را بمہر ودوستی فلاں ابن فلانہ بحق
واصلحنا لہ زوجہ انھم کانوا یسارعون فی الخیرات ویدعوننا رغبا ورھبا

وکانوا لنا خاشعین ۰ والف بین قلوبھم لو انفقت ما فی الارض جمیعا ما
الفت بین قلوبھم ولٰکن اللہ الف بینھم انہ عزیز حکیم ۰ گرفتم دل و
جان وہفت اندام فلاں ابن فلانہ را بمہر ودوستی فلاں ابن فلاں. بحق ہمہ پیغمبران کہ اول ایشاں آدم
صفی اللہ وآخر ایشاں سیدنا محمد ن المصطفیٰ صلے اللہ علیہ وسلم و بحق ومن الناس من
یتخذ من دون اللہ اندادا یحبونھم کحب اللہ ۰ والذین اٰمنوا اشد حبا
للہ ۰ ھو الذی ایدک بنصرہ وبالمؤمنین والف بین قلوبھم ۰ قل ان کنتم
تحبون اللہ فاتبعونی یحببکم اللہ ویغفر لکم ذنوبکم واللہ غفور رحیم ۰
فلا تحسبنھم بمفازۃ من العذاب ولھم عذاب الیم قد شغفھا حبا ۰ انا لنرٰھا
فی ضلٰل مبین ۰ گرفتم دل وجان فلاں بن فلاں را بمہر ودوستی فلاں ابن فلانہ بحق ہمہ پیغمبران کہ اول ایشاں
آدم صفی اللہ وآخر ایشاں سیدنا محمد ن المصطفیٰ صلے اللہ علیہ وسلم وآلہ غیر
المغضوب علیھم یارب ہردو پائے فلاں ابن فلانہ را بجانب من رواں کن بمہر ودوستی
بحق فاذا برق البصر وخسف القمر وجمع الشمس والقمر وان تعفوا وتصفحوا و
تغفروا فان اللہ غفور رحیم ۰ زین للناس حب الشھوٰت من النساء والبنین
والقناطیر المقنطرۃ من الذھب والفضۃ والخیل المسومۃ والانعام والحرث ۰
ذٰلک متاع الحیٰوۃ الدنیا واللہ عندہ حسن المآب ۰ فلا جناح علیھما ان یصلحا
بینھما صلحا والصلح خیر واحضرت الانفس الشح وان تحسنوا وتتقوا فان
اللہ کان بما تعملون خبیرا ۰ انہ علی ذٰلک لشھید ۰ وانہ لحب الخیر لشدید و
لا الضالین آمین گرفتم دل وجان وہفت اندام فلاں ابن فلانہ را بمہر ودوستی خود بنام خداوند
العالمین الی یوم القیٰمۃ والی یوم الدین ۰ لقد جاءکم رسول من انفسکم
عزیز علیہ ما عنتم حریص علیکم بالمؤمنین رءوف رحیم ۰ فان تولوا
فقل حسبی اللہ لا الٰہ الا ھو علیہ توکلت وھو رب العرش العظیم
فقال انی احببت حب الخیر عن ذکر ربی حتی توارت بالحجاب ۰ واللہ
المستعان علی ما تصفون ۰ گرفتم سی صد رگ وچہل وچہار پارہ استخوان فلاں ابن

इसी ख्याल से पहले हिस्से की इब्तिदा ऐसे ही अमल से की थी यानि दुआ जामिउल मतलूब व दाफ़िउल कुरूब जो कि एक अज़ीम हिसार भी है गोया इस दुआ को हर दिन बाद नमाज़ फ़ज्र पढ़ने वाला दुश्मन का प्रुफ हो जाता है जिस पर किसी की दुश्मनी असर नहीं होता और हर करब व बेचैनी का दफ़िआ भी है।

अब दूसरे हिस्से में अमल उक़दतुल मुहब्बत के तोहफ़े से इब्तिदा की जा रही है जो ग़रीब व दीनदारों के लिए बेश कीमत ख़ज़ाना है। इसे इशा की नमाज़ के बाद सिर्फ़ एक बार पढ़ने वाला अल्लाह का महबूब बन जाता है। जबकि इस अमल को ख़िलाफ़े शरअ मक़्सद के लिए न पढ़ा जाए।

अमल तसख़ीर व उक़दतुल मुहब्बत :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ
وَالْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ
وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ وَمَنْ يَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ
مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ يَا اللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا
رَحِيْمُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ اَللّٰهُمَّ سَخِّرْ لِيْ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ سَخِّرْ لِيْ قَلْبَ فلاں بن
فلاں بِهِمْ وَدُوْسِقِ اللّٰهُمَّ سَخِّرْهُ لِيْ دَوَاذِلِ اللّٰهِ وَجَعَلَهُ عَلَيَّ مَوَدَّةً وَّرَحْمَةً بِحَقِّ يَا
اللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ
اَللّٰهُمَّ سَهِّلْ بِفَضْلِكَ يَا وَهَّابُ يَا تَوَّابُ يَا رَبِّ اَسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا غَايَةَ
رَغْبَتَاهُ اَسْئَلُكَ اَنْ تَقْضِيَ حَاجَتِيْ وَتُنَوِّرَ قَلْبِيْ بِنُوْرِ مَعْرِفَتِكَ وَاَنْ تُعْطِيَنِيْ
خَيْرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَتُعِزَّنِيْ فِيْ قُلُوْبِ الْعٰلَمِيْنَ وَالْاَكَابِرِ يَا عَزِيْزُ
تَعَزَّزْتَ بِالْعِزَّةِ وَالْعِزَّةُ فِيْ عِزَّةِ عِزَّتِكَ يَا عَزِيْزُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا ذَا الْجَلَالِ
وَالْاِكْرَامِ وَيَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ اقْضِ حَاجَتِيْ يَا مُجِيْبَ الدَّعَوَاتِ اسْتَجِبْ

دُعَائِيْ بِحَقِّ عِزَّتِكَ يَا عَزِيْزُ تَعَزَّزْتَ بِالْعِزَّةِ وَالْعِزَّةُ فِيْ عِزَّةِ عِزَّتِكَ يَا عَزِيْزُ
يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ۔ گرفتم سر فلاں بن فلاں را یا رب بہ
سوئے من بمہر و دوستی بحق بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي
الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ
تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ
وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ
وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ
يُحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى
فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ یارب بزبر دو چشم فلاں
ابن فلانہ را نگرانی من کن بمہر و دوستی بحق ہذہ الآیات اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ
يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ
وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ
اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ
لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ الرحمٰن الرحیم یارب
ہر دو گوش فلاں ابن فلانہ را شنوا گردان بسخن من بمہر و دوستی بحق وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا
وَاَطَعْنَا وَانْظُرْنَا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ
وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ
مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ یارب لب و دنداں فلاں بن فلانہ را گویا کن بہ سخن من بمہر و
دوستی بحق وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ
لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْٓ اَحْسَنَ مَثْوَايَ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ قَدْ شَغَفَهَا
حُبًّا اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ

यह हक़ पर है न दें कि ज़ालिम की मदद करना हराम है।

नम्बर 6- हुब्ब व तसख़ीर औरत के लिए नक़्श व अमल किसी को न दिया जाए इसमें मुआवज़ा अक्सर वजह से फ़ासिद होता है अगर हक़ीक़त में निकाह करना चाहता हो जब भी खुला ख़तरा गुनाह का है कि अजनबी औरत की मुहब्बत दिल में पैदा होना सिमें क़ातिल है मुमकिन है कि निकाह में ताअवीक हो या औरत के वली न मानें और दोनों तरफ़ की मुहब्बत पैदा हो चुकी तो इसका नतीजा बुरा होगा।

नम्बर 7- यों ही तसख़ीर ज़न न चाहे बल्कि औलियाए ज़न की तसख़ीर कि वह इससे निकाह कर दें और यह उनका कफ़ू नहीं यानि ऐसा कम हो कि इससे उसका निकाह औलियाए ज़न के लिए मत ऊनी या माअसियत शरअी हो जब भी कभी न दे कि यह मुसलमान को तकलीफ़ देना है।

नम्बर 8- बल्कि बेहतर यह है कि इस मक़सद के लिए बिल्कुल दिया ही न जाए। निकाह ख़ास कर हिन्दुस्तान में उम्र का साथ होता है और अंजाम का इल्म अल्लाह अज़्ज़ो जल्ल को है मुमकिन है कि यह रिश्ता उसके लिए शर हो तो शर का सबब बनना न चाहिए। ऐसों को हमेशा यही हिदायत करना चाहिए कि इस्तिख़ारा शरअी और दुआ करें कि अल्लाह वही करे जो बेहतर हो।

नम्बर 9- न खुद किसी मुसलमान को तकलीफ़ पहुंचाने का कोई अमल करें न किसी को बताया जाए अगर चे वह अपनी मज़लूमी और उसका ज़ालिम व मूज़ी होना ज़ाहिर करें हां अगर चे सबूत शरअी से साबित हो जाए कि वह आम तौर पर मुज़ी व ज़ालिम है तो उसके लिए इतने नुक़्सान की ख्वाहिश जायज़ है जितने का वह हक़दार है इससे ज्यादा हराम है और इनका सही मेयार पर अन्दाज़ा ख़ास कर अपने मामले में बड़ा मुश्किल होता है। लिहाज़ा ऐसे मौक़े पर हमेशा सिपर ही हाथ में चाहिए और तलवार से काम नहीं लेना चाहिए। फ़क़ीर इस पर सख़्ती से पाबन्द है।

नम्बर 10- मुसलमानों को अल्लाह की वजह से तावीज़ व आमाल

दिए जाएं। दुनियावी नफ़े की चाहत न हो जैसा कि आजकल बहम्दुलिल्लाह यहां का दस्तूर है।

नम्बर 11- काफ़िरों को अगर नक़्श दिए जाएं तो पोशीदा तौर पर, ऐलानिया देने की इजाज़त नहीं।

नम्बर 12 - जो लोग इस्लाम के खुले दुश्मन हों उन्हें तावीज़ न दिए जाएं क्योंकि उनका अज़ाब में होना अल्लाह की जानिब से है और अवाम में से जो लोग अपनी कम इल्मी की वजह से उनके पैरोकार हों उनको अगर तावीज़ात दिए जाएं तो उनसे मुआवज़ा ले लेना चाहिए। ये 12 बातें हस्बे हिदायत शहजादा आला हजरत रहमतुल्लाह अलैहु बग़रजे हिदायत तहरीर हैं अल्लाह अज्जो जल्ल अमल की तौफ़ीक़ दे अमीन।

तसख़ीर व मुहब्बत का बेमिस्ल तोहफ़ा:

आमिलीन, उलेमा व मुक़र्रिरीन, हक़ परस्त, हक़ पसन्द, हक़ गो हज़रात के अक्सर नफ़्स परस्त शर पसन्द लोग दुश्मन बन जाते हैं और दौरे हाज़िर में इस्लाम दुश्मन अनासिर कलिमा और नमाज़ की आड़ में इस्लाम की जड़ों को खोखला करने वाले सुलह कुल्ली क़िस्म के सुन्नी अवाम की हमदर्दियां हासिल करके उन्हीं के ज़रिए दीन को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करने लगे हैं। खुद अलग रहकर दीन दारों ही के ज़रिए दीन को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं और ये दीनदार नफ़्स परस्ती की खातिर दीन के मुबल्लिग़ीन को ज़लील व ख़्वार करने से नहीं चूकते।

ऐसे पुर आशोब दौर में जबकी इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त अहम मसला बन चुकी है ज़रूरत थी कि कोई ऐसा तोहफ़ा पेश किया जाए जो उनकी इज़्ज़त व असमत औलाद और दौलत के गिर्द हिसार अज़ीम का काम दे और दुश्मन किसी मुफ़सिद स्कीम में कामयाब न हो सके उसका हर वार ख़ाली जाए बल्कि उसका वार भी उसी पर पलट जाए।

आ जाए और अगर अपने ऊपर दम करके किसी के सामने जाए तो वह आदमी मुतीअ हो जाए।

8- मतलूब को हाज़िर करने के लिए सात दिन रोज़ाना 21 बार पढ़े और ऊद यानि लोबान या काली मिर्च पर दम करके आग में जलाए। मतलूब बे क़रार होकर हाज़िर हो अगर चे कितना ही दूर हो।

बाबे अव्वल

शमा शबिस्ताने रज़ा हिस्सा अव्वल में सर से पांव तक तक़रीबन हर मर्ज़ का इलाज व हर तक्लीफ़ व मुसीबत मुहब्बत व दुश्मनी तमाम दीनी व दुनियावी ज़रूरतों का हल तावीज़ व अमलियात से दर्ज किया गया है और अमल कामयाब भी साबित हुआ मगर फिर भी हर एक उनसे कमा हुक्क़ा फ़ायदा हासिल न कर सका उसकी वजह यह है कि किसी बीमारी का इलाज और किसी तक्लीफ़ का मदावा उस वक़्त आसान होता है कि जब उसका सबब मालूम कर लिया जाए।

किताबुल अमराज़

1- सर का दर्द- शमा शबिस्ताने रज़ा हिस्सा अव्वल (2) से (10) तक के अमलियात दर्द के लिए बड़े असरदार होते हैं।

(2) अगर सर का दर्द वक़्ती हो यानि अचानक पैदा होने वाला तो उसके लिए हिस्सा अव्वल के (5) से (7) तक किसी भी अमल से काम लें।

(3) अगर गर्मी या कमज़ोरी या किसी चोट के असर से हो तो यह दुआ लिखकर दर्द की जगह बांधे और पानी पर दम करके पिलाएं-

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ بِاَسْمَآئِکَ الْحُسْنٰی یَا نُوْرَ النُّوْرِ یَا خَالِقَ النُّوْرِ یَا مُنَوِّرَ

النُّوْرِ یَا نُوْرَ کُلِّ نُوْرٍ یَا نُوْرُ لَیْسَ مِثْلَہٗ نُوْرٌ یَا نُوْرًا قَبْلَ کُلِّ نُوْرٍ یَا نُوْرًا بَعْدَ کُلِّ نُوْرٍ یَا نُوْرًا فِی النُّوْرِ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَکَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَ الْاِکْرَامِ خَالِصًا مِّنَ النَّارِ یَا مُجِیْرُ یَا مُجِیْرُ یَا مُجِیْرُ ۔

(4) अगर नज़ले के सबब से हो तो हिस्सा अव्वल (8) का नक़्श बांधने को दें और (20) की दुआ एक सांस में पढ़कर पानी पर दम करके पिलाएं साथ ही (10) या (8) की दवाएं खिलाएं।

(5) अगर जादू हो या जादू का शक हो तो (3) के अमल के साथ (9) के नक़्श भी लिख कर दें या इसी किताब से जिन्न आसेब जादू के बाब से किसी नक़्श को नक़ल करके दें। अगर जिगर मेदा की ख़राबी से सर दर्द हो तो यह नक़्श व अमलियात के साथ नक़्श दरूदे शिफ़ा लिख कर दें।

नक़्श दुरूदे शिफ़ा यह है :

۷۸۶

۶۶۱	۶۶۴	۶۶۷	۶۵۴
۶۶۶	۶۵۵	۶۶۰	۶۶۵
۶۵۶	۶۶۹	۶۶۲	۶۵۹
۶۶۳	۶۵۸	۶۵۷	۶۶۸

कान का दर्द- कान में दर्द नज़ला या कान के ज़ख़्म फोड़ा फुन्सी की वजह से होता है इसीलिए आयाते शिफ़ा या दरूदे शिफ़ा पढ़कर दम करें या नक़्श शिफ़ा लिख कर दें और नीम के ताज़ा पत्तों का अर्क़ निकाल कर फाड़ कर नीम गर्म कान में डालें।

۷۸۶

ی	ف	ا	ش
شفا	۳۰۱	۹	۸۱
۳۰۲	۳	۷۸	۸
۷۹	۷	۳۰۳	۲

नक़्श आयाते शिफ़ा- आयाते शिफ़ा हर मर्ज़ के लिए निहायत मुजर्रब है इनको पढ़कर दम करें। हकीम डाक्टरों के लिए 11 बार इसका विर्द बड़ा ज़रूरी है अगर लिखकर देना हो तो नक़्श शिफ़ा और उसके नीचे आयाते शिफ़ा लिख दें-

يا شافي يا كافي يا سلام بحق ويشف صدور قوم مؤمنين ○ وشفاء لما في الصدور
يخرج من بطونها شراب مختلف الوانه فيه شفاء للناس ○ وننزل من القرآن
ما هو شفاء ورحمة للمؤمنين ○ واذا مرضت فهو يشفين
○ قل هو للذين امنوا هدى وشفاء ط

अगर नज़ले के सबब से हो तो नक्श के साथ नज़ले की दवाएं भी दें।

सात सलाम- नज़ला और पेट के मर्ज़ों के लिए अकसीर का हुक्म रखते हैं। अगर आयाते शिफ़ा के साथ लिखकर दें तो आंतों की दिक़ और सिल के लिए भी मुजर्रब है। दरूदे शिफ़ा के साथ इस तरह लिखकर दें।

بحق اليس الله بكاف عبده ط وبحق سلام على عباده الذين اصطفى ○ سلام
قولا من رب رحيم سلام على نوح في العالمين ○ سلام على ابراهيم ○ سلام
على موسى وهارون ○ سلام على ال ياسين سلام على المرسلين الله رب
محمد صلى الله عليه وسلم ○

10- आंख की बीमारियां : दफ़तर का काम यानि ज़्यादा पढ़ने लिखने और बुरी नज़र से अगर आंख की रोशनी कमज़ोर हो गयी हो तो हिस्सा अव्वल (13) की आयात सात बार पढ़कर दम करना और फिर पानी पर दम करके पीना मुफ़ीद है।

11- अगर आंख में ज़ख्म या पानी की शिकायत हो तो (14) का नक़्श भी दें।

12- दिमागी कमज़ोरी, नज़ले की वजह से नजर कमजोर हो तो "नूरी सुरमा" बहुत मुफ़ीद है साथ में ताक़त की दवाएं और नज़ले की दवाएं बताएं।

13- जाला फुल्ली वग़ैरह के लिए आयाते शिफ़ा मय सात सलाम एक बार पढ़कर नूरी सुरमे पर दम करके दें।

14- हिस्सा अव्वल (2) के असमाए हुसना और (16) का अमल भी सरीउल असर हैं।

15- **गले का दर्द व जुमला अमराज़े हलक़-** इन मर्ज़ों के लिए असमाए बारी तआला पढ़कर गले पर दम करें और पानी पर दम करके पिलाएं और इसी को लिखकर बांधने को दें मुजर्रब है-

بسم الله الرحمن الرحيم اللهم اني اسئلك باسمائك الحسنى يا من خلقني و
سواني يا من رزقني وربّاني يا من اطعمني وسقاني يا من قرّبني و ادناني يا من
عصمني وكفاني يا من حفظني وكلاني يا من وقفني وهداني يا من اعزني واغناني
يا من اماتني واحياني يا من اليسني وولاني سبحنك لا اله الا انت سبحنك
اني كنت من الظلمين.

16- **अमराज़े दन्दान व क़ल्ब-** अमराज़े दन्दान व क़ल्ब के तक़रीबन तमाम अमलियात व नक़ूश हिस्सा अव्वल में दर्ज हैं। मज़कूरा वुजूहात को पेशे नज़र रखकर मुख़तलिफ़ नक़्श से फ़ायदा उठाएं। मगर अमराज़ क़ल्ब में इस्लाह जिगर व मेदा का लिहाज़ रखते हुए नक़्श दें। अक्सर मेदे की तबख़ीर के सबब दिल धड़कने लगता है अगर ऐसा हो तो जवारिश कमूनी 5 माशा जवारिश मसतगी 5 माशा मिला कर सुबह व शाम 4 बजे खिलाने से एक हफ़ते में मेदे की इस्लाह होकर दिल का धड़कना मौक़ूफ़ होगा और मरीज़ शिफ़ायाब होगा।

17- **इख़्तिलाजे क़ल्ब-** इख़्तिलाज क़ल्ब बहुत से अमराज पैदा कर देता है घबराहट, परेशानी, नागहानी ख़ौफ़ व हरास, बद गुमानी, मौत का डर, वसवसा, बे ख़्वाबी, डरावने ख़्वाब, एहतलाम वग़ैरह मूज़ी अमराज़ ज़हूर में आतें हैं इसके लिए मज़कूरा नक़्श के साथ इस्लाह शिकम के नुक़ूश आयाते शिफ़ा वग़ैरह भी दें। अगर सेहर जादू का

शुबह हो तो नक़्श चहार कुल वग़ैरह नक़्श से इन्तख़ाब करके दें।

یارحمن یارحیم	یا الله	العلی العظیم	الا بالله	ولا قوة	لاحول	[illegible]	[illegible]
دل مارا کن	یارحمن یارحیم	یا الله	العلی العظیم	الا بالله	ولا قوة	لاحول	[illegible]
مستقیم	دل مارا کن	یارحمن یارحیم	یا الله	العلی العظیم	الا بالله	ولا قوة	لاحول
بحق ایاک نعبد	مستقیم	دل مارا کن	یارحمن یارحیم	یا الله	العلی العظیم	الا بالله	ولا قوة
وایاک	بحق ایاک نعبد	مستقیم	دل مارا کن	یارحمن یارحیم	یا الله	العلی العظیم	الا بالله
نستعین	وایاک	بحق ایاک نعبد	مستقیم	دل مارا کن	یارحمن یارحیم	یا الله	العلی العظیم
یاهادی	نستعین	وایاک	بحق ایاک نعبد	مستقیم	دل مارا کن	یارحمن یارحیم	یا الله
یاولی الایادی	یاهادی	نستعین	وایاک	بحق ایاک نعبد	مستقیم	دل مارا کن	یارحمن یارحیم

18- इख़्तिलाज क़ल्ब ज़नाना : औरतों को मज़कूरा वुजूहात के अलावा अकसर हैज़ व निफ़ास की ख़राबी की वजह से ही यह मर्ज़ लाहक़ होता है। औरतों के अमराज़े क़ल्ब में इन वुजूहात को भी सामने रखना बड़ा ज़रूरी है। जिसके लिए मजकूरा नक़्श के साथ नक़्श बिस्मिल्लाह शरीफ़ आयाते शिफ़ा और सात सलाम को न भूलना चाहिए।

19- जाड़ा बुख़ार : इस बीमारी के मरीज़ों के लिए भी कुछ बातों पर ग़ौर करना ज़रूरी है- बुख़ार मीआदी भी होता है। मीआदी बुख़ार को उतार देना मरीज़ को ख़तरे में डाल देना है। मीआदी बुख़ार, चेचक या मोतीझारा या ख़सरा का पेश ख़ीमा है इसीलिए बुख़ार का इलाज दवा के साथ तावीज़ व अमल से भी करें कि यह कुदरती तौर पर असर करते हैं।

जाड़े के बुख़ार में पेट की इस्लाह के लिए भी तवज्जोह दें यानि बुख़ार के लिए दुआ तावीज़ हिस्सा अव्वल से मुन्तख़ब करने के साथ (36)

अक्सीरे शिकम के नक़्श व दुरूद शिफ़ा वग़ैरह भी दें।

20- मीआदी बुख़ार : चेचक मोती झारा, ख़सरा वग़ैरह मूज़ी अमराज़ जिसमें एक तो बचना मुश्किल होता है और अगर मरीज़ बच जाए तो हाथ पावं या सूरत बिगड़ जाने का ख़तरा होता है इसके लिए बुख़ार से मुताल्लिक़ दूसरे नक़्श के साथ साथ नक़्श उम्मुल क़ुरआन बग़ैर नुक़्ते के लिख देना बड़ा ज़रूरी है। अगर दाने निकलने से पहले यह नक़्श डाल दिया जाए तो दाने न निकलेंगे और निकल आए हों तो आसानी से ढल जाऐंगे।

وایاک نستعین	ایاک نعبد	ملک یوم الدین	الرحمن الرحیم	رب العلمین	لله الحمد	الرحمن الرحیم	بسم الله
اهدنا الصراط	وایاک نستعین	ایاک نعبد	ملک یوم الدین	الرحمن الرحیم	رب العلمین	الله الحمد	الرحمن الرحیم
المستقیم	اهدنا الصراط	وایاک نستعین	ایاک نعبد	ملک یوم الدین	الرحمن الرحیم	رب العلمین	لله الحمد
صراط الذین	المستقیم	اهدنا الصراط	وایاک نستعین	ایاک نعبد	ملک یوم الدین	الرحمن الرحیم	رب العلمین
انعمت علیهم	صراط الذین	المستقیم	اهدنا الصراط	وایاک نستعین	ایاک نعبد	ملک یوم الدین	الرحمن الرحیم
غیر المغضوب	علیهم انعمت	صراط الذین	المستقیم	اهدنا الصراط	وایاک نستعین	ایاک نعبد	ملک یوم الدین
علیهم	غیر المغضوب	علیهم انعمت	صراط الذین	المستقیم	اهدنا الصراط	وایاک نستعین	ایاک نعبد
والاضا لین	غلیهم	غیر المغضوب	انعمت علیهم	صراط الذین	المستقم	اهدنا الصراط	وایاک نستعین

21- नक़्श बिस्मिल्लाह शरीफ़ बराए पुराने बुख़ार:

ये नाम लिखकर तीन दिन पानी से धोकर पिलाएं----

पहले दिन ارحوما بسم الله

दूसरे दिन طبسوما الرحمن

तीसरे दिन لیرسوما الرحیم

22- मर्ज़ लक़वा : यह एक मूज़ी मर्ज़ है। रगों में ख़ू[illegible] को [illegible]

वजह से खून का दौरान कम हो जाता है जिससे एक जबड़ा खिंच जाता है और मुहं टेढ़ा हो जाता है। इसके लिए लोहे की प्लेट पर सूरः

ज़िलज़ाल शरीफ़ कुन्दा करा के देखते रहने से यह मर्ज़ जल्द दूर हो जाता है। यह अमल बड़ा मशहूर व मुजर्रब है। अल मफ़लूज हिस्सा चहारुम में मरकूम है।

23- फ़ालिज : यह अक्सर आधे जिस्म पर ज़ाहिर होता है और इससे एक तरफ़ का जिस्म बेकार हो जाता है। बायीं जानिब का बड़ा खतरनाक हो जाता है। इसके लिए असली शहद बड़ा मुफीद है गिज़ा और पानी की जगह अलसी को खिलाया व पिलाया जाए। शर्बत बनाकर पिलाना और अलसी को चटाना बड़ा मुजर्रब है। इलाज डाक्टरी हो या यूनानी मगर शहद देना न भूलें। अगर कोई अहमक डाक्टर मना करे तो उसका इलाज छोड़ दें शहद न छोड़ें।

दीगर नक्श दुरूद शिफ़ा व आयाते शिफ़ा के साथ बिस्मिल्लाह शरीफ़ का नक्श भी मरीज़ को चीनी की प्लेट पर ज़ाफ़रान से लिख कर पिलाएं।

24- मर्ज़ जुनून, मिर्गी व दफ़अ रजअत : जुनून, मिर्गी व पागल के लिए यह नक्श बे नज़ीर है। कुछ लोग आमिल की मदद या बिना इजाज़त बाज़ारी किताबों के अमल कर बैठते हैं जिसमें रजअत हो जाती है इसके लिए भी मुफ़ीद है।

۳۵۰۱	۳۵۰۴	۳۵۰۷	۳۴۹۲
۳۵۰۶	۳۴۹۳	۳۵۰۰	۳۵۰۵
۳۴۹۵	۳۵۰۹	۳۵۰۲	۳۴۹۹
۳۵۰۳	۳۴۹۸	۳۴۹۶	۳۵۰۸

25- बराए खांसी : बरोज़ बुद्ध सात जगह या सिबतैन लिखकर हरेक की अलग अलग गोलियां बना लें और एक गोली रोज़ाना पानी से खिलाएं। कितनी ही पुरानी खांसी हो ख़त्म हो जाएगी।

26- नक़्श दीगर जुनून, मिर्गी शक़ीक़ा (आधा सीसी का दर्द) कठं माला : यह नक़्श फ़क़ीर (इक़बाल अहमद का) का बारहा का आज़माया हुआ है चाहिए कि नक्श अव्वल बे नज़ीर के साथ इस नक्श को भी दें। एक को दाहिने और दूसरे को बाएं बाज़ू पर बांधे और सुबह व शाम इस बाज़ू का दूसरे पर और दूसरे का पहले बाज़ू पर ठीक होने तक बदलते रहें।

27- नक़्श नाफ़ : नाफ़ का हट जाना निज़ामे शिकम को बर्बाद कर देता है। डाक्टर इस तरफ़ तवज्जोह नहीं देते। तिब्ब में इसे काफी अहमियत दी गयी है अक्सर लोग जिनको आंतों की टी बी बतायी जा चुकी थी मगर देखने पर नाफ़ का फ़तूर मालूम हुआ। उसके बाद बिना दवा के ठीक हो गए। नाफ को हटे अगर ज़्यादा वक़्त न हुआ हो तो बिस्मिल्लाह शरीफ़ उगंली से इस तरह नाफ़ पर लिख देने से फ़ौरन आ जाती है। काग़ज़ पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ लिखकर दे और बीच के दाएरे में या क़ाएमो या दाएमो या क़य्यूमो लिखे। इस नक़्श को नाफ़ पर बांधने से नाफ़ क़ायम रहती है और दर्द भी ख़त्म हो जाता है। अगर नाफ़ को हटे हुए ज्यादा दिन गुजर चुके हों तो एक तोला सरसों का तेल दो कतरे रोगन मोम डालकर पीठ पर रोजाना मालिश करें। पेट हरगिज न मलवाएं और लक़्श बिस्मिल्लाह शरीफ बांधने को दें और इसी को प्लेट पर लिखकर पीने को दें।

नक़्श यह है :-

28- नक़्श मर्ज़ एहतलाम : यह नक़्श निहायत मुजर्रब व आजमूदा है। अगर एहतलाम का मर्ज़ ग़लत कामों की वजह से हो तो अमल यासीन शरीफ़ हर फ़ेअल बद को छुड़ाने के लिए अक्सीर

मुतफ़र्रिक़ अमल व नक़ूश व नुस्ख़ा जात बराए शिफ़ाए अमराज़

39- चराग़ खुद रोशन करने की तरकीब बराए शिफ़ाए अमराज़ : जो हिस्सा अव्वल के (242) पर लिखा है। चराग़ का अमल चांद की 4 तारीख़ से शुरु करना बेहतर है और अगर मर्ज़ शदीद खतरनाक हो और चार तारीख़ के इन्तिज़ार में मर्ज़ के बढ़ जाने या मरीज़ की मौत हो जाने का इमकान हो तो फ़ौरन अमल शुरु कर सकते हैं ऐसे मौक़े पर तारीख़ मुकर्ररा पर चराग़ रोशन करना ज़रूरी नहीं।

2- चराग़ को ऐसी जगह रखकर रोशन करें कि उसके सामने बैठने वाला एक मरीज़ या ज़्यादा जितने भी हों सबका मुंह चराग़ और क़िब्ले की तरफ़ हो।

3- चराग़ में चारों सिम्त बत्ती रखकर रोशन की जाएगी।

4- चराग़ की जो बत्ती मश्रिक़ की जानिब रहेगी चराग में उस बत्ती की जगह मश्रिक़ खुदा हुआ हो लिहाज़ा चराग़ को इस तरह रखें कि उस बत्ती का रुख़ पूरब की जानिब रहे कि जिस पर मशिरक़ लिखा हुआ है।

5- मर्ज़ मामूली हो या शदीद चराग़ को 40 दिन ज़रूर जलाएं अगर चे मरीज़ 40 दिन से पहले ही ठीक हो जाएं अगर मजबूरन तर्क करना पड़े तो नम्बर छ के मुताबिक़ फ़ातिहा दिलाकर अमल तमाम करे।

6- जिस दिन अमल शुरु करें उस दिन थोड़ा आटा अपने खर्च के लिए आटे में से निकाल कर एक बर्तन में डाल दें। इसके बाद हर दिन इसी तरह चराग़ रोशन करने से पहले एक चुटकी आटा डालते रहें।

जब अमल तर्क करें उस दिन जमा शुदा आटे की रोग़नी रोटी या पराठे और कुछ हलवा पकाकर सलातीन अरबअ यानि ख़्वाजा अब्दुल रहीम मश्रिक़ी, ख़्वाजा अब्दुल करीम मग़रिबी, ख़्वाजा अब्दुल जलील जुनूबी, ख़्वाजा अब्दुर्रशीद शिमाली रिज़्वानुल्लाहु तआला अलैहिम अजमईन की फ़ातिहा दिलाकर खुद खाए मरीज़ को खिलाएं अपने और पड़ौस के नाबालिग़ बच्चों को खिलाएं।

7- अमल शुरु करने से पहले चराग़ रोशन करने वाला ख़्वाह वह मरीज़ हो या कोई और दूसरा ताज़ा वुज़ू करे और अगर मरीज़ वुज़ु करने के लायक़ न हो या पानी नुक़सान देता हो तो तयम्मुम कराके चराग़ के सामने बिठाए या लटकाए मगर इस तरह कि मरीज़ का मुंह चराग़ की जानिब रहे।

8- अगर ख़लल दिमाग़ का मरीज़ हो तो उसके लिए वुज़ू या तयम्मुम की हाजत नहीं मगर ऐसे मरीज़ उठकर भागने की कोशिश करते हैं ऐसे मरीज़ के लिए दो एक लोग अमल पढ़ने वालों के अलावा हों जो सिर्फ़ मरीज़ की देख भाल रखें ताकि अमल में ख़लल न पड़े।

9- अगर मरीज़ खुद पढ़ सकता हो तो खुद पढ़े या मरीज़ के दोस्त अहबाब या घर वाले इसमें मर्द व औरत की क़ैद नहीं न तादाद का तअय्युन है ख़्वाह एक आदमी पढ़े या कुछ लोग मिलकर अमल करें ख़्वाह किसी मरीज़ की शिफ़ा की नीयत से अमल करें या हर फ़र्द अपने अपने मर्ज़ की शिफ़ा की नीयत से पढ़े फ़ायदा सभी लोगों को पहुंचेगा।

10- चराग़ को रोशन करने की जगह रखकर मरीज़ और दीगर हाज़िरीन पर चराग़ रोशन करने से पहले शाफ़ी शफ़ा शफ़ा शाफ़ी बिना किसी गिनती के कुछ बार पढ़ें इसके बाद (अलिफ़) 11 बार दरूदे ग़ौसियह अल्लाहुम्मा सल्ले वसल्लिम अला सय्यदना व मौलाना मौहम्मदिन मअदनिल जूदे वलकरम वाआलेहि वबारिक वसल्लिम फिर (बि) एक बार या रसूल अल्लाह या नबी अल्लाह अग़िस्नी व उमददनि फ़ीक़ज़ाए हाजति या क़ाज़ी अल हज़ात पढ़कर मरीज़ अपने लिए और

दोनों मियां बीवी खा लें और गुस्ल करके फ़ज्र की नमाज़ अदा करें। फ़ज्र की सुन्नत के बाद 11 बार मर्द व औरत यह दुआ पढ़ें-

بسم الله الرحمٰن الرحيم

بِالْعَرْشِ وَالْمُلْكِ الْعَظِيْمِ يَا رَحْمٰنُ يَا سَتَّارُ يَا اَحَدُ يَا صَمَدُ هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ بِحُرْمَةِ كُنْ فَيَكُوْنُ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ اَجْمَعِيْنَ

अगर दोनों में एक पढ़ा हो तो ज़ोर से पढ़े दूसरा सुनकर दोहराता जाए। फिर फ़ज्र के फ़र्ज़ अदा करे। अगर दोनों अनपढ़ हों तो किसी से पढ़वाकर पानी पर दम कराकर रख लें। जो फ़ज्र की सुन्नत और फ़र्ज़ के बीच पी लें। मौला अपने करम से नवाज़ देगा।

35- इन्शाअल्लाह लड़का ही होगा : बुजुर्गान ख़ानदाने रिज़वियत कालपी शरीफ़ का मशहूर व मुजर्रब अमल जो बतौर तोहफ़ा हज़रत वालिद माजिद सूफी अजीज़ अहमद साहब मददाहुर्रसूल मद्दा ज़िल्लहु को अता फ़रमाया जिसके औलाद न होती हो या लड़कियां ही हों लड़का न हो या हमल साक़ित हो जाते हों या पैदाइश के बाद इन्तक़ाल कर जाते हों तो कच्चे सूत के सात तार औरत की पेशानी के बाल से पांव की उंगली तक नाप लें और सातों तारों को मिलाकर उनपर 11 बार आयतल कुर्सी शरीफ़ इस तरह पढ़ें कि हर बार एक गिरह लगाता जाए और दम करता जाए। इस गडे को औरत की कमर पर बांधे जब तक बच्चा पैदा न हो कभी न खोले यहां तक कि गुस्ल के समय भी जुदा न करे। जब आसार हमल ज़ाहिर हों तो घर की पकायी हुई सफ़ेद मीठी चीज़ पर हुज़ूर सय्यद ना ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु अन्हु व शेख़ मुहम्मद अफ़ज़ाल साहब कानपुरी रहिमतुल्लाहि अलैहि और सय्यदना आला हज़रत क़दस सिर्रहु की फ़ातिहा दिलाएं और दो रकअत नमाज़ नफ़ल अदा करें फिर खड़े होकर बग़दाद शरीफ़ की तरफ़ मुंह करके अर्ज़ करें कि हुज़ूर मेरे लड़का हो तो हुज़ूर की गुलामी में दे दूंगी और उसका नाम गुलाम मुहियुद्दीन रखूंगी। इसके बाद यक़ीन

रखे कि लड़का ही होगा इन्शा अल्लाह तआला। तो जब बच्चा पैदा हो तो गुस्ल देकर कानों में अज़ान कहें और वह गडा मां की कमर से खोल कर बच्चे के गले में डाले। बच्चे की पैदाइश के हर साल पर एक रुपया बतौर नज़्र डालते रहें। जब बच्चा 11 साल का हो तो इन 11 रुपयों की शीरीनी या इसमें जितना चाहे ज़्यादा की नियाज़ दिलाए और इस गड़े को महफ़ूज़ जगह दफ़न कर दें।

36- नक़्श अकसीर इतफ़ाल व बुरी नज़र : बच्चे का रोना ज़िद करना दूध न पीना न सोना बुरी नज़र वग़ैरह बहुत से कामों के लिए मुजर्रब है।

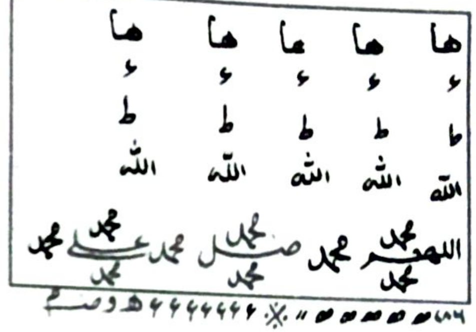

37- दाफ़ेअ देव परी सेहर खुसूसन दूध पीते बच्चों के लिए : यह तावीज़ काग़ज़ पर लिखकर गले में डालें-

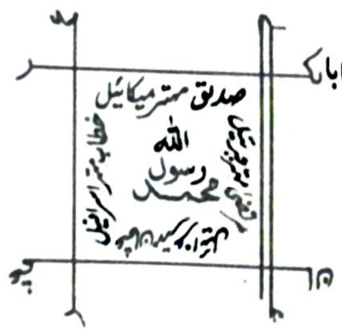

38- अगर कोई बच्चा रात को डरता हो या चौकंता हो : यह सूरह मुबारक लिखकर मोम जामा करके बच्चे के गले में डाले इन्शा अल्लाह बच्चा दिन व रात आराम से रहेगा-

بسم الله الرحمٰن الرحيم۔ وَالْعَصْرِ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

● **इलाज-** हीरा हीगं तिल्ली के तेल में मिलाकर हैज़ के बाद तीन दिन शियाफ़ा करे इसके बाद जिमाअ करे।

● **तीसरी अिल्लत-** यह है कि रहम के मुंह पर वरम या गोश्त आ जाने से हमल करार नहीं पाता।

● **अलामत-** सोहबत के बाद कमर में दर्द होता है।

● **इलाज-** ज़ीरा सफ़ेद और हाथी का नाखुन बारीक पीस कर गाय के घी में मल कर शियाफ़ा ले। तीन दिन बाद जिमाअ करे।

● **चौथी अिल्लत-** यह है कि रहम के सर पर कीड़ा पैदा हो जाता है जो नुत्फ़े को खा जाता है।

● **अलामत-** हडडियों, में दर्द होता है।

● **इलाज-** साबुन सज़ी खार थोड़े पानी में बराबर वज़न हल करके हैज़ के बाद तीन दिन शियाफ़ा ले। इसके बाद जिमाअ करे।

● **पांचवी अिल्लत-** यह है कि एतदाल से ज़्यादा रहम में गर्मी पैदा हो जाना।

● **अलामत-** दिल का धड़कना और दिल के मक़ाम पर दर्द होना।

● **इलाज-** गाय के घी में मग़ज़ नीम, गुल गुलाब पीस कर शियाफ़ा ले। तीन दिन बाद सोहबत करे।

● **छटी अिल्लत-** यह है कि एतदाल से ज़्यादा सर्दी जमा हो जाए।

● **अलामत-** जिमाअ के बाद छाती में दर्द होता है।

● **इलाज-** कलौंजी, काला ज़ीरा बराबर वज़न पाव सेर तिल्ली के तेल में पकाएं। जब आधा रह जाए रूई में तर करके शियाफ़ा लें। इसके बाद जिमाअ करे।

● **सातवीं अिल्लत-** यह है कि देव परी उम्मुस्सुबियान का असर होना।

● **अलामत-** सोहबत के बाद किसी प्रकार का दर्द न होना।

इलाज : بسم الله الرحمٰن الرحيم اللهم نلسون العرش الكريم والملك القديم والعصاء العظيم والصراط المستقيم

नेक साअत में मुश्क व ज़ाफ़रान से लिखकर तहारत के बाद कमर में बांधे और सोहबत करे।

34- इम्तिहान क़िस्मत कि साहिबे औलाद होगी कि नहीं? : अक्सर बे औलाद लोग अपनी ज़िन्दगी का समर देखने की ख़्वाहिश में बड़ी बड़ी रक़में बर्बाद कर देते हैं। अक्सर औरतों की किश्तीए हयात भंवर की भेंट चढ़ जाती है मगर अपनी इस मुराद से महरूम ही रहती हैं। इसलिए सेहत व पैसे को दांव पर लगाने से पहले इम्तिहान किस्मत ज़रूरी है जो कि हिस्सा अव्वल में सफ़ह 31 (78) पर दर्ज है। सूरह मुज़्ज़म्मिल शरीफ़ बेहतर है कि औरत खुद पढ़े अगर सही न पढ़ सके तो किसी हाफ़िज़े कुरआन से पढ़वाकर इतने दूध पर दम करा ले कि पेट भर जाए न बचे और न भूखी रहे। जुमरात को रोज़ा रखे नमाज़ किसी वक़्त की क़ज़ा न हो। बेहूदा बातों से बचे। बेहतर है कि ज़्यादा वक़्त तिलावते कुरआन करीम में गुज़ारे और शाम को इफ़्तार में उसी दूध को पी ले। अगर दूध हज़म न हो तो सब्र करे और अगर दूध हज़्म हो जाए तो मज़कूरा उमूर की तरफ़ तवज्जोह करे या हिस्सा अव्वल से किसी अमल व नक़्श का इन्तख़ाब करे या रिज़वी कुतुबख़ाने से कन्दा शुदा नक़्श मुआविन हमल मंगा ले साथ ही यह अमल भी करे मुजर्रब है।

● अच्छी क़िस्म का अनार लेकर 4 टुकड़े करे और फिर पाव सेर किशमिश पाव भर भुने चने रखे। इसके बाद सूरह यासीन पढ़े। हर मुबीन पर अनार के टुकड़ों पर दम करता जाए। जब यासीन ख़त्म हो तो अनार और किशमिश चनों पर भी दम करे और फ़ातिहा देकर सात सलातीन की रूह पाक को बख़्श कर किशमिश और चने बच्चों को तक़्सीम कर दें और अनार का एक टुकड़ा मर्द खाए और दूसरा औरत को खिलाए। रात को हम बिस्तर हो इसके बाद बाकी टुकड़े

है और पेट की ख़राबी से हो तो नक़्श हाज़ा के साथ यह नक़्श अक्सीर शिकम है।

بحق عمر فاروق اعظم	بحق ابابکر صدیق
ازہیبت عثمان نیابد پیش من ہیبت علی شیر خدا	بگریزد شیطان لعین

नोट- अगर अपने लिए लिखा हो तो पेश मन लिखे और अगर दूसरे को देना हो तो पेश फ़लां बिन फ़लां यानि मरीज़ और उसकी मां का नाम है।

अमराज़े ज़नाना

29- हैज व निफ़ास की कमी या बे क़ायदा होना: इस मर्ज़ की इन्तिहा टी बी पर होती है इसलिए इस पर ज़्यादा मुतवज्जह होना चाहिए।

1- इसके लिए सात सलाम 2- असाहाबे कहफ़ के असमाए गरामी। 3- आयाते शिफ़ा 4- नक़्श बिस्मिल्लाह शरीफ़ 5- दरूदे शिफ़ा वग़ैरह बहुत मुफ़ीद है

30- ख़ून हैज़ व निफ़ास की ज़्यादती : मर्दों को जिर्यान, औरतों को परसूत यानी सीलानु र्रहम हैज़ व निफ़ास की ज़्यादती भी जिस्म को घुला देती है इसके लिए आयाते शिफ़ा, दुरूदे शिफ़ा असमाए बारी तआला व नक़्श दीगर हिस्सा अव्वल से (35) और (89) का लिख कर दें। अगर दर्द को जिर्यान के लिए देना हो तो नक़्श (35) में बसतम जिर्यान मनी फ़लां बिन फ़लां लिखें।

31- हमल गुमशुदा : अक्सर हमल के आसार ज़ाहिर होकर माअदूम हो जाते हैं इसी तरह

بسم اللہ الرحمن الرحیم ... وصلی اللہ علی سیدنا محمد

٨	٣	٦	١
٥	٢	٧	۴
٣	٨	١	٦
٢	٥	۴	٧

یاحق یادافع یاشافی یاکافی یامانع یادافع یاکافی برحمتک یا ارحم الراحمین ... وصلی اللہ علی خیر خلقہ محمد وآلہ واصحابہ اجمعین

एक मुद्दत गुज़र जाती है इसके लिए यह नक़्श मुफ़ीद है यह नक़्श रोटी पर लिखकर औरत को खिलाया जाए।

32- नक़्श बाऊ गोला : यह मर्ज औरतों को अक्सर अय्यामे ख़राबी से होता है और अजीब अजीब किस्म के दौरे पड़ते हैं आमिलीन जिन्न आसेब के फेर में वक़्त बर्बाद करते हैं

٨	١٠٠	لاالاب ٧٤٥ ل دوو ॥
ویادتما	لابت ٥٥	الوع این لا احدع
لا	٥٤لا	ماجد ویزلک ل

यह नक़्श नाफ़ पर बांधें। फ़ौरन शिफ़ा हो। दर्द या दौरा ख़त्म होते ही इस नक़्श को खोल कर रख लें

33- बच्चा न होने के असबाब : यह अमल फ़क़ीर (इक़बाल अहमद) को बुज़ुर्गाने दीन से दस्त बदस्त मिला है। तजुर्बे से सही साबित हुआ। अहले सुन्नत की ज़रूरत के पेशे नज़र तबअ किया जा रहा है। यह अमल हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को परियों ने बताया कि औलाद से महरूम रहने की सात अिल्लते हैं जो मय अलामात व इलाज के दर्ज हैं-

- पहली अिल्लत- यह है कि औरत के रहम यानि बच्चा दानी उलट जाती है।
- **अलामत-** सोहबत के बाद औरत के सर में दर्द होता है।
- **इलाज-** मग़ज़ बिनौला, मुर्ग़ी की बीट आपस में मिलाकर हैज़ से फ़ारिग़ होकर तीन दिन रूई तर करके शियाफ़ा ले ले। तीन दिन बाद जिमाअ करे।
- दूसरी अिल्लत यह है कि औरत के रहम का मुंह बन्द हो जाता है।
- **अलामत-** जिमाअ के बाद अन्दामे निहानी के साथ सारा बदन दर्द करता है चेहरा ज़र्द हो जाता है।

दूसरे लोग जिस मरीज़ की शिफ़ा की नीयत से हाज़िर हों उसका नाम लेकर शिफ़ा कामिला की दुआ करें। इसके बाद एक आदमी चराग़ रोशन करे। चराग़ रोशन करने के बाद दस बार दुरूद शरीफ़...... जो याद हो...... तीन बार..... يَا غَنِيُّ يَا كَرِيْمُ يَا اَحَدُ يَا مُنْعِمُ

दस बार दुरूद शरीफ़ 11 बार ...... يَا شَيْخ عَبْدُ الْقَادِرِ جِيْلَانِى شَيْئًا لِلّٰه

....

يَا سَادَاتَنَا عَبْدُ الْكَرِيْمِ الْمَغْرِبِى وَعَبْدُ الْجَلِيْلِ الْجَنُوْبِى وَعَبْدُ الرَّحِيْمِ ...16 बार

الْمَشْرِقِى وَعَبْدُ الرَّشِيْدِ الشِّمَالِى اَغِيْثُوْنِى بِحَقِّ غَوْثِنَا وَغَوْثِكُمُ الشَّيْخ عَبْدِ الْقَادِرِ

جِيْلَانِى رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ बार 1544 . يَا رَشَافِى شِفَا شِفَا شَافِى.........

11 बार दुरूद ग़ौसियह पढ़कर पानी और मरीज़ पर दम करें। जो मरीज़ अमल खुद पढ़ रहा हो वह अपने पर दम करे। पानी दम किया हुआ मरीज़ और सारे लोग घर वाले और सब बच्चे पिएं। इसके बाद चराग़ को गुल कर दें और इसी तरह हर दिन अमल करें।

1- याद रखिए कि अमल में शिर्कत करने वाले तमाम लोग एक ही मरीज़ की सेहत की नीयत से शरीक हों या हरेक मुख़तलिफ़ मरीज़ों की शिफ़ा के लिए वह शाफ़ी शिफ़ा शाफ़ी 1544 की तादाद सब मिलकर पूरी करें जिस तरह खत्म ख्वाजगान वग़ैरह पढ़ा करते हैं।

2- और अगर तमाम लोग अपने अपने लिए या हरेक अलग अलग मरीज़ की शिफ़ा की नीयत से शरीक हों तो सिवाए शाफ़ी शिफ़ा शाफ़ी के बाक़ी अलिफ़ से ज़े तक हर नम्बर के अमल को मज़कूरा तादाद में हरेक आदमी को अलग अलग पढ़ना ज़रूरी है।

शिफ़ाए अमराज़ मोहलिक में छोटे चराग़ के बाद अगर कोई अमल है तो वह सिर्फ़ बड़ा चराग़ है। आगे मौला की मर्ज़ी में किसका दख़ल है क़ज़ा हक़ है सब्र करना चाहिए .... اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

40- पारे की गोली बनाने की तरकीब जो कुव्वते बाह और भूख बढ़ाने में बे मिस्ल है : खालिस चांदी के वरक़ और पारा बराबर वज़न लेकर दोनों को इतना खरल करें कि गोली बंध जाए जब गोली बंध जाए तो उसको एक दिन रात सिरके में डाल दें जब सख़्त हो जाए तो एहमियात से रखें अगर दूध में डालकर दूध पकाकर पिएं तो दुध जल्द हज़म होगा। बाह और भूख में ज़्यादती होगी चेहरे पर सुर्खी नमूदार होगी और बलग़मी इमराज़ में बहुत फ़ायदा मन्द साबित होगी।

41- बलग़मी खांसी के लिए बे नज़ीर गोलियां : असलस्सूस मक़शर छ माशा ज़ूफ़ाए खुश्क 6 माशा, काली मिर्च 2 माशा कूटछान कर काली मिर्च के बराबर गोलियां बनाकर साए में खुश्क कर लें। ज़रूरत के वक़्त मुंह में रखकर चूसें। सारा बलग़म जो सीने में जमा हो गया है आसानी से खारिज होकर खांसी को आराम होगा इन्शा अल्लाह।

42- दीगर हर क़िस्म की खांसी के लिए जोशान्दा : गुलबन-फ़शा 3 माशा, गाउज़बान 2 माशा, बादियान 3 माशा, उनाब 15 दाने, असलु स्सूस 3 माशा, मुनक़्क़ा 7 दाना, सपिस्तान 9 माशा, परसियाउशां 2 माशा।

रात को ताजा पानी में भिगों दें। सुबह को छान कर शरबत बनफ़शा 2 तोला या शकर 3 तोला मिलाकर पिएं। बहुत जल्द खांसी और बुख़ार, बलग़मी नज़ला ज़ुकाम और बदन में जो दर्द वग़ैरह नज़ला ज़ुकाम के सबब होता है सबसे बफ़ज़ले तआला नजात होगी। कम से कम 5 दिन वर्ना सात दिन पिएं।

42- लाजवाब तिला : जोज़बोया एक अदद, किरम सुर्ख 1 माशा

(अर्थात ज़मीन का गेसा जो मछली के शिकार का चारा भी है) हुब्बुस्सलातीन अर्थात जमाल घोटा 2 अदद, मुर्ग़ के पित्ते में मिला कर अच्छी तरह खरल करके घोंटे कि सब एक जैसा हो जाए। यह तिला सिर्फ़ तीन दिन वर्ना 7 दिन अज़ू पर मालिश करें। इन्तिहाई फ़ायदे मन्द साबित हुआ है।

44- दवाए अजीब व फ़ेअल ग़रीब इस नुस्खे का नाम काया पलट है : एक तरबूज़ पुख़्ता और बड़ा लेकर बीच से दो हिस्से करें। एक टुकड़ा अलग और दूसरे टुकड़े को गूदे से खाली करके सन्दल सफ़ेद 2 माशा तबाशीर 2 माशा पीस कर बारीक करके खाली टुकड़े में चारों तरफ़ बिछा दें उसके ऊपर से किशमिश जितनी आ सके भर दें। इसके बाद दूसरा टुकड़ा जो अलग रखा है उसके ऊपर रख कर अच्छी तरह मज़बूती के साथ किसी चीज़ से बांध दें और सूरज के सामने रख दिया करें। दस दिन बाद खोलकर जो कुछ निकले उसे कपड़े में छानकर शीशे के बर्तन में संभाल कर रख लें। हर दिन नहार मुंह दो माशा खा लिया करें फिर अल्लाह की कुदरत का मुशाहिदा करें।

45- मुक़व्वी दिमाग़ व ज़्यादती अक़्ल व ख़िर्द व दाफ़ेअ पुराना दर्दे सर : क़रन्फ़ल 2 माशा, ज़न्जबील 3 माशा, तुख़्म ख़रफ़ा 2 माशा, जोज़ल तीब 3 माशा, सुम्बल 3 माशा, शोनीज़ एक माशा। इन सबको सफ़ूफ़ करके रख लें।

खालिस शहद का क़व्वाम करें और जब क़व्वाम तैयारी पर आए तो उसमें एक नींबू का अर्क निचोड़ दें इसके बाद सफ़ूफ़ शामिल करके माजून बनाकर रख लें। 3 माशा से 5 माशा तक रोजाना सुबह और सोते वक़्त अर्क़ गाउज़बान के साथ एक छटांक पानी से खा लिया करें। यह माजून दिमाग़ को ताक़त देगी। अक़्ल को बढ़ाएगी और कमज़ोरी दिमाग़ से जो सर दर्द होगा दूर हो जाएगा।

46- पेट के कीड़े मारकर निकालने का जोशान्दा : शाहतरा

5 माशा, बाबड़ग 5 माशा, पोस्त हलीला ज़र्द 5 माशा, आधा पाव पानी में जोश दें। जब छटांक भर रह जाए छान कर शकर बक़दरे ज़रूरत मिलाकर पिला दें। सात दिन पिलाना काफ़ी है।

47- रोशनी आंख की बढ़ाने और क़ायम रखने का अमल : यह नक़्श ख़ास आला हज़रत क़ुदस सिर्रहु का तैयार किया हुआ है बड़ा असर करने वाला है और मुजर्रब है लिखकर मोम जामा करके सर पर बांधे। जिस तरफ़ की आंख में तक्लीफ़ हो या ज़्यादा पानी आता हो या जाला पड़ रहा हो उसी तरफ़ की आंख और कान के बीच रहे।

بسم اللہ الرحمن الرحیم

الیوم حدید	فبصرک	عنک غطائک	فکشفنا
۱۱۴۹	۵۳۲	۱۱۲	۳۹۳
۵۳۳	۱۱۷۲	۳۹۰	کافی
شافی	۱۱۰	۵۳۴	۱۱۷۱

48- नक़्श बराए नाफ़ :

इस नक़्श की आला हज़रत क़ुदस सिर्रहु ने बड़ी तारीफ़ फ़रमायी है।

۷۸۶

۳۸۱۶	۳۸۱۹	۳۸۲۲	۳۸۰۹
۳۸۲۱	۳۸۱۰	۳۸۱۵	۳۸۲۰
۳۸۱۱	۳۸۲۴	۳۸۱۷	۳۸۱۴
۳۸۱۸	۳۸۱۳	۳۸۱۲	۳۸۲۳

49- क़ुव्वते बाह के लिए अजीबुल असर नुस्ख़ा : तुख़्म प्याज़ घर के अन्दर या महफ़ूज़ जगह पर बोए जब शाखें निकलें और जड़ की गिरहें बक़दरे सुपारी के हो जाएं उसके ऊपर की शाखों को थोड़ा काट कर फेंक दें। बाकी शुदा हर शाख में माशा माशा भर पारा डाल दें यहां तक कि पक जाएं और खाने के काबिल हो जाएं तो एक गिरह प्याज़ ज़मीन से निकाल कर सालन के साथ पकाकर खाएं इसी तरह हर सातवें दिन एक गिरह खाए कम से कम सात गिरह प्याज़ खाले। उमर रसीदा लोगों के लिए इससे बेहतर शायद

ही कोई नुसख़ा हो।

50- नक़्श बवासीर ख़ूनी व बादी के लिए बे नज़ीर है। : गेहूं के आटे की टिकिया पकाकर यह नक़्श लिखकर मरीज़ को 7 दिन तक खिलाए इन्शा अल्लाह इस मूज़ी मर्ज़ से नजात हो यही नक़्श अगूंठी में कुन्दा करके रखे और पहने तो इस मर्ज़ से नजात हो।

51- दुश्मन के शर से महफ़ूज़ रहने का मुजर्रब नुस्ख़ा : एक रांग की तख़्ती पर यह लिखे और फ़लां की जगह दुश्मन का नाम लिख दे और हींग से धुनी देकर चूल्हे में दफ़न करे बेहतर हो कि मंगल के दिन सूरज निकलने के बाद इस नक़्श को कन्दा कराए।

فلاں	الرحیم	الرحمٰن	اللہ	بسم
بسم	فلاں	الرحیم	الرحمٰن	اللہ
اللہ	بسم	فلاں	الرحیم	الرحمٰن
الرحمٰن	اللہ	بسم	فلاں	الرحیم
الرحیم	الرحمٰن	اللہ	بسم	فلاں

52- नक़्शे हिस्टीरिया : जो औरतें हिस्टीरिया के मर्ज़ का शिकार हों इस नक़्श को कन्दा करके अगूंठी में रखकर पहने।

اللہ	رسول	محمد	الا اللہ	لا الٰہ
یاغفار	یاستار	یارحیم	یارحمٰن	یااللہ
یاشکور	یاغفور	یابدوح	یاوھاب	یاکریم

53- नक़्श हैज़ व निफ़ास जारी करने के लिए : इस नक़्श को लिख कर मोम जामा करके औरत की बायीं रान में बांधे।

ی	م	ھ	ح
دہ	د	عد	۱۱۵
مرع	۱۱	۱۵	دو
۱۹	۲	۳	۱۱

54- हैज़ का ख़ून रोकने के लिए : हैज़ का ख़ून बार बार

आता हो और ज़्यादा आता हो और बन्द करना मक़सूद हो तो यह नक़्श लिखकर औरत की कमर में बांधे।

عہ	عہ	عہ	[illegible]
۱۹	۱۹	۱۹	۱۹
۹	۹	۹	۹
۷	۷	۷	۷

55- नक़्श बच्चों की पसली के लिए : बच्चों की पसली चलने के आरज़े में ये दोनों नक़्श दो तरफ़ कुन्दा करके पहना दें। इस आरज़े से बच्चा महफ़ूज़ रहेगा और अगर होगा तो दफ़अ हो जाएगा।

۷۸۶

۳۱۰۲	۱۴۷۰	۱۰۰۹	۱۴۲
یاشافی	یامومن	یاحفیظ	یاسلام
۱۰۰۸	۱۴۳	۳۱۰۱	۱۴۸
۱۴۴	۱۰۱۱	۱۴۵	۳۱۰۰
۱۴۶	۳۰۹۹	۱۴۶	۱۰۱۰

۷۸۶

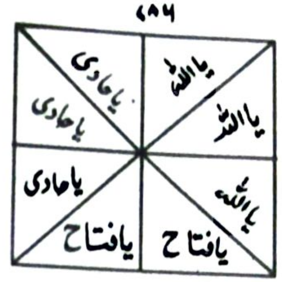

56- नक़्श जिमोगा : यह मर्ज़ बच्चों को अक्सर हो जाता है। बच्चा रंग बदलता है। ऐंठता है अकड़ता है जबड़े सख़्त हो जाते हैं और आख़िर को राही मुल्क अदम हो जाते हैं चूंकि इस मर्ज़ का असर सुबियान से ताल्लुक़ रखता है और मां के पेट से भी असर हो जाता है जिसका ज़हूर बच्चे की पैदाइश के बाद जिमोगा या पसली की शक्ल में ज़ाहिर होता है। इसको दफ़अ करने के लिए इस दुआ को दोनों नक़्श समेत लिखे और नीले कपड़े में रखकर हामला औरत के बांधे। जब बच्चा पैदा हो फ़ौरन मां के गले से उतार कर बच्चे के गले में डालें। दुआ यह है- بسم اللہ الرحمٰن الرحیم شطوشا شصصا احت

ام الصبیان ابشا صالحا طویل العمر محمد وعلی وحسن وحسین وصلی اللہ

علیٰ خیر خلقہٖ محمد وّ آلہٖ و اصحابہٖ اجمعین یاحافظ یاحفیظ

और दुआ के नीचे ये दोनों नक़्श लिखे-

۷۸۶

۷	۴۵	۶	عـ۲
۲	۴۶	۳	۴۹
۴۴	۸	۴۲	۵
عـ۷	۱	۴۸	۴

۷۸۶

۷	۲	عـ۹	عـ۲
عـ۴	عـ۶	۳	۶
۱	۸	عـ۳	عـ۸
عـ۷	عـ۵	۵	عـ

57- बराए दफ़अ जिमोगा

इस नक़्श को चांदी की तख़्ती पर कन्दा कराके बच्चे के गले में डालें। बच्चा इस मूज़ी मर्ज़ से महफ़ूज़ रहेगा और अगर शिकार हो चुका है तो इस मर्ज़ से नजात पाकर इन्शा अल्लाह तन्दुरुस्त हो जाएगा।

۷۸۶

۲۶۸ دفروں	۱۱۶ موسیٰ	۱۱۰ علے	۱۳۱ سلامٌ
۱۰۹	۱۳۲	۲۶۷	۱۱۷
۱۳۳	۱۱۲	۱۱۴	۲۶۶
۱۱۵	۲۶۵	۱۳۴	۱۱۱

58- दर्दे सर और आधे सर के दर्द के लिए मुजर्रब नक़्श

सर दर्द के लिए

۷۸۶

ط	ط	ط	ط
ط	ط	ط	ط
ط	ط	ط	ط
ط	ط	ط	ط

पूरे सर के दर्द के लिए

۷۸۶

ص	ع	ی	ھ	ك
ی	ھ	ك	ص	ع
ص	ع	ی	ك	ھ
ع	ی	ھ	ك	ص
ھ	ك	ص	ع	ی

आधे सर के दर्द के लिए

۷۸۶

الله	الله	الله
الله	الله	الله
الله	الله	الله

जिस तरफ़ दर्द हो उसके दूसरी तरफ़ मोम जामा करके बांधे।

59- सर दर्द के लिए:

जो किसी तरह क़ाबू में न आता हो जुमे के दिन सुबह पहली घड़ी में जो ज़ोहरा की घड़ी कहलाती है लिखे और मोम जामा करके सर पर बांधे। इन्शा अल्लाह फ़ौरन दर्द में सुकून होगा।

بحق كهيعص وبحق حمعسق بسم الله الرحمن الرحيم

يابدوح	يابدوح	يابدوح
يابدوح	يابدوح	يابدوح
يابدوح	يابدوح	يابدوح

برحمتك يا ارحم الراحمين

60- नक़्श दमह :

हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द ने यह नक़्श दम्मा के लिए मुहब्बत अली साहब को दिया था। मुहब्बत अली साहब को एक हफ़्ता यह नक़्श पीने से मर्ज़ जाता रहा।

بسم الله الرحمن الرحيم

۱۱۰۱۹ ۷۱۶ ۱۶۵۱

۸	۵۷۹	۵۸۲	۱
۵۸۱	۲	۷	۵۸۰
۳	۵۸۴	۵۷۷	۶
۵۷۸	۵	۴	۵۸۳

61- दूध बढ़ाने का बेहतरीन अमल :

औरतों का दूध अक्सर नज़र और कभी ख़ून की कमी या बीमारी की वजह से सूख जाता है या इतना कम होता है कि बच्चे का पेट नहीं भर पाता। इसके लिए दूध बढ़ाने की रकाबी जो हिस्सा अव्वल में मौजूद है बहुत ही मुजर्रब साबित होगी मगर यहां एक ऐसा अमल तहरीर किया जाता है जो औरतों और जानवरों और गाय भैंस बकरी सबके लिए मुफ़ीद है।

सूरह क़द्र إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ आख़िर सूरह तक 11 बार पढ़कर तीन दिन किसी खाने की चीज पर दम करके खिलाए और जानवरों को नमक पर दम करके दें।

से नुक़्सान है।

अगर सवाल करे कि सफ़र करूं या नहीं? : अदद नाम साइल व अदद दिन मालूम करने के सब के आदाद जमा करके 2 से तक़्सीम करे अगर 1 बचे सफ़र न करे और 2 बचे तो करे।

अगर सवाल करे कि सफ़र में फ़ायदा होगा या नहीं?: साइल व दिन के आदाद जमा करके 3 से तक़्सीम करे 1 बचे तो नुक़्सान, 2 बचे तो नफ़ा, 3 बचे तो दोनों ही हों।

अगर सवाल करे कि भागने वाला किधर गया? : मन्दरजा बाला तरीक़े से आदाद निकाल कर तीन गुना करे यानि 3 से ज़रब देकर हासिल आदाद को 4 से तक़्सीम करे अगर 1 बचे तो जानिब मश्रिक़ 2 बचे तो तो शिमाल यानि उत्तर 3 बचे तो मग़रिब की जानिब और 4 बचे तो जुनूब यानि दक्खिन की जानिब गया है।

अगर सवाल करे कि चोरी का माल मिलेगा या नहीं?: मन्दरजा बाला तरीक़े से अदद निकाल कर 2 से तक़्सीम करे अगर 1 बचे तो नहीं और 2 बचे तो हां।

अगर सवाल करे कि चोर मर्द है या औरत ? : साइल और दिन के आदाद जमा करके 2 से तक़्सीम करे अगर 1 बचे तो मर्द है और 2 बचे तो औरत है।

अगर सवाल करे कि चोर का रंग कैसा है? मन्दरजा वाला तरीक़े से आदाद निकालकर 4 से तक़्सीम करे अगर 1 बचे तो रंग सफ़ेद ज़र्दी मायल अगर 2 बचे तो सुर्ख मायल ब सब्ज़ और अगर 3 बचे तो रगं गन्दमी सांवला है।

अगर मालूम करे कि मुक़दमें का क्या होगा ? : चाहिए कि अदद नाम उस दिन के और दोनों मुद्दई व मुद्दआ अलैहि के नामों

के आदाद जमा करके 4 से तक़्सीम करे अगर 1 बचे साइल ग़ालिब आए 2 बचे तो उसके बरअक्स 3 बचे तो सुलह की उम्मीद है 4 बचे तो रंजिश व ख़ुसूमत ज़्यादा होने की अलामत है।

अगर सवाल करे कि कौन सा काम करूं जिससे फ़ायदा हो? : अदद नाम साइल और उस दिन के आदाद निकालकर 4 से तक़्सीम करके देखे 1 बचे तो तिजारत ज़मीन से पैदा होने वाली चीज़ों की। दो बचे तो खेती बाड़ी वग़ैरह और अगर 3 बचे तो कपड़े की तिजारत और अगर चार बचे तो नौकरी से माल हाथ आए।

अगर सवाल करे कि फ़लां के साथ शिर्कत करना ठीक है या नहीं? : नाम साइल और दिन के आदाद जमा करके 2 से तक़्सीम करे अगर 1 बचे तो शिर्कत बुरी है और 2 बचे तो मुफ़ीद है।

खुसूसी नोट बाबत इस्तिख़ारा इल्मुल आदाद

(अज़ इक़बाल अहमद)

इल्म आदाद के इस्तिख़ारे अक्सर देखने में आए। अमूमन इस इल्म के माहिरीन इसके खुसूसी इशारे मुख़फ़ी रखते हैं यही वजह है कि इल्मुल आदाद से लोग कुमाहक़ा फ़ायदा नहीं उठाते।

इस इस्तिख़ारे में भी एक अम्र मुख़फ़ी नज़र आता है वह यह कि साइल के नाम और दिन के आदाद के साथ उसके सवाल के आदाद भी शामिल करना होंगे यानि साइल के नाम और उस दिन कि जिस दिन सवाल किया जा रहा है दोनों के आदाद और साइल का पूरा सवाल जो उसकी जबान से अलफ़ाज़ अदा हों लिख ले और इस पूरी इबारत के आदाद निकाले। इन्शा अल्लाह जवाब सही निकल आएगा।

65- नक़्श बनाने का तरीक़ा : आम तौर पर दो क़िस्म के नक़्श ज़्यादा तर काम में लिए जाते हैं मुरब्बअ व मुसल्लस। नक़्श

बचे हर तरह ज़ाहिर व बातिन दोस्ती व मुहब्बत हो।

अगर सवाल करे कि फ़लां चीज़ या माल हाथ आएगा या नहीं ? : आदाद नाम साइल और आदाद उस दिन के शुमार करे फिर दो से तक़सीम करे अगर एक बचे हाथ न आएगा मगर मुश्किल से और अगर 2 बचे हाथ आ जाएगा आसानी से।

अगर सवाल करे कि माल मुझे कहां से मिलेगा? : मन्दरजा बाला तरीक़े से आदाद निकाल कर जोड़ कर 7 से तक़सीम करे अगर एक बचे तो औरतों से या जो लिखने का काम करते हों वग़ैरह वग़ैरह अगर 2 बचें तो मर्दो से अगर 3 बचें ज़मीन की पैदावार से अगर 4 बचे तो सफ़र करने से अगर 5 बचें तो मीरास तरका वग़ैरह से 6 बचें तो तिजारत से अगर सात बचें तो क़र्ज़ से।

अगर सवाल करे कि फ़लां औरत से शादी ठीक रहेगी या नहीं? : चाहिए कि नाम साइल मय उसकी मां, नाम औरत मय मां के आदाद निकाल कर सबको जमा करके 3 से तक़सीम करे अगर एक बचें तो औरत से मुवाफ़िक़त है 2 बचे मुवाफ़िक़त न हो अगर 3 बचें तो औरत के सालेह होने की आलामत है।

अगर सवाल करे कि फ़लां आदमी किस हालत में है? : आदाद नाम साइल व आदाद उस दिन के जमा करके 3 से तक़सीम करे अगर 1 बचें तो ऐश मैं है अगर 2 बचें तो ज़िन्दा है मगर तक्लीफ़ में है। 3 बचे तो बहुत नाज़ुक हालत में है।

अगर सवाल करे कि ये दो तन एक होंगे या नहीं? : नाम साईल और दिन के आदाद निकाल कर जमा करके 2 से तक़सीम करे अगर 1 बचे तो नहीं और 2 बचे तो हो।

अगर सवाल करे कि यह खबर सही है या झूठ? : मन्दरजा बाला तरीक़े से साईल व दिन के आदाद जमा शुदा को 2 से तक़सीम करे अगर 1 बचे तो झूठ और 2 बचे तो सही।

अगर किसी ग़ायब को पूछे किस हाल में है? : नाम साइल व दिन के आदाद निकाल कर जमा करे फिर 4 से तक़सीम करके देखे अगर1 बचे तो क़ैद में है 2 बचे तो जल्द वापस आए अगर 3 बचे कभी वापस न आए अगर 4 बचे तो दो हफ़ता या दो माह या दो साल में वापस आए या खैरियत की ख़बर पहुंचे।

अगर सवाल करे कि ग़ायब ज़िन्दा है या मुर्दा ? : ग़ायब का नाम मय मां के नाम के और उस दिन के आदाद जमा करके 2 से तक़सीम करे। अगर 1 बचे मुर्दा और 2 बचे तो ज़िन्दा है।

अगर सवाल करे कि ग़ायब वापस आएगा या नहीं?: मन्दरजा बाला तरीक़े से आदाद निकाल कर 2 से तक़सीम करे अगर 1 बचे तो न आए और 2 बचे तो वापस आए।

अगर सवाल करे कि यह उम्मीद पूरी होगी या नहीं ? : नाम दिन और नाम साइल के आदाद जमा करके 2 से तक़सीम करे अगर एक बाक़ी रहे तो बर आएगी। 2 बचे तो नहीं और जिस तदबीर से बर आएगी इसके लिए मन्दरजा बाला आदाद को 2 से ज़रब देकर 4 से तक़सीम करे अगर 1 बचे तो तिजारत पारचा से 2 बचे तो चांदी की तिजारत सूदमन्द होगी अगर 3 बचे तो हैवानात की तिजारत से और 4 बचे तो सब बेकार।

अगर सवाल करे कि इस दवा से फ़ायदा होगा कि नहीं?: चाहिए कि सब दवाओं के नाम और दिन के आदाद निकाल कर जमा करके 3 से तक़्सीम करे अगर 1 बचे तो फ़ायदे मन्द है 2 बचे तो हुक्म मिमाना यानि नुक़्सान दे न फ़ायदा और 3 बचे तो इस दवा

चार से बराबर तक़सीम हो जाए तो जादू तसव्वुर करे और जो मालूम हो उसका इलाज करें। जैसे साइल ने शम्बा यानि शनीचर के दिन सवाल किया कि मेरी बहन जिसका नाम अकबरी है उसे क्या मर्ज़ है तो शम्बा के अदद निकाले जाएंगे। शीन, नून, बे, हे, अलिफ़, काफ़, बे, रे, ये इन सबको जमा किया तो 590 हुए। 300, 50, 2, 5, 1, 20, 2, 200, 10 इनको 4 से तक़सीम किया दो बचे तो मालूम हुआ कि मर्ज़ जिसमानी है जादू आसेब वग़ैरह नहीं है। वल्लाह आलम बिस्सवा ब।

अगर सवाल करे कि मरीज़ ठीक होगा कि नहीं? : नाम मरीज़ के और मरीज़ की मां के नाम आदाद और जिस दिन सवाल किया है उस दिन के आदाद सबको जमा करके उसे तक़सीम करे अगर एक बचे मर्ज़ सख़्त है मुश्किल से ही सेहत पाएगा और बाक़ी दो बचे मर्ज़ औसत दर्जे का है। इलाज से जल्द शिफ़ा होगी और अगर तीन बचें यानि बराबर से तक़सीम हो जाए तो अलामत ज़ीस्त मुन्क़तअ की है ख्वाह मर्ज़ हो या आसेब वग़ैरह।

अगर सवाल करे कि पहले मेरा इन्तक़ाल होगा या बीवी का ? : तो इसका तरीक़ा यह है कि शोहर का नाम मय मां और बीवी का मय मां के अदद को जमा करके 2 से तक़सीम करे अगर एक बचे तो पहले मर्द का और अगर 2 बचे तो बीवी का।

अगर सवाल करे कि हमल रहेगा या ख़त्म होगा? : अदद हामला के नाम के और जिस दिन सवाल किया है उस दिन के आदाद जमा करके 2 से तक़सीम करें अगर 1 बचे हमल तमाम हो कि बच्चा सही सलामत पैदा होगा और अगर दो बचें तो नहीं और तो क़ब्ल अज़ वज़अ हमल ज़ाया होने की अलामत है।

अगर सवाल करे कि हामला के लड़का होगा या लड़की?

तो हामला के नाम के अदद और जिस दिन सवाल किया है उस दिन के अदद जमा करके 3 से तक़सीम करें। अगर 1 बचे तो लड़का होगा। 2 बचे तो लड़की होगी और 3 बचे तो हमल ज़ाया होने की अलामत है।

अगर सवाल करे कि फ़लां औरत को हमल है या नहीं?

तो अदद उस औरत के नाम के और उस दिन के अदद जमा करके 3 से तक़सीम करे। अगर एक बचे तो औरत हामला है 2 बचे तो नहीं और तीन बचे तो हमल था मगर ग़ायब हो गया।

अगर सवाल करे फ़लां हाकिम ज़ालिम है या आदिल?

तो साइल का नाम व पूछने वाले दिन के नम्बर निकाल कर जमा करके तीन से तक़सीम करे। अगर 1 बचे हाकिम आदिल है 2 बचे हाकिम जुल्म व अदल का रास्ता अपनाए हुए है और अगर तीन बचे तो ज़ालिम है।

अगर सवाल करे कि औरत मर्द के बीच मुलाक़ात होगी कि नहीं ? : तो नाम मर्द मय मां के नाम और नाम औरत व उसकी मां के नाम इन सबके अदद निकालकर जमा करके 5 से तक़सीम करे अगर एक या 3 या 5 बाक़ी रहे तो दोनों की आपस में मुलाक़ात होगी और दोस्ती क़ायम रहेगी और अगर तीन या चार बाक़ी रहें हरगिज़ दोनों के बीच दोस्ती व मुलाक़ात न होगी।

अगर सवाल करे कि फ़लां आदमी दोस्ती से पेश आएगा या नहीं? : चाहिए कि साइल के नाम के अदद और उस दिन के अदद निकालकर जमा करके 4 से तक़सीम करे अगर 1 बचे जानी दुश्मनी हो अगर 2 बचे दोस्ती ज़रूर हो अगर 3 बचें बज़ाहिर दोस्ती हो और मुहब्बत जताए मगर ब बातिन दिली दुश्मनी रखे अगर 4

बाबे दोम (2)

इल्मुल आदाद

इल्मुल आदाद आमिलीन के लिए बड़ा ज़रूरी और अहम फ़न है कोई अमल ऐसा नहीं जिसमें आदाद की क़ैद न हो किसी आयत या इस्म का नक़्श तो बिना इल्मुल आदाद के भर ही नहीं सकते। इस किताब में आदाद निकालने और उसका नक़्श बनाने का तरीक़ा और ज़रूरी उमूर में उनसे किस तरह काम लिया जा सकता है मुख़्तसर तहरीर किया जा रहा है।

62- जुदूल आदाद क़मरी :

ز ۷	و ۶	ہ ۵	د ۴	ج ۳	ب ۲	ا ۱
ن ۵۰	م ۴۰	ل ۳۰	ک ۲۰	ی ۱۰	ط ۹	ح ۸
ش ۳۰۰	ر ۲۰۰	ق ۱۰۰	ص ۹۰	ف ۸۰	ع ۷۰	س ۶۰
غ ۱۰۰۰	ظ ۹۰۰	ض ۸۰۰	ذ ۷۰۰	خ ۶۰۰	ث ۵۰۰	ت ۴۰۰

63- जुदूल आदाद अय्यामे फ़ारसी :

جمعہ	پنجشنبہ	چہارشنبہ	سہ‌شنبہ	دوشنبہ	یکشنبہ	شنبہ
۱۱۸	۴۱۲	۵۶۶	۴۲۲	۳۶۷	۳۸۷	۲۵۷

आला हज़रत क़दस सिर्रहु ने आदाद निकालने के कई तरीक़े तहरीर फ़रमाए हैं जिसमें से दो बहुत ही मशहूर हैं आदाद क़मरी दूसरे आदाद शमसी। आदाद क़मरी की जदवल तहरीर कर दी गयी आदाद शमसी से किस तरह और क्या क्या काम लिए जा सकते हैं दूसरे हिस्से में इसकी गुंजाइश नहीं। इसलिए आदाद क़मरी पर ही इक्तिफ़ा की जाती है कि आम तौर पर इसी से काम लिया जाता है।

किसी आयत या नाम के आदाद निकालना हों तो इसमें जो हुरुफ़ हों उनके आदाद इस नक़्शे को देखकर निकाल लें जैसे इक़्बाल अहमद में अलिफ़, काफ़, बे, अलिफ़, लाम, अलिफ़, हे, मीन, दाल, सबका मजमूआ 187 होता है।

नोट- उर्दू में कुछ हरुफ़ जायद हैं इस्तेमाल होते हैं जैसे पे, चे, ज़े, ग। इसलिए यह ख़्याल रखना ज़रूरी है कि प ब में शमिल होगा। चे जीम में ज़े, ज़े मे ग, क में शुमार होगा। इस तरह पे चे ज़े ग अदद होंगे साथ ही यह भी याद रखें कि जो हरुफ़ लिखने में आते हैं आदाद उन्हीं के लिकलेंगे। कुछ लोग तशदीद वाले अलफ़ाज़ जो दो बार पढ़ने में आते हैं उनके दुगने आदाद शुमार करते हैं। यह तरीक़ा खुद साख़्ता और ग़लत है।

64- इस्तिख़ारा इल्मुल आदाद से : नक़्ल अज़ मजमूआ आमाल आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु का अता कर्दा हज़रत मुहद्दिस मौलाना एहसान अली साहब मद्दा ज़िल्लहु मुदर्रिस मदरसा मन्ज़रुल इस्लाम बरेली। मरीज़ के बारे में अगर यह मालूम करना हो कि जिसमानी मर्ज़ है या सेहर या जादू किसी ने किया या आसेब है तो इसका तरीक़ा यह है कि मरीज़ के नाम के हरुफ़ और जिस दिन साइल ने सवाल किया उस दिन के हरुफ़ लेकर दोनों के अदद निकाल लिए जाएं। फिर दोनों के आदाद जमा करके चार से भाग कर दें। अगर तीन बाकी रहें तो आसेब का ख़लल है और अगर दो बाक़ी रहे तो मर्ज़ जिसमानी है अगर एक बाक़ी रहे तो अन्दुरूनी बुख़ार है और

मुरब्बअ 16 ख़ाने का होता है और नक़्श मुसल्लस 9 ख़ाने का। जिस आयत या इस्म का नक़्श बनाना हो तो उसके आदाद निकालकर जमा कर लें। फिर क़ानून के 30 अदद कम करके 4 से तक़सीम कर दें और हासिल अदद से नक़्श पुर करें। जैसे बिस्मिल्लाह शरीफ़ के आदाद 786 होते हैं। 786 में से 30 कम किए तो बाक़ी बचे 756। अब इनको 30 से तक़सीम किया------हासिल अदद 189 हुए अब 189 ही से नक़्श भरा जाएगा।

66- नक़्श मुरब्बअ भरने का तरीक़ा : खाना अव्वल में 189 और खाना दोम में 190। इसी तर्तीब से नक़्श भर लें। अब इसके आदाद को जिस तरफ़ से भी जोड़ेंगे 786 ही आएगा। इसी तरह हर आयत और हर इस्म का नक़्श बनाया जा सकता है।

٨ آٹھواں	١١ گیارھواں	١٤ چودھواں	١ اول خانہ
١٣ تیرھواں	٢ دوسرا	٧ ساتواں	١٢ بارھواں
٣ تیسرا	١٦ سولھواں	٩ نواں	٦ چھٹا
١٠ دسواں	٥ پانچواں	٤ چوتھا	١٥ پندرھواں

नोट- अगर किसी के आदाद पूरे तक़सीम न हों तो नक़्श भरते वक़्त कसर देना पड़ती है अगर एक बचे तो 13 वें खाने से 1 बढ़ाएं अगर 2 बचें तो नवें खाने में 1 बढ़ाएं और 3 बचे तो पांचवे खाने में 1 बढ़ाएं जैसे इस्म बारी तआला "हलीम" के अदद निकाले तो 88 हुए 30 कानून के कम किए तो 58 बचे अब 4 से तक़्सीम किया इस तक़्सीम में 2 बचे अब इस्म या हलीम का नक़्श 14 से भरना है और नवें खाने में 1 बढ़ाना है यानि नवें खाने में बजाए 22 के 23 लिखेंगे।

١٩٦	١٩٩	٢٠٢	١٨٩
٢٠١	١٩٠	١٩٥	٢٠٠
١٩١	٢٠٤	١٩٧	١٩٤
١٩٨	١٩٣	١٩٢	٢٠٣

٢١	٢٥	٢٨	١٤
٢٧	١٥	٢٠	٢٦
١٦	٣٠	٢٣ نواں خانہ [illegible]	١٩
٢٤	١٨	١٧	٢٩

मिफ़्ताहुन्नुकूश यानि कलीद राज़ सर बसता

अज़ सैयदी इमाम आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु अता कर्दा डाक्टर मुहम्मद सिद्दीक़ साहब।

٨ برائے خوشنودی خوف مفسدین و متعصبین	١١ برائے حصول مراد دولت و صحت از زحمت	١٤ برائے بازار دوستی و محبت و تسخیر عوام	١ برائے حفاظت جان و صحت از بیماری
١٣ برائے جدائی و عداوت و بربادی دشمنان	٢ برائے حفاظت مال از چور و دشمن سے	٧ برائے دفع مرض و امان از غرق آب	١٢ برائے دفع اعداء و مقہوری اعداء
٣ برائے اصلاح و صلح دوست برادران	١٦ برائے فتح یابی مقدمات و ملاقات ارواح روحانیان	٩ برائے گریہ طفلاں از درد شکم و امراض شکم	٦ برائے حفاظت از سانپ بچھو و دفع حاسدین
١٠ برائے تسخیر افسران حاکمان و امیران	٥ برائے عشق فراوان اور محبوب کو حاضر لانے کا	٤ برائے زبان بندی و عقد النوم	١٥ برائے فراخی زراعت و دفع کرم از کھیتی

जिस मक़्सद के लिए नक़्श देना हो उसी ख़ाने से शुरु करें। मज़कूरा बाला तरीक़ा नक़्श भरने का जो दर्ज हुआ है उस पर अमल करके

आप किसी इस्म बारी तआला से हर काम ले सकते हैं । खाना मक़्सद से सही नक़्श भरने का तरीक़ा मन्दरजा ज़ेल है ।

(1) जान व सेहत की हिफ़ाज़त के लिए

۸	۱۱	۱۴	۱
۱۳	۲	۷	۱۲
۳	۱۶	۹	۶
۱۰	۵	۴	۱۵

(2) चोर से माल की हिफ़ाज़त के लिए

۷	۱۲	۱۳	۲
۱۴	۱	۸	۱۱
۴	۱۵	۱۰	۵
۹	۶	۳	۱۶

(3) दोस्त व भाईयों की इस्लाह के लिए

۱۱	۲	۱۶	۵
۸	۱۳	۳	۱۰
۱	۱۲	۶	۵
۱۴	۷	۹	۴

(4) ज़बान बन्दी के लिए

۵	۱۰	۱۵	۴
۱۶	۳	۶	۹
۲	۱۳	۱۲	۷
۱۱	۸	۱	۱۴

(5) महबूब से इश्क़ और उसे हाज़िर करने के लिए

۴	۱۵	۱۰	۵
۹	۶	۳	۱۶
۷	۱۲	۱۳	۲
۱۴	۱	۸	۱۱

(6) सांप, बिच्छु व हासिदीन से हिफ़ाज़त के लिए

۳	۱۶	۵	۱۰
۶	۹	۴	۱۵
۱۲	۷	۱۴	۱
۱۳	۱۲	۱۱	۸

(7) पानी में डूबने और मर्ज़ से बचने के लिए

۹	۴	۱۴	۷
۶	۱۵	۱	۱۲
۳	۱۰	۸	۱۳
۳	۵	۱۰	۵

(8) मुफ़रिदों से हिफ़ाज़त के लिए

۱	۱۲	۶	۱۵
۱۴	۷	۹	۴
۱۱	۲	۱۶	۵
۸	۱۳	۳	۲

(9) बच्चे का रोना, पेट दर्द व बीमारी के लिए

۱۶	۳	۱۰	۵
۹	۶	۱۵	۴
۷	۱۲	۱	۱۴
۲	۱۳	۸	۱۱

(10) अफ़सरान की तसख़ीर के लिए

۱۵	۴	۵	۱۰
۶	۹	۱۶	۳
۱۲	۷	۲	۱۳
۱	۱۴	۱۱	۸

(11) माल व दौलत के हुसूल के लिए

۱۴	۱	۸	۱۱
۷	۱۲	۱۳	۲
۹	۶	۳	۱۶
۴	۱۵	۱۰	۵

(12) दुश्मनों और उसके ज़ुल्म से बचने के लिए

۴	۹	۷	۱۴
۱۵	۶	۱۲	۱
۱۰	۳	۱۳	۸
۵	۱۶	۲	۱۱

(13) जुदाई व अदावत दुश्मनों की बर्बादी के लिए

۱۴	۷	۹	۴
۱	۱۲	۶	۱۵
۸	۱۳	۳	۱۰
۱۱	۲	۱۶	۵

(14) जाइज़ दोस्ती व मुहब्बत के लिए

۱۱	۸	۱	۱۴
۲	۱۳	۱۲	۷
۱۶	۳	۶	۹
۵	۱۰	۱۵	۴

(15) फ़राख़ीए ज़राअत व खेती की बिमारी दूर करने के लिए

۱۰	۵	۴	۱۵
۳	۱۶	۹	۶
۱۳	۲	۷	۱۲
۸	۱۱	۱۴	۱

(16) मुक़दमों में फ़तहयाबी व रूहों से मुलाक़ात के लिए

۵	۱۰	۳	۱۶
۴	۱۵	۶	۹
۱۴	۱	۱۲	۷
۱	۸	۱۳	۲

नक़्शा असमाए बारी त आला आदादे क़मरी के साथ

अल्लाहु 66	रह़मानु 298	रह़ीमु 258	मलिकु 90
क़ुद्दूसु 170	सलामु 131	मोमिनु 136	मुहिमिनु 145
अज़ीज़ु 94	जब्बारु 206	मुतकब्बिरु 662	ख़ालिक़ु 731
बारियु 213	मुसव्विरु 336	ग़फ़्फ़ारु 1281	क़हारु 306
वहाबु 14	रज़्ज़ाक़ु 308	फत्ताहु 489	अलीमु 450
क़ाबिज़ु 903	बासितु 72	राफ़िअु 351	ख़ाफ़िज़ु 1481
मुईज़्ज़ु 117	मूज़िल्लु 770	समीअु 180	बसीरु 302
अदलु 104	लतीफ़ु 129	ख़बीरु 812	रक़ीबु 312
मूजीबु 55	वासिअु 137	हकमु 68	वदूदो 20
अज़ीमु 1020	ग़फ़ूरु 1286	शकूरु 526	अलीय्यु 110

कबीरु 232	ह़फ़ीज़ु 998	मुक़ीतु 550	ह़सीबु 80
जलीलु 73	करीमु 270	मजीदु 57	बाइसु 573
शहीदु 319	ह़क़्क़ु 108	क़विय्यु 116	वकीलु 66
मतीनु 500	वलिय्यु 46	ह़मीदु 62	मुह़सि 148
मुब्दियु 56	मुईदु 124	मुहयि 68	मूमितु 490
हय्यु 18	क़य्यूमु 156	वाजिदु 14	माजिदु 48
वाहिदु 19	अहदु 13	समदु 134	क़दिरु 305
मुक़्तदिरु 744	मुक़द्दिमु 184	मुअख़्ख़िरु 846	अव्वलु 37
आख़िरु 801	ज़ाहिरु 1106	बातिनु 62	वालियु 47
मुताआलि 541	बर्रु 202	तव्वाबु 409	मून्तक़िमु 430
मुनईमु 200	अफ़ूव्वु 156	रऊफ़ु 286	मालिकूलमुलके 212
ज़ुलजलाले 801	वलइकरामु 299	रब्बु 202	मुक़सितु 209

जामिउ 114	गनिय्यु 1060	मुग़नि 1100	मुनिउ 129
मानिउ 161	ज़ार्रु 1001	नाफ़िउ 201	नूरो 256
हादियु 20	बदिउ 86	बाक़ी 113	वारिसु 707
रशीदु 614	सबूरु 298	दय्यानो 65	कबीरु 302
अकबरु 323	वाफ़ेउ 155	दलीलु 74	दाएमु 45
कबीरु 232	शाफ़ियो 391	हलीमो 88	हन्नानु 109
मन्नानु 141	सरीउ 340	हुवा 11	मुन्तहु 76
हाफ़िज़ु 989	सत्तारु 661	मानेउ 161	मुस्तब्बिबुल अस्बाब 201
अहकमुलहाकिमीन 239	मुहतसिबु 512	काफ़ि 111	वाफ़िउ 97
आदिलु 105	हकीमु 178	साबिक़ु 903	ज़ाकिय्यु 37
मुबीनु 102	यासीनु 130	यासीन 70	क़दीरु 314
महमूदु 114	सिदक़ु 120	नक़िय्यु 98	तक़िय्यु 141

क़ाएमु 141	ईलाह 36	मसफ़ी 830	बुरहानु 298
सुल्तानु 150	स-ल-मु 130	हामिदु 53	शाहिदु 310
कबीरु 232	मालिकु 91	मलिकु 100	हाकिमु 69
आलिमु 141	आला 111	वहीदु 30	मुईनु 127
मुईदु 170	मुस्तजीबु 562	हामिदु 53	सुबहानु 120

हुरूफ़े क़मरी के आदाद

अलिफ 1	बे 2	जीम 3	दाल 4	हे 5
वाव 6	ज़े 7	हे 8	तोय 9	ये 10
काफ 20	लाम 30	मीम 40	नून 50	सीन 60
ऐन 70	फे 80	स्वाद 90	क़ाफ 100	रे 200
शीन 300	ते 400	से 500	खे 600	ज़ाल 700
ज़्वाद 800	ज़ो 900	गैन 1000		

अपनी ज़ात के लिए इस्मे आज़म निकालने का तरीक़ा अपने नाम के आदाद निकालकर इतने ही आदाद का एक इस्म बारी तआला तलाश कीजिए। अगर इस्म एक न मिले तो दो असमाए बारी मिलाकर बना लें जैसे मेरे नाम के आदाद 187 हैं कोई एक इस्म जिसके आदाद 187 हों न मिला इसलिए दो इस्म मिलाकर अपना इस्मे आज़म बनाया। या सुबहान के आदाद 121 और या अल्लाह के 66 दोनों के आदाद मिलाकर 187 हो गए। अब आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़रमान के मुताबिक़ या सुबहान या अल्लाह के आदाद को दुगना करके यानि 374 बार विर्द में रखे तो इस इस्म की तिलावत इस्मे आज़म का काम देगी जिसका खुलसा आगे मुलाहेज़ा फ़रमाएं।

इस्मे आज़म शरीफ़ की तलाश

अक्सर आमिलीन आबिदीन ज़ाहिदीन बल्कि आम मुस्लिमीन सदियों से इस्मे आज़म की तलाश व जुस्तजु में सरगरदां हैं कितनी ही किताबें तसनीफ़ की गयीं और अक्सर ने इसकी तलाश में कुतुब व तफ़ासीर व अहादीस के मुताले में ज़िन्दगियां वक़्फ़ कर दीं मगर किसी एक नुक्ते पर सबकी गिराहें मरकूज़ न हो सकीं अवाम तो अवाम ख़्वास और आलिमे इल्म रूहानियत भी इस बात पर मुत्तफ़िक़ न हो सके कि फ़लां इस्म ही इस्मे आज़म है।

आला हज़रत क़दस सिर्रहु के वालिद माजिद मौलाना नक़ी अली खां साहब रहिमतुल्लाही अलैहि ने अपनी तसनीफ़ लतीफ़ अहसनु ददुआ में नौ बशारतों में इस्मे आज़म शरीफ़ की तरफ़ इशारा फ़रमाया है और इमाम अहले सुन्नत आला हज़रत क़दस सिर्रहु ने उनमें ग्यारह बशारतों का और इज़ाफ़ा फ़रमाकर 20 का अदद पूरा कर दिया जो आपके सामने पेश है।

इस्मे आज़म की तहक़ीक़ : बअज़ क़लम इमाम अहले सुन्नत

आला हज़रत क़दस सिर्रहु और आपके वालिद माजिद मौलाना नक़ी अली खां साहब रहिम० क़ालर्रज़ा- यहां 20 बशारतें हैं नौ हज़रत मुसन्निफ़ अल्लामा क़दससिर्रहु ने ज़िक्र फ़रमायी और 11 फ़क़ीर सगे कूए क़ादरी ग़फ़रलहु तआला ने बढ़ायीं-

बशारत न० 1- لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ

हदीस में आयत करीमा

के बारे में फ़रमाया कि यह इस्मे आज़म है जो इसके साथ दुआ करे कुबूल हो। उलेमा फ़रमाते हैं कि आयते करीमा कुबूल दुआ खुसूसन दफ़अ बला में असर तमाम रखती है। क़ालर्रज़ा साअ़द बिन अबी विक़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह तआला का वह इस्मे आज़म न बता दूं कि जब वह इससे पुकारा जाए सुना करे और जब उससे सवाल किया जाए अता फ़रमाए। वह दुआ यह है जो यूनुस अलैहिस्सलात व स्सलाम ने तीन तारीकियों में की थी لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ किसी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह यह ख़ास यूनुस अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए थी या सब मुसलमानों के लिए फ़रमाया मगर तूने खुदा तआला का इर्शाद न सुना कि فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَنَجَّیْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ وَكَذٰلِكَ نُنْجِی الْمُؤْمِنِیْنَ यानी पस हमने यूनुस की दुआ कुबूल फ़रमायी और उसे ग़म से नजात दी और इसी तरह नजात देंगे ईमान वालों को। (रवाह अहमद, तिर्मिज़ी, नसई, हाकिम, बहीक़ी)

बशारत न० 2- सय्यद आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को कहते सुना-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَنِّیْ اَشْهَدُ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

इर्शाद फ़रमाया खुदा की क़सम तूने अल्लाह तआला से वह इस्मे आज़म लेकर सवाल किया कि जब उससे सवाल किया जाता है अल्लाह तआला अता करता है और जब उससे दुआ की जाती है कुबूल फ़रमाता है। क़ालर्रज़ा, रवाह अहमद, व इब्न अबी शीबा व अबू दाऊद व तिर्मिज़ी व नसाई ब इब्ने माजा व इब्ने हिबान व हाकिम, इमाम अबुल इसन अलीमक़्दसी व इमाम अब्दुल अज़ीम मुन्ज़री व इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी वग़ैरह आइमा रहिमल्लाहु तआला फ़रमाते हैं इस हदीस की असनाद में कोई ताअन नहीं और दरबारए इस्मे आज़म ये सब अहादीस से जय्यद व सही तर है।

बशारत न० 3- एक हदीस में आया इस्मे आज़म इन दो आयतों में है। اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ اور الٓمّٓ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ क़ालर्रज़ा रवाहइब्न अबी शीबा व अबू दाऊद व तिर्मिज़ी व इब्ने माजा अन असमा बिन्त यजीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा।

बशारत न० 4- कुछ उलेमा : को इस्मे आज़म कहते हैं क़ालर्ज़रा सुरी बिन याहया क़दस सिर्रहु बाज़ औलिया रावी हैं दुआ करता था अल्लाह तआला से मुझे इस्मे आज़म दिखा दे। मुझे आसमान में एक सितारा नज़र आया जिस पर लिखा था

يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

बशारत न० 5- कुछ उलेमा ने या अल्लाहु या रहमानू या रहिम को इस्मे आज़म कहा है।

يَا اللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ

बशारत न० 6- हुज़ूर अक़दस सल्लाहु अलैहि व सललम ने ज़ैद बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु को यों दुआ करते सुना-

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ

फ़रमाया यह अल्लाह का वह इस्मे आज़म है कि जब उससे पुकारा जाए वह सुने और जब मांगा जाए अता फ़रमाए।

اخرجه احمد وابن ابی شیبة والاربعة وابن حبان والحاکم عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ

बशारत न० 7- हदीस में उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने यों दुआ की اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَدْعُوْكَ اللّٰهَ وَاَدْعُوْكَ الرَّحْمٰنَ وَاَدْعُوْكَ الْبَرَّ الرَّحِيْمَ وَاَدْعُوْكَ بِاَسْمَائِكَ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ اَعْلَمْ اَنْ تَغْفِرَ لِيْ وَتَرْحَمَنِيْ

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- इनमें इस्मे आज़म है। *(रवाह इब्ने माजा)*

बशारत न० 8- *अबू दाऊद व इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम फ़रमाते हैं इस्मे आज़म रब्बे-रब्बे है।* *(हाकिम)*

हदीस में है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब बन्दा या रब्बे या रब्बे कहता है रब्बे अज़्ज़ोजल्ल फ़रमाता है लब्बैका ऐ मेरे बन्दे मांग कि तुझे दिया जाए। *(रवाह इब्न अबी दुनिया)*

बशारत न० 9- हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख्वाब में देखा कि इस्मे आज़म اَللّٰهُ اَللّٰهُ اَللّٰهُ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ है।

बशारत न० 10- अबु अमामा बाहली सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के शागिर्द व क़ासिम बिन अब्दुर्रहमान शामी कहते हैं इस्मे आज़म اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ है।

बशारत न० 11- इमाम क़ाज़ी अियाज़ ने बाज़ उलेमा से नक़्ल फ़रमाया कि इस्मे आज़म कलिमए तौहीद है।

बशारत न० 12- इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी व बाज़ सूफ़ियाए किराम ने कलिमा हू को इस्मे आज़म बताया।

बशारत न० 13- जमहूर उलेमा फ़रमाते हैं कि अल्लाह इस्मे आज़म है।

كذا عزاه اليهم القاری

हज़रत सय्यिदना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं शर्त यह

हैं कि तू अल्लाह कहे और उस समय तेरे दिल में अल्लाह तआला के सिवा कुछ न हो।

बशारत न० 14- बाज़ उलेमा ने बिस्मिल्लाह शरीफ़ को इस्मे शरीफ़ कहा। हुज़ूर ग़ौसुस्सक़लैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मन्क़ूल है कि बिस्मिल्लाह ज़बान आरिफ़ से ऐसी है जैसे कुन कलाम ख़ालिक़ है।

बशारत न० 15- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं जो इन पांचों कलिमों से निदा करे अल्लाह तआला से जो कुछ मांगे अल्लाह अज़्ज़ो जल्ल अता फ़रमाए। لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ
لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

बशारत न० 16- ऊपर गुज़रा कि जो आदमी يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ तीन बार कहे फ़रिश्ता कहता है मांग कि اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ तेरी तरफ़ फ़रमायी।

बशारत न० 17- पांच बार या रब्बना कहने का फ़ज़्ल इमाम सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से गुज़रा।

बशारत न० 18- यही ख़ासियत असमाए हुसना की है। क़ालर्रज़ा।

बशारत न० 19- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ कहते सुना, फ़रमाया मांग कि तेरी दुआ कुबूल हुई।

बशारत न० 20 - इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की हदीस में है हुज़ूर सय्यदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिबरील मेरे पास कुछ दुआएं लाए और अर्ज़ की जब हुज़ूर को कोई हाजिब पेश आए इन्हें पढ़कर दुआ मांगिए। يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَا صَرِيْخَ الْمُسْتَصْرِخِيْنَ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ يَا كَاشِفَ السُّوْءِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا مُجِيْبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ يَا اِلٰهَ الْعٰلَمِيْنَ بِكَ اُنْزِلُ حَاجَتِيْ وَاَنْتَ اَعْلَمُ بِهَا فَاقْضِهَا۔

इस्मे आज़म शरीफ़ का मजमूआ : ज़फ़र जलील शरह हिस्ने हसीन में लिखते हैं कि जलालुद्दीन सीवती रहिमतुल्लाहि अलैहि ने इस्मे आज़म की तहक़ीक़ में एक रिसाला अलहदा तहक़ीक़ में तसनीफ़ किया है। ब सबब ख़ौफ़ ज़खामत के इसी पर इक्तिफ़ा किया जाता है कि बाज़ मुहक्क़िक़ीन ने कहा कि यह दुआ जामेअ सब अक़्वाल की है कि सब इस्मे आज़म जो बुज़ुर्गों से मन्क़ूल हैं इसमें आ जाते हैं। दुआ यह है-

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَا خَيْرَ الْوَارِثِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا سَمِيْعَ الدُّعَاءِ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا عَالِمُ يَا سَمِيْعُ يَا عَلِيْمُ يَا حَلِيْمُ يَا مَالِكَ الْمُلْكِ يَا مَلِكُ يَا سَلَامُ يَا حَقُّ يَا قَدِيْمُ يَا قَائِمُ يَا غَنِيُّ يَا مُحِيْطُ يَا حَكِيْمُ يَا عَلِيُّ يَا قَاهِرُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ يَا سَرِيْعُ يَا كَرِيْمُ يَا مُغْنِيْ يَا مُعْطِيْ يَا مَانِعُ يَا مُحْيِيْ يَا مُقْسِطُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا وَهَّابُ يَا غَفَّارُ يَا قَرِيْبُ يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ اَنْتَ حَسْبِيْ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ؏ وَاِسْمُ اللّٰهِ تَعَالٰى الْاَعْظَمُ الَّذِيْ اِذَا سُئِلَ بِهٖ اَعْطٰى وَاِذَا دُعِيَ بِهٖ اَجَابَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ بِاَنِّيْ اَشْهَدُ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ.

फ़ायदा– इस दुआ को पढ़कर जो दुआ भी मांगी जाए अल्लाह तआला कुबूल फ़रमाते हैं और जो भी मक़सद हो पूरा फ़रमाता है।

हर इस्म इस्मे आज़म है : फ़क़ीर इक़बाल अहमद इस्मे आज़म की तहक़ीक़े जदीद तो क्या कर सकता था मगर बुज़ुर्गों की ब्याज़ों और अकाबिरीन की तसनीफ़ात का मुताला ज़रूर किया जिससे मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि हर इस्मे बारी तआला जल्ला शानहु इस्मे आज़म है और असमाए बारी तआला के मुताल्लिक़ बुज़ुर्गों ने इर्शाद फ़रमाया है कि असमाए हुसना का इन्हिसार 99 पर नहीं जैसा कि मशहूर है। लवामिअुन्नुजूम में लिखा है कि एक हज़ार नाम अल्लाह तआला के वे हैं जिनको खुदा के सिवा कोई नहीं जानता और हज़ार नाम वे हैं जिनको फ़रिश्तों के सिवा कोई नहीं जानता और हज़ार नाम वे हैं जो मुसलमानों की ज़बानों पर जारी हैं जिन में से तीन सौ तौरेत में और तीन सौ इन्जील में और तीन सौ ज़ुबूर में और सौ कुरआन हकीम में मौजूद हैं। आम तौर से मशहूर है कि कुरआन में 99 नाम ऐसे है जो सब पर ज़ाहिर हैं और एक पोशीदा है जो इस्मे आज़म है अगर इसे सही मान लिया जाए तो उन हदीसों के बारे में क्या कहा जाएगा कि जिसमें इस्मे आज़म के तालिबों को इस्मे आज़म बताए गए हैं फिर वह पोशिदा कहां रहा? साथ ही ग़ौर करने की बात यह भी है कि मुख़्तलिफ़ सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अजमईन ने इस इस्मे आज़म की जो निशान देही फ़रमायी है वह किसी एक इस्म से मुताल्लिक़ नहीं अलग अलग इस्मे बारी को इस्मे आज़म बताया जिससे इस नतीजे पर पहुंचना आसान है कि हर इस्म इस्मे आज़म है और असमाए बारी तआला की कसरत इस बात पर दलालत करती है कि हर इस्म किसी की ज़ात से मन्सूब होकर वह इस्म ख़ास इसके लिए इस्मे आज़म का काम देता है।

आपका इस्मे आज़म : इस सर बस्ता राज़ को भी इमाम अहले

सुन्नत आला हज़रत रजियल्लाहु तआला अन्हु ने ज़ाहिर फ़रमाकर हमारी मुश्किल को आसान फ़रमा दिया। एक साइल के जवाब में इर्शाद फ़रमाते हैं–

अर्ज़– हुज़ूर मेरे भतीजा पैदा हुआ है उसका कोई तारीख़ी नाम तजवीज़ फ़रमा दें।

इर्शाद– तारीख़ी नाम से क्या फ़ायदा। नाम वे हों जिनके हदीसों में फ़ज़ाइल आए हैं मेरे और मेरे भाइयों के जितने लड़के पैदा हुए हैं मैंने सबका नाम मुहम्मद रखा। यह और बात है कि यही नाम तारीख़ी भी हो जाए। हामिद रज़ा ख़ान का नाम मुहम्मद है और उनकी विलादत 92 हिजरी में हुई और इस मुबारक नाम के अदद भी 92 हैं एक परेशानी तारीख़ी नाम में यह है कि असमाए हुसना से एक या दो जिनके आदाद मुवाफ़िक़ अदद नाम क़ारी हों अदद नाम दो चन्द करके अगर पढ़े जाते है तो वह क़ारी को इस्मे आज़म का फ़ायदा देते हैं यह तारीख़ी नाम से मिक़दार बहुत ज़्यादा हो जाएगी जैसे अगर किसी की विलादत इस 1329 हिजरी में हुई तो उसके मुताबिक़ असमाए हुसना 2658 बार पढ़े जाएंगे और मुहम्मद नाम होता तो एक सौ चौरासी बार दोनों में कितना फ़र्क़ हुआ (फिर इस नाम अक़्दस के फ़ज़ाइल में ये कुछ हदीसें ज़िक्र फ़रमायी)

एक हदीस मे है हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं जो मेरी मुहब्बत की वजह से अपने लड़के का नाम मुहम्मद या अहमद रखेगा। अल्लाह तआला बाप और बेटे दोनों को बख़्शेगा। एक रिवायत में है मलाइका उस घर की ज़ियारत को आते हैं जिसमें किसी का नाम मुहम्मद या अहमद है एक रिवायत में है जिस मश्विरे में इस नाम का आदमी शरीक हो उसमें बरकत रखी जाती है एक रिवायत में है कि तुम्हारा क्या नुक़्सान है कि तुम्हारे घरों मे दो या तीन मुहम्मद हों।

या जब्बारु या क़हहारु- ये दोनों इस्म जलाली और मक़हूरी आदा (दुश्मनों) के लिए बहुत असर वाले हैं इनके आमिलों को चाहिए कि अगर किसी के इस्मे आज़म में ये असमा या इनमें का एक आए तो वह बादशाह व हाकिम या उनकी तरह रोब व हैबत इज़्ज़त व अज़मत पाए। मगर किसी और तरीक़े पर दुश्मनों के लिए पढ़े तो यह ख़्याल रखे कि दुश्मन मोमिनों में से हों तो ज़लील व ख़्वार और उनकी हलाकी की नीयत से न पढ़े बल्कि इसलिए कि दुश्मन उसे नुक़सान न पहुंचा सकें इतना ही काफ़ी है बाक़ी मर्ज़ी मौला पर छोड़ दें क्योंकि किसी मोमिन को ज़लील व ख़्वार, बर्बाद या हलाक करना जायज़ नहीं अगरचे वह व उसका ज़ुल्म बरदाश्त से बाला तर हो। अपना मक़सद तो इसी से हासिल कि दुश्मन की दुश्मनी का असर न हो व बिल्लाहित्तवफ़ीक़ दीगर अमल मक़हूरी आदा (दुश्मनों पर) व फ़तह बर दुश्मनान शबिसताने रज़ा अव्वल (145) (147) और नक़्श या क़ाहिर (152) पर दर्ज है। शेख़ बोनी रहिमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि इस इस्म की दावत 40 दिन की है। दस हज़ार बार रोज़ ब पाबन्दी शराइत ख़िलवत में पढ़े। नफ़्स में पाकीज़गी तबियत में इन्किसारी और नेक नीयती पैदा हो। मक़ासिद में कामयाबी और दुश्मनों पर ग़लबा हासिल हो। अज़ीमुल क़दर और जलीलुल मुरतबत गर्दाना जाए (तन्वीर) शेख़ अबुल अब्बास अहमद फ़रमाते हैं कि मुरीदों और रियाज़त करने वालों के लिए मुनासिब है कि नफ़्स मग़लूब और शहवत से महफ़ूज़ रहे। *(तन्वीर)*

आला हज़रत क़ुदस सिर्रहु ने इस्म या जब्बार या अल्लाह पंज क़ादरीया में बाद नमाज़ अस्र 100 बार तहरीर फ़रमाया है।

या कबीरु या **अकबरु या मुत-कब्बिरु** : इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अक्सर मुबाशरत से पहले इस इस्म को दो बार पढ़ ले तो परवरदिगार आलम फ़रज़न्द सालेह अता फ़रमाए (तन्वीर) शेख़ अब्दुल मजीद मग़रिबी ने फ़रमाया है कि यह ज़िक्र सालिहीन और आबिदीन के अज़कार से है। इस इस्म के ज़ाकिर में

शाइस्तगी और उमूर में बाक़ायदगी पैदा हो जाती है और नज़र अवाम व ख़्वास में इज़्ज़त व हुर्मत पैदा होती है और हर सरकश ज़लील सरनगूं हो जाता है। 236 बार या मुत-कब्रि बाद नमाज़ सुबह तिलावत करनी चाहिए। अगर कोई आदमी दो सौ 32 बार रोज़ाना इस इस्म या कबीर को पढ़े बुज़ुर्गी हासिल हो। शेख़ अबुल अब्बास इब्न अली अलयहिर्रहमा फ़रमाते हैं इस्म या कबीर का ज़िक्र अज़कारे जलीला से है और जो ख़्वास इस्म मुत-कब्बिर के हैं वही इस इस्म मुबारक के हैं। इन असमा के ज़िक्र से हर सरकश और बादशाह मुतीअ हो जाता है (तन्वीर) दुआए हैदरी शमा हिस्सा अव्वल (145) पर लिखी है जिसमें 45 असमाए बारी तआला मज़कूर हैं इनमें अकबर और मुतकब्बिर भी है दुश्मनों के शर से महफ़ूज़ रहने के लिए दुआए हैदरी क़वी तर और मुजर्रब है अकबर को इस्म अल्लाह के साथ मिलाकर पढ़े यानि अल्लाहु अकबर।

या ख़ालिक़ु **या बारियु या मुसव्विरु** - इमाम अली रज़ा रहिमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं जो आदमी दस्तकारी या नाज़ुक काम और किताबत की मश्क़ या साहिबे क़लम हो यानि लिखने का ज़्यादा काम करता हो और उसमें किसी वजह से ख़लल पड़ता हो वह इन असमा की तिलावत करे सब तकलीफ़ें दूर होकर सुहूलियत हासिल हो या सलातीन (हुक्काम बाला) से ताल्लुक़ात हों और कोई बीच में फ़साद पैदा करता हो यानि कोई इन ताल्लुक़ात में मुख़िल हो या हुक्काम को बरगश्ता कर देता हो या ऐसा अन्देशा हो तो इस्म या ख़ालिक़ु की तिलावत की बरकत से तमाम दरमियानी नुक़सानात दूर हों और जुमला हालात बेहतर हो जाएं (तन्वीर) शेख़ मग़रिब रहिमतुल्लाह अलैहि ने तहरीर फ़रमाया है कि जो आदमी औलाद फ़रज़न्द से महरूम हो या तंगीए रिज़्क़ का शिकार हो वह इन असमा का विर्द करे कामयाब हो (तन्वीर) जो कोई इस्म ख़ालिक़ का विर्द करे अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता पैदा करे और उसके लिए क़ियामत तक इबादत में मशग़ूल रहे और पढ़ने वाले का चेहरा नूरानी कर दे और जो कोई हफ़्ते में सौ बार इस्म

रहने दे इन्शा अल्लाह पहले दिन से इफ़ाक़ा हो और जल्द शिफ़ा हासिल हो। (तन्वीर)

बराय क़ज़ाए हाजत, गोशा ख़िलवत या गोशा मस्जिद में आधी रात में दो रकअत नमाज़ अदा करे और हुज़ूरी क़ल्ब के साथ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبِّ الرَّحِيْم खड़े होकर पढ़े जो हाजत हो पूरी हो और अगर चालीस दिन इसी तरह पढ़े तो इल्म ज़ाहिर व बातिन हासिल हो और कुल मख़लूक़ मुसख़्ख़र हो। (तन्वीर)

मोमिनु- इमाम हश्तम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है जो कोई रोज़ाना एक सौ 36 बार पढ़े तो क़ल्ब में ईमान की लहरें दौड़ने लगें। शेख़ मग़रिबी रहिमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया अगर एक हज़ार एक सौ 32 बार पढ़े तो अल्लाह तआला उसे लोगों की बदगोई और अमराज़े ख़बीसा से बचाए रखे। शेख़ अब्दुल मजीद मग़रिबी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि जो शहवते नफ़्स और ग़ज़ब से ख़ाली होकर ख़िलवत में दिल की ज़बान से ज़िक्र में लगकर नफ़्स से भी बे परवाह रहे और अमल पढ़े 41 दिन गुजरने के बाद अनवारे मारफ़त से मुनव्वर हो जाएगा और ज़ाकिर ख़ुद अपने को बहरे अनवार में जलवा गर देखेगा। इसके बाद उस ज़ाकिर में सिफ़त पैदा हो जाएंगी कि जो उसे देखेगा बा ईमान हो जाएगा और गुनाह गार तौबा कर लेगा। (तन्वीर)

या मुहयमिनु- इस इस्म मुबारक में हैबत व अज़मत की बहुत बड़ी ख़ासियत है और दुश्मनों के क़ल्ब को मरऊब करने और रोब व वजाहत से मुसख़्ख़र करने की ख़ास तासीर है इस इस्म के ज़ाकिर पर सख़्त दिल मोम हो जाते हैं कार हाय मुश्किल आसान हो जाते हैं नाक़ाबिले बरदाश्त बोझ उठाने की ताक़त पैदा हो जाती है (तन्वीर) न मख़लूक़ को उससे बुराई पहुंचे न कोई उसे बुराई व नुक़्सान पहुंचा सके। (ज़फ़र जलील)

शेख़ मग़रिबी रहिमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जो आदमी 40 या 70 दिन सुबह के वक़्त गुस्ल के बाद (कि गुस्ल करते वक़्त और बाद

गुस्ल ख़त्म अमल तक किसी से बात न करे) अच्छा लिबास पहन कर 18 496 बार इस इस्म को पढ़े। ऐसी तसख़ीर पैदा हो ख़ुद हैरान रह जाए। (तन्वीर)

या अज़ीज़ु या मुअिज़्ज़ु- ये दोनों असमा हम मायने और हम सिफ़ात हैं। शेख़ बोनी रहिमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते है यह इस्म अज़कार मुतवक्किलीन से है इसलिए इस इस्म के साथ और किसी इस्म को न मिलाए (तन्वीर) और इमाम अहले सुन्नत आला हज़रत क़ुदस सिर्रहु ने पंज गन्ज क़ादरीया में नमाज़ फ़ज्र के बाद या अज़ीज़ु या अल्लाह सौ बार तहरीर फ़रमाया है जो ख़ानदाने क़ादरिया का मामूल रहा है और मुजर्रबात से है इससे ज़ाहिर है कि किसी दूसरे इस्म के साथ पढ़ने में उसके बड़े फ़ायदों में कमी न होगी बल्कि दूसरे असमा की तरह असर करने वाला व क़वी तर हो जाएगा। *(इक़बाल अहमद)*

अगर इसके नक़्श चान्दी पर कन्दा कराकर अगूंठी में रख कर पहने दुश्मन पर ग़लबा व तफ़व्वुक़ हासिल हो। पेश हुक्काम व सलातीन ब मुअज़्ज़िज़ हो। अशरार व ख़राफ़ात आलम से मामून रहे। इसरारे इज़्ज़त से आरास्ता हो (तन्वीर) अगर इस इस्म पाक को इस तरह पढ़ें- يَا عَزِيْزُ عِزَّنِيْ فِيْ تَعَزُّزَاتٍ بِعِزَّتِكَ يَا مُعِزُّ

फ़र्ज़ की नमाज़ के फ़र्ज़ व सुन्नतों के बीच 211 बार पढ़ें तो अवाम व ख़्वास हुक्काम व रिआया बल्कि हर चीज़ मुसख़्ख़र हो और अपने आस पास हुजूम देखे मगर शर्त यह है कि हर मोमिन के साथ अख़लाक़े हसना से पेश आए। दीगर अमन शजर ज़र शबिसताने रज़ा हिस्सा अव्वल (133) पर लिखा है। जो कोई अमल या अज़ीज़ु का अपने नाम के आदाद के मुताबिक़ या किसी और तरीक़े पर पढ़े तो उसके आख़िर में لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ تا رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم एक बार अव्वल आख़िर दुरूद मन्दरजा ज़ैल दस बार पढ़े। (फ़वायदे कुबरा) صلى الله عليك يا رسول الله وسلم عليك يا حبيب الله फ़ज़ाईल आख़िर में दर्ज है।

तो दौलतमन्द हो ख़लकुल्लाह मेहरबान हो।

या मालिकु, **या मलीकु या मलिकु**- ये असमा एक जैसे मायनों वाले व एक सी सिफ़ात वाले हैं। इन तीनों में से जो भी इस्म आदाद के लिहाज़ से आपके नाम के मुताबिक़ हो उनको उसी तादाद से यानि क़ायदा अव्वल के मुताबिक़ पढ़ें। इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह इस्म बड़ा सरीउल असर है मगर (इनमें से किसी) इस्म को आठ हज़ार एक सौ बार पढ़ कर जो दुआ मांगे क़ुबूल हो *(तन्वीरुल असमा)*

तंग दस्ती बे रोज़गारी के लिए मालिकु 90 बार या मलीकु 100 बार या मालिकु 91 बार रोज़ाना पढ़े तो ख़ल्क़ ख़ुदा से बे नियाज़ हो और दौलते दुनिया उसकी जानिब रुजू करे (तन्वीर) अगर इस इस्म को इस्मे क़ुद्दूस से मिलाकर पढ़े यानि (अलमलिकुल क़ुद्दूस 260 बार) तो अगर साहिबे मलिक यानि साहिबे इज़्ज़त व इक़बाल हो या कारोबार और मुलाज़मत या जिस ओहदे पर मौजूद हो तो मौला तआला उसके मलिक यानि नसब को क़ायम व दायम रखे और इज़्ज़त व हुर्मत मिले। अगर 90 बार ही पढ़े तो दिल मुनव्वर हो। *(दलाइलुल ख़ैरात)*

दीगर हिस्सा अव्वल (230) में अमल शजर रज़ में इस्म के पढ़ने का तरीक़ा लिखा है। इस नक़्श को सोने की तख़्ती पर कन्दा करके अपने पास रखे और इसके गिर्द आयत

اللّٰهم مالك الملك تا بغير حساب

लिखे तो लोगों में हैबत वाला हो यह नक़्श अफ़लातून ने सिकन्दर ज़ुल क़रनैन के लिए तैयार किया था जिसके असर से शेर कांपते थे। *(तन्वीर)*

م	٣	٣٠
٢٧	ل	٣٢
٢٣	٤٠	ك

या क़ुद्दूसु- अगर इस इस्म को ज़वाल के वक़्त 170 बार पढ़ता रहे उसका दिल गुनाहों से पाक साफ़ होकर रोशन हो जाए और जो कोई इस्म सुब्बूह के साथ जुमे की नमाज़ के बाद रोटी के टुकड़े पर लिखकर

खाए मलकूती सिफ़ात पैदा हो जाएं जब दुश्मन के ख़ौफ़ से भागने के सिवा चारा न हो तो बकसरत पढ़े। इसके और दुश्मनों के बीच हिसार क़ायम हो जाए या उनकी नज़रों से पोशीदा हो जाएं। *(ज़फ़र जलील)*

سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوحِ

अगर कोई तादाद हरुफ़ कि 22 है इतने सौ बार यानि 2200 बार रोज़ाना पढ़े तो कभी किसी के सामने दस्त सवाल दराज़ करने की ज़रूरत पेश न आए और इतने हज़ार बार यानि 22 हज़ार बार चालीस दिन ब एहतियात ममनूआत शरअ पढ़ ले। इसके बाद 170 बार पढ़ता रहे तो ख़ुद कीमिया बन जाए।

والروح	رب الملئكة	قدوس	سبوح
سبوح	قدوس	رب الملئكة	والروح
رب الملئكة	والروح	سبوح	قدوس
قدوس	سبوح	والروح	رب الملئكة

या **सलामु या सलाम**- यह इस्म बिना अलिफ़ के भी लिखा जाता है और अलिफ़ के साथ भी। सिर्फ़ आदाद में फ़र्क़ है जिसकी वजह से दो जगह लिखा गया है। इस इस्म पाक का पढ़ने वाला बुरे व गन्दे कामों से बचा रहता है (ज़फ़र जलील) फ़ज्र की नमाज़ के बाद एक हज़ार बार पढ़ने से इल्म और जोदत (यानि ज़हन में तेज़ी व कुव्वते हाफ़िज़ा) ज़्याद हो (दलाइल हो) इस इस्म का ज़ाकिर ब वजह इल्म व सखा मशहूर हो जाता है और शहर ब शहर अवाम व ख़्वास उसकी मदह व सना करने लगें। *(तन्वीर)*

या सलामु **या अल्लाहु**- शिफ़ाए अमराज़ के लिए यह अमल मुजर्रब है मर्ज़ शदीद में मरीज़ के सिरहाने बैठकर इस तरह पढ़े कि तसबीह मरीज़ के सर से मिस होती रहे। जब तसबीह ख़त्म हो इस तसबीह को मरीज़ के तकिए के नीचे रख दे दूसरे दिन मुक़र्ररा वक़्त पर या कुछ पहले फिर तसबीह निकाल कर इसी तरह तीन दिन या तीन रात यह अमल करे और तसबीह मरीज़ के सिरहाने शिफ़ा होने तक रखी

मुख़्तसर फ़वायद असमाए हुसना

या हू- इस्म ज़ात बारी तआला है साहिबे तनवीरुल असमा तहरीर फ़रमाते हैं कि अहले तहक़ीक़ ने इस्मे आज़म कहा है और यह ख़ास तरीन इस्म है। असमाए बारी तआला से और असमाए हुसना में सबसे पहले वाक़ेअ हुआ है अगर कोई आदमी 29 बार हू कहे तो दोज़ख़ की आग उस पर हराम हो जिसका दिल आख़िरत के अंजाम से लर्ज़ां व तरसां हो अल्लाह हू का ज़िक्र करे हश्र में मुतमइन होगा।

तन्वीरुल असमा में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया अगर कोई आदमी रोज़ाना पंज शम्बा को रोज़ा रखे और चीनी के प्याले पर लिखकर बारिश के पानी या चश्मे के पानी से धो कर रोज़ा इफ़्तार करे भूलने की बीमारी ख़त्म हो जाए जो याद करे कभी न भूले। जादू के असर वाले को पिलाए जादू दूर हो अगर लिखकर अपने पास रखे तो हर बला से बचा रहे। दुश्मनों पर फ़तहयाब हो और हर अच्छे व बुरे की नज़र में मक़बूल हो हर दिल अज़ीज़ हो। तनवीर में है कि एक मज्लिस में 12 हज़ार बार या अल्लाह या हू कहे कि जिन्न व इन्स, चरिन्द परिन्द व जुमला मख़्लूक़ात मुसख़्ख़र व मुतीअ हो। चरिन्द परिन्द व परिन्द मुहब्बत करने लगें। ख़्वास अशया व उलूम पोशीदा मुनकशिफ़ हों।

या अल्लाहु : यह नाम इस्मे ज़ात और सिफ़ते इलयहा का जामेअ है। तन्वीर में है अगर कोई आदमी रोज़ाना एक हज़ार बार या अल्लाह पढ़े तो मुस्तजा बुददावात हो जाए। साहिबे दलाइल तहरीर फ़रमाते हैं कि जो कोई हर नमाज़ के बाद सौ बार पढ़ता रहे साहिबे बातिन और कश्फ़ हो जो कोई तीन हज़ार एक सौ पच्चीस बार इस इस्म को लिखकर आटे में गोली बनाकर दरिया में डाले खुदा चाहे चालीस दिन में मुराद हासिल हो (अगर चे शाही तख़्त की तमन्ना हो) दीगर आमाल व वज़ाइफ़ इस किताब में भी मिलेंगे और हिस्सा अव्वल (115) (119)

और एक ख़ास अमल वुसअते रिज़्क़ का (128) पर दर्ज है क्योंकि वह अमल सिर्फ़ तीन दिन का है इसलिए अक्सर नज़र इन्तख़ाब इसी पर ठहरती है चाहिए कि इस अमल को मुवक्किल की हाज़िरी की नीयत से न पढ़े कि इस ज़माने में अमल बा मुवक्किल करना बड़ा मुश्किल है इसलिए बेहतर तरीक़ा यह है कि अमल तीन दिन इसी तरकीब से बिना तर्क जलाली व जमाली के पढ़े सिर्फ़ झूठ व दीगर ममनूआत शरअ से बचता रहे। तीन दिन के बाद 40 बार रोज़ाना विर्द में रखे। इन्शाअल्लाह रोज़ाना जिस चीज़ की ख्वाहिश हो ज़रूरत हो ग़ैब से पहुंचती रहे। इस इस्म के मुवक्किल ग़ायबाना इसकी इताअत करते रहेंगे मुजर्रब व आज़मूदा है (इक़बाल अहमद) नक़्श इस्म अल्लाह का सोने की पत्तर पर कन्दा कराके अंगुश्तरी मे पहने तो मुअज़्ज़िज़ हो।

या रहमानु- जो लोग दीनी व दुनियावी कामों, काहिली व ग़फ़लत की वजह से अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं उन्हें चाहिए कि हर नमाज़ के बाद सौ बार पढ़ता रहे। तन्वीर में है कि उसके दिल को ज़ुल्मत व ग़फ़लत व सुस्ती से पाक करे। जो बच्चे पढ़ने से भागते हों और दिल न लगता हो उनको पांचों वक़्त पानी पर दम करके पिलाएं। साहिबे दलाइल फ़रमाते हैं 298 बार फ़ज्र की नमाज़ के बाद पढ़े तो अल्लाह उसपर रहमत फ़रमाए दिल को रोशन फ़रमाए मिरगी वाले के कान में 40 बार एक सांस में पढ़कर दम करे फ़ौरन होश में आए।

कश्फ़- अगर 40 दिन दो हज़ार पांच सौ बार बा शराइत तिलावत करे तमाम भेदों को जान जाए *(तन्वीर)*

या रहीमु- इमाम अली रज़ा रहमतुल्लाहु अलैहि इर्शाद फ़रमाते हैं कि इस इस्म को 258 बार रोज़ाना तिलावत करे तो उसका अंजाम बख़ैर हो। मरते वक़्त बा ईमान हो जाए। सकरात व क़ब्र व पुल सिरात की मन्ज़िलें आसान हों। बराए क़ज़ाए हाजात इस्म या अल्लाह या रहमान या रहीम शमा शबिस्ताने रज़ा हिस्सा अव्वल (115) पर मरक़ूम है बड़ा असरदार और मुजर्रब है हर दिन पांच सौ बार पढ़े

या बारियु पढ़े हक़ तआला इसको क़ब्र में न छोड़े बल्कि रियाज़ में ले जाए और बे औलाद हो। सात दिन रोज़ा रखे और नज़दीक इफ़्तार 21 बार या मुसव्विर पढ़े और पानी पर दम करके बीवी को पिला दे फ़रजन्द नेक पैदा हो ।

(ज़फ़र जलील)

या ग़फ़ूरु या ग़फ़्फ़ारु या अ़फ़ूव्वु- इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब इन्सान पर रोज़ी तंग हो या परेशानी दामनगीर हो या परेशानी और मुसीबत पेश आए या औलाद की तमन्ना हो या ज़्यादती माल व दौलत चाहता हो उसे चाहिए कि ख़ुलूस दिल से परवरदिगारे आलम की दरगाह में तौबा करे। इस नीयत के साथ कि आइन्दा इन ख़ताओं का मुरतकिब न होगा तो वह जिस शै को तलब करेगा हासिल होगी और हर सख़्ती दूर हो ज़ालिम व मूज़ी की ईज़ा और ज़ुल्म से महफ़ूज़ रहे। इन उमूर में ये तीन असमा सरीउल असर हैं (तन्वीर) पंज गन्ज क़ादरिया में या ग़फ़्फ़ारु या अल्लाह का अमल भी मरक़ूम है सौ बार इशा की नमाज़ के बाद ये सारे फ़ायदे हासिल हो इन्शा अल्लाह ।

या वहाबु- जो कोई फ़िक्र व फ़ाक़ा में मुब्तला हो इस इस्म को पढ़े और लिखकर पास रखे। हक़ तआला उसे इतना देता है कि हैरान रह जाए और अगर चाश्त की नमाज़ के बाद भी सज्दे में 7 बार कहे अल्लाह तआला ख़लक़त से बे परवाह कर देता है अगर कोई हाजत अहम हो तो निस्फ़ शब को वुज़ू करे और तीन बार सज्दा करे और हर सज्दा में सौ बार या वहाबु का दौरा करे। इस तरह कि हाथ की हथेलियां ऊपर को रहें। मिस्ल दुआ के इन्शा अल्लाह पहली रात में ही हाजत पूरी हो वर्ना तीन रात करे कामयाब हो। *(ज़फ़र जलील)*

और शेख़ मग़रिबी फ़रमाते हैं कि अगर कोई मुहिम पेश आए या किसी चीज़ का तालिब हो या कोई मुराद हासिल करना हो या किसी दूसरे के हाथ में क़ैद हो यानि मक़रूज़ हो या मेहनत सख़्त बरदाश्त करनी

पड़ती हो या रिज़्क़ में तंगी हो या हक़ीक़त की राह की तलब हो या दुनिया का माल हासिल करना मक़सूद हो या आला दर्जे की मुलाज़मत (हुकूमत की) हासिल करना हो या दुश्मन को दफ़अ करना हो या दोस्त से मुलाक़ात की तमन्ना हो या इसके अलावा कोई सी भी मुराद रखता हो तो आधी रात के वक़्त वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ बजा लाए शब जुमा हो तो बेहतर है और मस्जिद में या ख़िलवत की जगह इस अमल को करना चाहिए। नमाज़ के बाद सर को नंगा करके हाथ उठाकर दुआ करके सौ बार या वहाब कहे। इसके बाद हक़ तआला से अपनी हाजत तलब करे। इस अमल को लगातार तीन रात करे इन्शा अल्लाह मक़सद पूरा होगा (तन्वीर) अमल दावत या वहाब शमा अव्वल (183) पर भी मरक़ूम है। हिम्मत व इस्तक़लाल की ज़रूरत है।

المتين ٥٦٠	ذوالقوة ٦٦٣	هو الرزاق ٥٦٦	ان الله ٥٥٢
ان الله ٥٦٥	هو الرزاق ٥٥٣	ذوالقوة ٥٥٩	المتين ٥٦٤
ذوالقوة ٥٥٤	المتين ٥٦٨	ان الله ٥٦١	هو الرزاق ٥٥٨
هو الرزاق ٥٦٢	ان الله ٥٥٧	المتين ٥٥٥	ذوالقوة ٥٦٧

या रज़्ज़ाक़ु- रिज़्क़ ज़िन्दगी की ज़रूरतों का नाम है और इस्म या रज़्ज़ाक़ के पढ़ने वाले को ग़ैब के ख़ज़ाने से रोज़ी मिलती है जो कोई सुबह सादिक़ होते ही फ़ज्र की नमाज़ के पहले अपने मकान के चारों कोनों पर खड़े होकर दस बार इस्म या रज़्ज़ाक़ तिलावत करे कभी उसके घर में तंगी व ग़रीबी न हो। तरीक़ा इसका यह है कि घर में क़िब्ला रुख़ खड़ा होकर अपने दाएं हाथ के कोने से शुरु करे और इस कोने से दूसरे कोने तक इस तरह जाए कि क़िब्ले से रुख़ न फेरे और हर कोने में क़िब्ला रुख़ ही खड़े होकर यह इस्म पढ़े बहुत मुजर्रब है (ज़फ़र जलील) शमा अव्वल में (129) पर भी इसका अमल दर्ज है। जनाब इमाम अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं जो आदमी रोज़ाना तीन सौ आठ बार नमाज़ फ़ज्र के बाद पढ़ लिया करे तो रिज़्क़ कुशादा

हो और शेख बोनी रहिमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं जो आधी शाअबान में कसरत से पढ़े और अंगूठी में कन्दा करके पहन ले। परवरदिगार आलम साल भर का रिज़्क़ अता फ़रमाए। (तन्वीर)

या फ़त्ताहु- यह इस्म मुबारक हर मुश्किल काम जिसका करना दुश्वार हो इस इस्म पाक की बरकत से आसानी से हल हो जाता है। ज़फ़र जलील में है जो फ़ज्र की नमाज़ के बाद दोनों हाथ सीने पर रखकर 70 बार या फ़त्ताहु का विर्द करे उसके आइनए दिल से ज़ंग मैल दूर हो और नूर व सफ़ाई की अरज़ानी हो (12) यह इस्म पाक इम्तिहान देने वालों और वकीलों, मुनाजिरों, नई नई ईजाद करने वालों, मुफ़क्किरों, मुबल्लिग़ों, मुक़र्रिरों के लिए शमा शबिस्तान का काम देता है। शेख बोनी रहिमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं यह इस्म सालिकों के लिए मुनासिब है जो कसरत से इसका विर्द करते हैं तो परवरदिगार अस्बाब फ़तह न नुसरत कुशादा फ़रमा दे और जो आदमी दो रकअत नमाज़ अदा करे पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह यासीन शरीफ़ दूसरी में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह तबारकल्लज़ी पढ़े। नमाज़ के बाद 489 बार या फ़त्ताहु पढ़े। तमाम मुश्किलें आसान हों हर हाजत पूरी होवे। ग़ैबी मदद शामिल हो (तन्वीर) इस इस्म का पढ़ने वाला तसख़ीर और मुक़दमों में कामयाबी के लिए नक़्श मुहीतुल इसरार शरीफ़ सामने रखे और निगाह उस पर रहे आंख में तसख़ीर पैदा हो।

या आलिमु या अलीमु- इमाम हुमाम अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं अगर कोई अपने दिल में इस इस्म की कसरत करे तो परवरदिगार अपने ख़ज़ानए इल्म से सरफ़राज़ फ़रमाए। *(तन्वीर)*

यह इस्म पाक इस्तिख़ारे और इसरारे मुख़फ़ी के इज़हार के लिए मख़सूस है अगर यह जानना चाहे कि इस मुक़दमे का अंजाम क्या होगा? लड़ाई में किसकी जीत होगी? तिजारत में नफ़ा होगा या नुक़्सान शिर्कत मुफ़ीद होगी सफ़र अच्छा होगा? इस तरह के दीगर उमूर मख़फ़ी जो वक़्त से पहले मालूम करना चाहते हों तो तीन रात जुमा आधी

रात के बाद वुज़ु करके दो रकअत नमाज़ अदा करे और नमाज़ के बाद एक सौ पचास बार इस इस्म को पढ़े। इसके बाद बिस्तर ख्वाब पर जाए और दरूद में मशग़ूल रहे यहां तक कि सो जाए तो इन्शा अल्लाह ख्वाब में बता दिया जाएगा और जो कुछ मालूम होगा उसमें बिना किसी वली कामिल की दुआ के वह तबदीली न होगी यानि जो मालूम होगा वैसा ही ज़हूर में आएगा। *(तन्वीर)*

इस्तिख़ारे के बारे में ख़ुसूसी हिदायत: अगर इस्तिख़ारे से किसी अज़ीम नुक़्सान की ख़बर मिले तो परेशान न हो कि वह होकर रहेगा मगर कुछ अमल ऐसे भी है जिनके करने से कज़ाए मुबरम टल सकती है। दुआ जामिउल मतलूब व दाफ़ेउल कुरूब और अमल तसख़ीर व उक़दतुल मुहब्बत जो इब्तिदाए किताब में मरक़ूम है इसके लिए अक्सीर का हुक्म रखती है। अक्सर बुज़ुर्गाने दीन असमाए हुसना के विर्द को भी मुजर्रब फ़रमाते हैं अगर इस इस्म मुबारक को चार सौ पचास बार और पांच सौ बार दरूद शरीफ़ पढ़े तो हर मुश्किल आसान हो। *(तन्वीर)*

- अमल या अमिलु शमा अव्वल (122) पर दर्ज है और भी कई अमल मरक़ूम हैं।

या क़ाबिज़ु- अगर दुश्मन क़वी हो या जान व माल का ख़तरा हो इस इस्म को तीन रात लगातार ब नियत आवारगी दुश्मन पढ़े। दुश्मन मक़हूर हो और मक़्सद हासिल हो। यह इस्म वह है कि इसकी जकात से फ़रिश्ता मौत, रूह क़ब्ज़ करता है अगर कोई आदमी इसका विर्द करे तो उसकी मुश्किलें आसान हों और कुव्वत व हैबत ज़्यादा हो इस इस्म का नक़्श हैज़ के खून व बवासीर के ख़ून को रोकने के लिए अक्सीर है (तन्वीर) यह नक़्श शमा हिस्सा अव्वल (35) पर दर्ज है। जो आदमी पैसे के लेन देन के वक़्त यह इस्म पढ़े कभी नुक़्सान न हो।

या बासितु- इमाम आज़म रहमतुल्लाह अलैहि इर्शाद फ़रमाते हैं अगर सुबह के वक़्त दस बार हाथ फैलाकर या बासितु कहे और हाथ चेहरे

पर मल ले तो हक़ तआला किसी का मोहताज न करे। रिज़्क़ कुशादा हो ग़म व दुख दूर हो तंग दस्त और क़हत का शिकार न हो (तन्वीर) शेख़ बोनी रहिमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं अगर तालिबे हक़ सादिक़ इस इस्म को इस तरह पढ़े कि अपने नफ़्स को शहवत से जिस्म को हराम से, ज़बान को कलामे बद से, नज़र को मुहर्रमात से, कान को ग़ीबत से हाथ को ममनूआत से, दिल को गुनाहों से, अक़्ल को ख़्वाहिश से, रूह को करामत की तरफ़ इलतिफ़ात करने से और सर को ग़ैर की जानिब ख़मीदा होने से रोके तो कामिल हो जाए। तसख़ीर के लिए इस्म या बासितु या वदूदु का विर्द करे। रिज़्क़ की कुशादगी के लिए अमल या बासितु शमा अव्वल (132) पर दर्ज है। आमिलीन फ़रमाते हैं कि इस्म या वदूदु या बासितु के आदाद में अपने नाम के आदाद शामिल करके इस तरह के नक़्श बनाए कि اللہ لطیف بعبادہ یرزق من یشاء का मुरब्बअ हिसार किए हो तो उसको पहनने या ग़ल्ला में रखने और दुकान पर लगाने से ऐसी बरकत हो कि हैरान रह जाए (मगर अल्लाह के नाम पर रोज़ाना की आमदनी से कुछ निकालना ज़रूरी है)

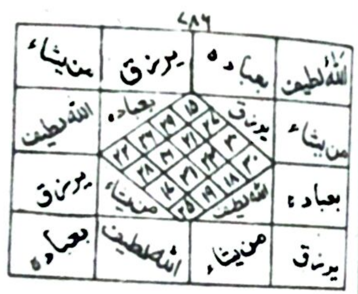

या ख़ाफ़िज़ु- यह इस्म पाक दुश्मनों की शक़ावत और दुश्मनी से महफ़ूज़ व मामून रहने के लिए ख़ास है। शेख़ बुज़ुर्ग फ़रमाते है जो आदमी हैवानी फ़ज़ाइल से अपने नफ़्स को पाक करके इस इस्म को पढ़े उस पर इसरार मुनकशिफ़ हो जाए और इस इस्म का आमिल जिस हाकिम व ज़ालिम के सामने जाए हाकिम इस इस्म की हैबत से ज़लील व ज़ईफ़ हो । *(तन्वीर)*

या शफ़िउ - जो आदमी तीन रोज़े रखे और चौथे दिन अगर चौदहवीं रात हो तो ज़्यादा बेहतर है। 70 हज़ार बार पढ़े दुश्मन पर फ़तह

हो और लोगों में बर गुज़ीदा और मालदार हो। (ज़फ़र जलील) अगर इस इस्म या ख़ाफ़िज़ु या राफ़िउ के आदाद में अपने नाम के आदाद शामिल करके नक़्श रेशमी कपड़े या चांदी पर कन्दा करा के अपनी टोपी के अन्दर सी ले तो कमज़ोरी व ग़म दूर हो। तहसील इल्म में आसानी हो इम्तिहान में इम्तियाज़ी नम्बर हासिल हों।

या मुज़िल्लु - शेख़ जलालुद्दीन महमूद तबरेज़ी फ़रमाते हैं अगर दुश्मन क़वी हो जाबिर व ज़ालिम हो जिससे जान का डर हो तो वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ अदा करे। नमाज़ के बाद मस्जिद में 77 बार यह इस्म रोते गिड़गिड़ाते हुए पढ़े। हक़ तआला अमान में रखे दुश्मन ज़लील हो। (तन्वीर) यह इस्म तसख़ीर उतारिद के लिए है शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी फ़रमाते हैं कि अगर तसख़ीर उतारिद की तमन्ना है तो साठ दिन की ख़िलवत अख़्तियार करे और दस हज़ार बार रोज़ाना يَامُذِلَّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ بِقَهْرِ عَزِيزِ سُلْطَانِهِ يَامُذِلُّ की तिलावत करे और इन दिनों में दूसरा कोई वज़ीफ़ा या अमल कभी भी न पढ़े। बेद इंजीर से चौकी तीन पाए की तैयार करे और हर पाए पर यह इस्म तहरीर करे और चौकी के ऊपर इस्म या अल्लाह तहरीर करे और चौकी के नीचे धूनी रोशन करे और ख़ासुल ख़ास ज़रूरत के अलावा बाहर न आए न किसी को अन्दर आने दे आख़िर दावत मलिक उतारिद मर्द पीर की सूरत में हाज़िर होगा और मुबारक ख़ुशी के साथ इताअत व तसख़ीर क़ुबूल करेगा। इसके बाद आमिल को अख़्तियार है कि जिस वक़्त चाहे मलिक उतारिद के बतलाए हुए क़ायदे के मुताबिक़ इससे मुलाक़ात करे। *(तन्वीर)*

इससे आमिल में बहुत सी ख़ूबियां पैदा होंगी। ज़बान से इल्म व हुनर की बातें अदा हों जिनको सुनकर लोग ताज्जुब करें। हक़ सुबहानहु तआला अज़ीज़ व मोहतरम गर दाने ज़िल्लत व ख़्वारी दूर और आमिल के एक इशारे पर ज़लील अज़ीज़ और अज़ीज़ ज़लील हो फ़क़ीर बादशाही करे और बादशाह फ़क़ीर हो जाए। *(तन्वीर)*

या समीउ - इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते है कि इस्म का पढ़ने वाला मुस्तजा बुद दावात हो जाता है अहले तहक़ीक़ लिखते हैं कि इसके आमिल को चाहिए कि फ़ुहुश ग़ीबत से अपनी ज़बान व कान को बचाए। मुहम्मद अहमद तमीमी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं अगर रोज़ाना फ़ज्र की नमाज़ के बाद सात बार فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ पढ़े तो सारा दिन मुहिम्मात से किफ़ायत फ़रमाए और मुश्किलात से बचाए रखे (तन्वीर) अगर इसका नक़्श लिखकर अपनी टोपी में रखे। दर्जे बुलन्द हों अज़ीज़ ख़लाइक़ हो। (मजमूआ आमाल) शमा अव्वल (140) दूसरा अमल दुशमन व बद गो बद ख़्वाह को मुसख़्ख़र करने का शमा अव्वल (163) पर दर्ज है अगर इस इस्म के नक़्श को शर्फ़ क़मर में कन्दा कराके अगूंठी में पहने और इस इस्म को ब कसरत पढ़े तो मक़बूलु ल क़ौल और मुसतजाबुद्दावात हो जाए। फ़तूहात बे शुमार हासिल हों (तन्वीर) इसका नक़्श धोकर बवासीर वाले को पिलाए शिफ़ा हो। अगर आठ दिन चार सौ अड़सठ बार जिस नीयत से पढ़े वह मुराद हासिल हो। *(तन्वीर)*

या बसीरु- अहले तहक़ीक़ फ़रमाते हैं इस इस्म का विर्द करे और अपनी आंखों को लोगों के ऐबों और शरअ के ख़िलाफ़ कामों से रोके तो अल्लाह तआला उसे बीनाई ज़ाहिर व बातिन इनायत फ़रमाए। इस इस्म मुबारक की बरकत से अम्बिया अलैहिस्सलाम को मेराज हासिल हुई और औलिया मुक़र्रब बारगाह इलाही हुए। अगर जुमा के दिन सुन्नत और फ़र्ज़ के बीच व मकाशफ़ात व इसरार असमाए इलाही से मुशर्रफ़ हो (तन्वीर) ज़फ़र जलील में रोज़ पजंशम्बा लिखता है बेहतर है कि पंज शम्बा व जुमे के दिन दोनों दिन नमाज़ फ़ज्र की सुन्नत व फ़र्ज़ के बीच पढ़े या अस्र की सुन्नतें पढ़कर इस इस्म की तिलावत करे फिर जमाअत से फ़र्ज़ अदा करे। *(इक़बाल अहमद)*

या हाकिमु, या हकिमु या हकीमु - इस इस्म की सिफ़ात अजीब हैं कोई मुहिम पेश आए क़ैद व मजबूरी, क़र्ज़, गुरबत, तंगी मआीशत

व दर्वेशी या इसके जैसी और चीज़ें तो इस इस्म का विर्द करे। शेख बोनी अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया है कि जो कोई इसे बार बार पढ़ता है उसपर उमूर और मवाहिबे इलाहियह खोल दिए जाते हैं और अगर कोई आदमी इस इस्म के आदाद के मुवाफ़िक़ रोज़ाना बाद नमाज़ के (हर नमाज़) तिलावत करे तो परवरदिगार आलम फ़हम व हिक्मत अता फ़रमाए और इस मुश्किल को सुलझाने में दुश्वारी न हो। (तन्वीर) इस इस्म का आमिल जिस मश्विरे में शरीक हो बेहतर और मुफ़ीद राय दे और उसकी राय इल्म व हिक्मत फ़हम व दानिश पर मबनी हो जिस मुश्किल का हल बड़े बड़े मुफ़क्किर और अहले दानिश न निकाल सके हों। इसका हल इसका आमिल तलाश करेगा। इसलिए हकीम व डाक्टर और वकीलों के लिए इस इस्म आज़म की तिलावत मुफ़ीद है।

या आदिलु या अदलु : जो मर्द मोमिन क़ब्र व हश्र की हौलनाकियों से डरता हो और यह डर हो कि मेरे मातहत और महकूम अफ़राद को मेरी ज़ात से कोई अज़िय्यत या दुख पहुंच गया तो क़ब्र व क़ियामत में इसकी सज़ा क्या होगी क्योंकि इर्शाद बारी है कि मैं अपने रहम व करम से अपने क़सूर तो माफ़ फ़रमा दूंगा मगर मेरे बन्दे के हक़ूक़ किसी पर हों तो वे मैं माफ़ न करूंगा। वह बन्दा खुद माफ़ कर दे तो उसे अख़्तियार है लिहाजा आख़िरत की बाज़ पुर्स से डरने वाले अफ़सरान, मजिस्ट्रेट, जज और कारख़ानों के मैनेजर व मालिकान वग़ैरह को इस इस्म का विर्द करना चाहिए या आदिल के अदद 105 इन आदाद को 4 से और या अदलु के 104 आदाद को 3 से ज़रब देकर पढ़े तो अल्लाह तआला अपनी सिफ़त अदल का असर उस पर डाल देगा। -12-

अगर हर जुमा को 21 रोटी के टुकड़ों पर तहरीर करके खाए तो नूरे ईमान ज़्यादा हो। ख़ामियां व बुराइयां दूर हों। अगर सुबह की नमाज़ के बाद किसी से बात किए बिना पांच हज़ार तीन सौ सोलह बार पढ़े तो परवरदिगार आलम सारे ज़ालिमों को दफ़अ फ़रमाए और अम्न

व सुकून हासिल और नमाज़ से पहले चार बार अल अदलु कहे तो दुआ मुस्तजाब हो।

जो आदमी जुमा के दिन रोटी के 20 टुकड़ों पर लिखकर खाए तो अल्लाह तआला उसके लिए ख़ल्क़ को मुसख़्ख़र कर दे।

(ज़फ़र जलील, तन्वीर)

या लतीफ़ु- इस इस्म मुबारक की बरकत से हक़ तआला तालिबान को इल्म इनायत फ़रमाता है और आबिदीन व मोमिनीन के आमाल को इसके सदक़े में मलाइका आसमान पर ले जाते हैं। जो आदमी इस को बार बार पढ़े उसे चाहिए कि लोगों से लुत्फ़ व शफ़क़्क़त से पेश आए ताकि हक़ तआला ज़ाकिर को मज़हर लुत्फ़ बना दे (तन्वीर) जो मुलाज़मत या रोज़गार से महरूम हो या फ़िक्र व फ़ाक़ा का शिकार हो या कम आमदनी की वजह से परेशान हो या ग़रीबी की वजह से कोई हमदर्द नहीं या बीमार है और ग़म ख़्वार नहीं या लड़कियां हैं और शादी नहीं होती या ज़्यादा औलाद है तो वह वुज़ू करे और दो रकअत नमाज़ अदा करे और इस इस्म को हुसूले मक़सद के लिए सौ बार पढ़े। अल्लाह तआला उसके काम को ठीक ठीक अंजाम दे देगा (ज़फ़र जलील) अमल या लतीफ़ु मुजर्रब वुसअते रिज़्क़ का शमा अव्वल (137) पर देखिए।

या ख़बीरु - इस इस्म का आमिल आलमे ख़्वाब व बेदारी में पोशीदा हालात से बा ख़बर हो जाता है (तन्वीर) يَاعَلِيمُ عَلِّمْنِي يَارَشِيْدُ اَرْشِدْنِيْ يَاخَبِيْرُ اَخْبِرْنِيْ यानी दो रकअत नमाज़ अदा करे और इसका सवाब सय्यिदिना ग़ौस आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रूह पाक को बख़्शे और बाद नमाज़ 121 बार यह अज़ीमत पढ़े- जो मालूम करना हो आलमे ख़्वाब या नीम ख़्वाब या नीम बेदारी या जागते में देख ले (मजमूआ आमाल) जो कोई अपने नफ़स के ताबेअ हो चुका हो और एहकाम इलाही से ग़ाफ़िल होकर इस इस्म को कसरत से पढ़े सारे मक़सद हल हो जाएंगे। *(ज़फ़र जलील)*

या हलीमु - अहले तहक़ीक़ ने फ़रमाया है कि इस इस्म की बरकत से मख़लूक़ का खाना पानी मुरत्तब किया गया है और इसी की बरकत से आलम क़ायम है अगर कोई आदमी 883 बार रोज़ाना तिलावत करे तो ख़लक़त मेहरबान हो (तन्वीर) इस इस्म को काग़ज़ पर लिखकर पानी से धोकर खेत में छिड़के खेती में बरकत हो और खेती आफ़ात अर्ज़ी से और समावी से महफ़ूज़ रहेगी (ज़फ़र जलील) हाजी नासिरुद्दीन और शेख़ अब्दुल मजीद मग़रिबी रज़ियल्लाहु अन्हुमा मुत्तफ़िक़ हैं कि बीमार के सिरहाने एक बार सूरह फ़ातिहा और दस बार या हलीमु पढ़े तो मर्ज की सख़्ती में फ़ौरन कमी हो और मरीज़ ठीक हो जाएगा।

(तन्वीर)

या अज़ीमु - शेख़ मग़रिब अलैहिर्रहिमहु इर्शाद फ़रमाते हैं इस इस्म का ज़ाकिर जिसकी तरफ़ निगाह उठा दे वह बे साख़्ता ताज़ीम के वास्ते खड़ा हो जाता है (तन्वीर) जिस आदमी को लोग हिक़ारत की नज़र से देखते हैं ग़रीबी की वजह से तंगीए रिज़्क़ व बे रोज़गारी या जो आदमी अपने इल्म और ख़ानदानी इफ़तिख़ार के मुताबिक़ ओहदा या मुलाज़िमत हासिल करने में नाकाम रहे वह शर्फ़े आफ़ताब नक़्श मुरब्बअ चांदी पर कन्दा करा कर अंगुश्तरी में रखें और इस इस्म का विर्द करे मुअज़्ज़म व मुकर्रम हो।

या शकूरु - अहले हक़ीक़त फ़रमाते हैं इस इस्म का ज़ाकिर मुस्तजाबुद दावात हो जाए और परवरदिगारे आलम अपने इनामों के लिए मख़सूस फ़रमा ले और मक़ाम कश्फ़ हासिल हो। दुनिया व आख़िरत की नेकियां और भलाइयां हासिल हों (तन्वीर) अगर आंखों की रोशनी कम हो जाए या बसारत ख़त्म हो जाए इस इस्म को 41 बार पढ़कर दोनों हाथों में पानी लेकर दम करे और मुंह पर डाले और आंखों पर मले। मौला तआला आंखों की रोशनी वापस फ़रमा दे। *(ज़फ़र जलील)*

या अली- जो आदमी इस इस्म की तिलावत करे अगर ज़लील हो तो अज़ीज़ और अदना हो तो आला मर्तबे पर पहुंचे। फ़क़ीर हो तो

मालदार हो जाए ग़रीबुल वतन हो तो वतन की वापसी का सामना मुहय्या हो जाए दुश्मन पर तसल्लुत हो। मलूक व सलातीन में तक़र्रुब हासिल हो। अगर इस इस्म का नक़्श अंगुश्तरी में पहने और इसका विर्द करे तो ऐसे अजीब अजीब असरात देखे कि खुद हैरान रह जाए अगर हाकिम या बादशाह है तो लश्कर व रिआया इताअत में सर झुका दे और अगर वह अंगुश्तरी लड़की को पहनायी जाए जिसकी शादी न होती हो बरकत की वजह से इस इस्म आज़म के हो जाए (तन्वीर) बेहतर है कि अली व अज़ीम को मिलाकर पढ़े या इस्म अली व अज़ीम के पढ़ने के बाद आयतल कुर्सी शरीफ़ को तीन बार पढ़ें।

या हाफ़िज़ु या हफ़ीज़ु : इस इस्म का आमिल हाकिम के ख़ौफ़, ज़ालिम के ज़ुल्म, शैतानों के शर से महफ़ूज़ रहता है। चरिन्द व परिन्द, दरिन्दों हशरातुल अर्ज़ से महफ़ूज़ रहता है जंगलों का काम करने वालों, फौजी जवानों, जहाजरानों को इसका विर्द ज़रूर करना चाहिए। साथ ही बच्चों को ख़लल आसेब व बीमारी से बचाने के लिए इसका नक़्श देना चाहिए। इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तादाद इस्म के मुताबिक़ काग़ज पर लिखकर बाज़ू पर बांधे तो वसवसा शैतानी व ख़्यालात फ़ासिदा ख़ौफ़ सलातीन सांप बिच्छू के डसने से महफ़ूज़ रहे। ला इलाज मरीज़ के बांधे शिफ़ायाब हो। *(तन्वीर)*

या मुक़ीतु – यह नफ़स को मुतीअ और रूह को मुसख़्ख़र करने में यकता है यानि जो आदमी नफ़स को ताबेअ कर लेता है वह पानी पर ज़मीन के जैसा चलता और फ़िज़ाए बसीत में उड़ता है और रूह मुसख़्ख़र हो जाती है तो जिस्म रूह की तरह लतीफ़ हो जाता है। इसके लिए क़ुर्ब व दूरी सब बराबर हो जाती है। रूह की तरह जिस्म आसमानों की सैर करता है और यह इस्म बे सहारों का सहारा है अहले तहक़ीक़ ने फ़रमाया है कि इससे इस्म के दरयाए मारफ़त में डूब कर पढ़े और अपना ज़्यादा वक़्त ख़िदमते ख़ल्क़ में सर्फ़ करे और हर दोस्त व दुश्मन पर शफ़क़्क़त व जोदो सख़ा करने में दरीग़ न करे

ताकि हक़ तआला नफ़स को मुतीअ व रूह को मुसख़्ख़र फ़रमा दे। *(तन्वीर)*

या हसीबु – इस इस्म की बरकत से किरामन कातिबीन और मलाइका मुक़र्रबीन बन्दों के आमाल पर मुत्तला होते हैं। शर्फ़ व ख़ौफ़ दुश्मन और बद मिज़ाज बदकार औरत इसी तरह बीवी अपने बदकार अय्याश मर्द के लिए मुलाज़िम अपने ज़ालिम व जाबिर हाकिम जिससे हर वक़्त इज़्ज़त व आबरू का ख़तरा हो तो चहार शम्बा या पंजशम्बा को रोज़ा रखे और हर नमाज़ के बाद 77 बार कहे इन्शा अल्लाह तआला कुछ ही बार अमल करने से आदाते बद, अफ़आल क़बीहा से नजात हासिल हो (तन्वीर) अगर आदाद इस्म के मुताबिक़ बिना रोज़ा रखे विर्द करे तो बरकत से हाजात पूरी हों माल व औलाद ज़मीनी व आसमानी आफ़तों से महफ़ूज़ रहें। शरीर, कुन्द ज़ेहन काम और पढ़ने से भागने ख़ौफ़ व डर से रोने या नज़र से बीमार होने वाले बच्चों को मिट्टी के प्याले या आबख़ोरे पर या हसीबु व या मुक़ीतु सात बार पढ़कर दम करे। इसके बाद पानी इसमें से खुद पिए और बचा हुआ पानी बच्चे को पिलाए। *(ज़फ़र जलील)*

या जलीलु या ज़ुलजलालि वल इकराम : ये दोनों इस्म ख़्वास में यकता हैं हज़रत इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं (इनमें से कोई एक) इस्म अगर सात दिन तक रोटी के एक टुकड़े पर लिखकर खुद खाए बाक़ी रोटी सदक़ा कर दे तो तमाम मख़लूक़ मुसख़्ख़र हो और ब इकराम पेश आए। इस इस्म का पढ़ने वाला खुदा और बन्द गाने खुदा के सामने मुअज़्ज़िज़ व मुकर्रम हो और जमीअ मक़ासिद व मुरादात हासिल हो। अगर सफ़ेद काग़ज़ पर लिखकर मकान में रखे बरकत हो लोग उसकी तरफ़ रुजू करें (ज़फ़र जलील) हामला औरत बांधे तो हमल इसक़ात से महफ़ूज़ रहे और बच्चा जिन आसेब, उम्मु स्सुबियान के ख़लल से बचा रहे अगर खाने या पीने पर दम करके तरफ़ैन को खिलाएं या पिलाएं तो सुलह हो। सीसा की तख़्ती पर लिखकर मतलूब की सूरत बनाकर उसके मकान में रख

दें नकसीर जारी हो और मिट्टी का पुतला बनाकर लिखकर सुखा कर बुरादा बना के ज़ालिम के घर में डाले बर्बाद हो। (तन्वीर)

या मुक़सितु- यह इस्म क़वी और हेबत वाला है इसके पढ़ने वाले से लोग ख़ौफ़ज़दा रहते हैं बड़े से बड़ा जाबिर व मुफ़सिद उससे आंख मिलाने से गुरेज़ करता है। कि जब तक वह किसी के साथ गैर मुन्सिफ़ाना सुलूक न करे अगर किसी का हक़ किसी ने दाब रखा है अगर शोहर बे इन्साफ़ी से औरत का हक़ ग़सब करता है तो इस इस्म के आदाद के मुताबिक़ पढ़े। अगर चालीस दिन में इसका असर शोहर के फेअल से ज़ाहिर न हो यानि शोहर उसका हक़े ज़ोजियत अदा नहीं करता तो यह न समझना कि इसका असर नहीं हुआ बल्कि अपनी ख़ामी माने कि मुझपर भी शोहर का हक़ बाक़ी है और मैं उसे अदा नहीं कर पाती। यह ख्याल करके हर तक्लीफ़ बर्दाश्त करते हुए शोहर की ख़िदमत करे और इस इस्म का एक चिल्ला और करे इस नीयत से कि अगर मुझ में ख़ामी है तो मेरी और मेरे शोहर की इस्लाह फ़रमादे अपने अदल से (इक़बाल अहमद) अहले तहक़ीक़ ने फ़रमाया है कि जो आदमी इस इस्म का विर्द करे यक़ीन रखे कि अल्लाह आदिल है किसी पर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता। (तन्वीर)

या जामिअु - इस इस्म की बरकत से जमीअ मख़लूक़ात जनाब सुलेमान अलैहिस्सलाम की मुसख़्ख़र थी (तन्वीर) अगर आदमी परेशान हाल हो। रिश्तेदारों व दोस्तों से दूर हो। महबूब की जुदाई में बे क़रार हो तो इतवार के दिन चाश्त के वक़्त ग़ुस्ल करे और दो रकअत नमाज़ अदा करके मुंह आसमान की तरफ़ करे दोनों हाथ फैलाकर दो बार या जामिअु कहे इस तरह कि जब पहली बार पढ़े तो दाएं हाथ की एक उंगली बन्द करे दूसरी पर दूसरी इस तरह दस बार में दसों उंगलियां बन्द कर ले फिर बे शुमार इस इस्म का विर्द करे। इसके बाद हाथ खोलकर मुंह पर फेर ले महबूब हाज़िर हो (ज़फ़र जलील) यह अमल कभी भी ग़ैर औरत या ग़ैर मर्द के लिए न करे। जिससे मंगनी हो

चुकी हो निकाह न हुआ हो सिर्फ़ फ़रार हुई या मेके बैठ जाने वाली के लिए करे इसी तरह वह औरत अपने शोहर के लिए करे जिसका शोहर गायब हो या लड़कर चला गया हो

या करीमु- शेख़ अबुल अब्बास अहमद इब्न अली बोनी अलर्रहमतु फ़रमाते हैं जो आदमी इस इस्म की मदावमत करे तो मुद्दत हयात मुअज़्ज़िज़ व मुकर्रम रहे और मुसतजा बुद्दावात हो जाए। तगंदस्ती व मुफ़लिसी दूर हो दौलत और वुसअत रिज़्क हासिल हो (तन्वीर) इस इस्म की बरकत से इल्म व दौलत इज़्ज़त व शोहरत जो भी हासिल हो वह करीम व सख़ी देकर वापस न ले इस यक़ीन के साथ अमल करे। अगर सोते वक़्त बिस्तर पर लेटने के बाद पढ़े और पढ़ते पढ़ते सो जाए तो रात भर फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करें (जफ़र जलील) पंज गंज क़ादरीया में या करीमु या अल्लाह ज़ुहर की नमाज़ के बाद सौ बार लिखा है।

या रक़ीबु - यह इस्म पाक मुहाफ़िज़त हुस्न व जमाल औलाद, माल व दौलत, कारोबार, खेती आदि के लिए है। यह इस्म मायनों व औसाफ़ में बड़ा वसीअ है। अगर किसी के हुस्न व जमाल औलाद अमवाल इज़्ज़त व माल के हासिद व रक़ीब ज़्यादा हों या किसी की मंगनी हो चुकी हो और जलने वाले बीच में रोक बन जाएं और कशीदगी पैदा करने की कोशिश करें या कशीदगी पैदा कर दी गयी हो तो इस इस्म का विर्द करना चाहिए जो माल व मिलकियत दुश्मन व हसद की वजह से छीन ली गयी हो उसके हुसूल के लिए भी इसका अमल बेहतर है। हज़रत इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु इर्शाद फ़रमाते हैं कि जिस दुश्मन के मुक़ाबले की ताक़त न हो उसके लिए सात हज़ार बार नमाज़ से पहले पढ़ लिया करे (तन्वीर) घर बार खेती वग़ैरह को तन्हा छोड़ते वक़्त दुश्मन के नुक़्सान का ख़तरा हो तो इस इस्म को सात बार पढ़कर जिसकी हिफ़ाज़त मक़सूद हो उसके चारों ओर दम कर दे वापसा तक कोई नुक़सान न पहुंचा सके। (ज़फ़र जलील)

या मुजीबु – इस इस्म की बरकत से हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम के गले पर छुरी कुन्द हो गयी थी (तन्वीर) इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इर्शाद फ़रमाया कि इस इस्म को एक हज़ार बार पढ़ कर जो दुआ मांगी जाए क़ुबूल हो अगर किसी दुआ व अमल के आख़िर में 26 बार या सरीअु या मुजीबु पढ़े तो फ़ौरन ज़हूर हो (तन्वीर) शेख़ शहाबुद्दीन सहर वर्दी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया है कि इस इस्म के नक़्श को अपने पास रखे तो हर बला से बचा रहे अगर कोई सख़्त मुहिम सामने हो या किसी मामले में परेशान हो तो एक मज्लिस में 90 हज़ार बार पढ़े इन्शा अल्लाह हाजत पूरी हो मुजर्रब है। (तन्वीर) शेख़ बोनी अलैहि रहमह ने फ़रमाया है कि अगर किसी हाकिम या बादशाह को मुसख़्ख़र करना हो तो उसकी तस्वीर को ख़िलवत में अपने सामने रखे और इस इस्म के नक़्श को नयी ठीकरी पर लिख कर अपने पास रखे और तिलावत में इस इस्म को पढ़ना शुरु करे मक़्सद हासिल हो। अगर इस का नक़्श चांदी पर कुन्दा कराकर अपने पास रखे दुआ के कुबूल होने की बरकत हासिल हो। *(ज़फ़र जलील)*

या वासिअु – अहले तरीक़त ने फ़रमाया है कि जो आदमी हरीस हो तो उसके लिए यह इस्म नाफ़ेअ है। अगर 137 बार रोज़ विर्द में रखे हक़ तआला अपने अफ़ज़ाल की वारिश फ़रमाए। अगर कोई 1025 बार पढ़े। उलूमर्तबा मन्ज़िलत आली कुलूब तसख़ीर सलातीन व उमरा रफ़अत व जगह व मन्जिलत अहवाल अजीब हालात, ग़रीब व वुसअते रिज़्क़ के मफ़ाद हासिल हों अगर इसके नक़्श को लिखकर किसी मकान या दुकान या ज़ख़ीरा, तिजोरी में रखें तो बरकत हासिल हो (तन्वीर) तसख़ीर के लिए 70 दिन तक रोज़ाना 70 हज़ार बार पढ़े तो मर्तबा आली हो। तमाम मख़लूक़ मुतीअ व मुसख़्ख़र हो। वुसअते रिज़्क़ के लिए 15 बार हर नमाज़ के बाद पढ़े। *(तन्वीर)*

या वदूदु – यह इस्म मुहब्बत के लिए आमिलों में बड़ा मशहूर है अहले तहक़ीक़ फ़रमाते हैं अगर इसका आमिल अपने बेगाने हर मिलने

वाले से अख़्लाक़ व मुहब्बत से पेश आए तो अल्लाह तआला उसे अपना महबूब बना ले (तन्वीर) इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया अगर कोई ख़्वाहिशाते नफ़सानी का शिकार हो शराबी या ज़ानी हो झूठा हो, इस्लाम वालों को ईज़ा पहुंचाने में कोशां रहता हो तो 960 बार इस्म या वदूदु और अव्वल आख़िर 53 बार आयत करीमा اِنَّهٗ هُوَ یُبْدِئُ وَ یُعِیْدُ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ذُوالْعَرْشِ الْمَجِیْدُ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ पढ़े फिर दुआ करे इन्शा अल्लाह नेक इन्सान बन जाएगा। इसी तरह फ़ाहिशा औरतों को सुधारने के लिए भी यह अमल करना चाहिए। *(तन्वीर)*

या माजिदु या मजीदु : जो आदमी साहिबे इज़्ज़त व बुज़ुर्गी होना चाहे इस इस्म का विर्द करे अगर कोई आदमी ज़लील व रुसवा हो या किसी वजह से यह गुमान हो कि ज़लील व रुसवा हो जाएगा जैसे किसी की अमानत रखी थी ख़र्च कर चुका या मालदार था अब मुफ़लिस है और लड़के या लड़की की शादी करना है जिसमें पर्दा फ़ाश होने का अंदेशा है या मुलाज़िमत छूट चुकी है या माअज़ूल किए जाने का अन्देशा है इस इस्म का विर्द करे। मौला तआला इस की बरकत से ऐसा ज़रिया अता फ़रमा देगा कि ज़िल्लत व रुसवाई से महफ़ूज़ रहे (तन्वीर) अमानत में ख़्यानत, रिश्वत या मज़दूर व मुलाज़िम का पैसा कोई इल्ज़ाम रख कर काटना या किसी की भूल से फ़ायदा उठाना उसकी रक़म मार लेना हराम है। ऐसा करने वाला अपने पिछले कामों से तौबा करे और आगे के लिए अहद करे फिर अमल करे। शेख़ अबुल अब्बास फ़रमाते हैं यह अमल उमरा व बादशाहों के हस्बे हाल है। *(तन्वीर)*

या बाअिसु – इस इस्म को बराए सफ़ाए बातिन व दफ़अ वसवसा शैतान व तज़किया नफ़्स पढ़ना चाहिए। अगर किसी आदमी में शहवत ग़फ़लत व हिर्स बुख़्ल बहुत हो तो इस इस्म को बवक़्ते ख़्वाब लेट कर सीने पर हाथ रखकर पांच सौ बार पढ़ना चाहिए (तन्वीर) शेख़

इस्म को मायूस मरीज़ों को कसरत से पढ़ने को बताते हैं मौला तआला अपनी रहमत से शिफ़ा देता है चाहिए कि बाद शिफ़ा इबादते इलाही से ग़ाफ़िल न हो।

या अव्वलु- शेख़ मग़रिब फ़रमाते है कि अगर कोई आदमी लड़के का तालिब हो या ख़ज़ाना हासिल करना चाहता हो या ग़ैबी फ़तूहात का तालिब हो तो चाहिए कि चालीस जुमा जुमे की नमाज़ के बाद मदावमत करे मक़्सद हासिल हो। शेख़ बोनी फ़रमाते हैं कि इस इस्म का ज़ाकिर अपने कुल मक़ासिद में साबिक़ रहेगा और अगर इस्म को या आख़िर के साथ ज़िक्र करे तो मक़ाम कश्फ़ हासिल हो।

(तन्वीर)

या आख़िरु- शेख बोनी रहिमतुल्लाह ने फ़रमाया है कि जो आदमी इस नाम की किरअत करे उसे कुव्वत व नुसरत बे अन्दाज़ हासिल हो और जो भी दुश्मनी करे हलाक हो मुक़ाबला करे मग़लूब हो जो आदमी इस इस्म के और दुश्मन के नाम के आदाद शामिल करके नक़्श बनाए और हफ़्ते की पहली साअत में लोहे पर कुन्दा करे और इसी तादाद के मुताबिक़ पढ़े और इस नक़्श को आग में दाब दे दुश्मन हलाक हो।

(तनवीर)

या ज़ाहिरु या बातिनु : ये दोनों असमाए बारी तआला इस्लाह व नूरानियत के लिए ख़ास हैं ये असमा ज़ाहिर व बातिन की इस्लाह फ़रमाकर ज़ाकिर में रूहानियत पैदा हो जाती है कश्फ़े क़ुबूर और इस्तिख़ारे के लिए आमिलीन में मशहूर है शेख मग़रिब रहिमतुल्लाह फ़रमाते हैं कि चाश्त की नमाज़ के बाद पांच सौ बार पढ़े तो हक़ तआला दिल को ज़ाहिर व बातिन में नूरानी कर दे। ख्वाबे ग़फ़लत से बेदारी इनायत फ़रमाए और तारीकी से दिल को पाक साफ़ कर दे।

(तन्वीर)

जिसके दोस्तों साथियों या अहले मामला में से जो भी ऐसा हो कि दिल में कुछ ज़बान पर कुछ ऐसे दोस्तों से काफ़ी नुक़्सान पहुंच जाता

है लिहाज़ा इन असमा का ज़िक्र करे तो अल्लाह तआला इसकी बरकत से उसके दोस्तों की भी इस्लाह फ़रमा देता है और इस इस्म के ज़ाकिर के दोस्त अहबाब या ग़ैर सब इसी तरह पेश आएं जो उनके दिल में हो।

या वालो- यह इस्म पाक दस्तकार, मेहनती लोगों के लिए ख़ास है कि इस इस्म की बरकत से कम वक़्त में ज़्यादा काम हो जाता है इस इस्म का आमिल अगर ठेकेदार हो या मज़दूर वह कभी ख़ाली न रहे। उसके काम की बड़ी क़दर हो जो मज़दूरी मांगे मिले। मालिक उससे काम कराने पर हर वक़्त तैयार रहें। अगर इस इस्म को बर्तन पर लिखकर पानी से धोकर मकान या दुकान के कोनों और छत पर छिड़के तो चोरी, बिजली, आंधी तूफ़ान बारिश सीलाब ज़लाज़ला व जुमला आफ़ात से बचा रहे।

(तन्वीर)

या मुताआली- अहले तहक़ीक़ ने फ़रमाया है कि इस इस्म को इन्किसारी से पढ़ना चाहिए और ख़ल्क़ ख़ुदा में ख़ुद को हक़ीर समझे ताकि हक़ तआला मर्तबा बुलन्द फ़रमाए और ग़ैब से हर काम अंजाम फ़रमाए। अगर कोई औरत बाद फ़राग़त हैज़ व निफ़ास इस इस्म की तिलावत करे तो जुमला आफ़ात से महफ़ूज़ रहे। शेख बोनी रहमतुल्लाह फ़रमाते है कि इस इस्म का ज़िक्र करके किसी बादशाह के पास आए तो वह इज़्ज़त से पेश आए जो हाजत हो पूरी करे।

(तन्वीर)

या बर्रु- हज़रत इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं अगर नाबालिग़ बच्चे को यह इस्म याद करा दे और वह इसे पढ़ता रहे यहां तक कि जवान हो जाए तो तमाम उम्र आफ़ते रोज़गार से बचा रहे। शेख़ मग़रिब फ़रमाते हैं इस इस्म का ज़ाकिर जिस चीज़ का तालिब हो हासिल हो। शेख अबुल अब्बास अहमद बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं इस इस्म का ज़ाकिर नग़माते इलाहियह की नेमत पाए।

(तन्वीर)

व ग़िना के लिए इम्तियाज़ी शान रखते हैं या वाजिब हुसूल कश्फ़ के लिए आमिलीन का मामूल रहा है जो आदमी हलाल ज़रिया मआश की तलाश में हो या ताजिर जिसकी तिजारत हसबे मन्शा न चलती हो या ज़्यादा औलाद हो खाने पीने का इन्तिज़ाम कम हो या बिल्कुल न हो उसके लिए हराम ज़रिया करने से बेहतर होगा कि इनमें से कोई एक इस्म मुन्तख़ब करके विर्द करे या ऐसी दुआएं जिनमें असमा भी शामिल हों अमल में लाएं अल्लाह तआला ग़ैब से पाक रिज़्क़ व हलाल रोज़ी अता फ़रमाए और वह बे नियाज़ इस क़दर दे कि खर्च से बच रहे और इन असमा को अपने नाम के आदाद के मुताबिक़ विर्द में रखे।

या अ-ह-दु या वाहिदु या वहीदु : इन असमा में किसी इस्म के ज़िक्र से ज़ाकिर का दिल ऐसा मुतमइन और बे ख़ौफ़ हो जाता है कि बड़े से बड़े ख़तरे और लर्ज़ा देने वाले वाक़िए हरांसा क़र देने वाले माहौल में भी फ़िक्र क़रीब नहीं आती यहां तक कि फांसी के तख़्ते पर भी उसके क़ल्बी इत्मीनान व सुकून का वह नूरानी जलवा होता है कि जिसे देखकर नमरूद व शददादे दौरां भी कांप कर अपने आपको उसके क़दमों में डाल देते हैं गोया उस वाहिद यकता की वहदानियत के जलवे इस इस्म के ज़ाकिर को अपनी आग़ोश में ले लेते हैं इसलिए आमिलीन और अहले तहक़ीक़ इस इस्म को शाहों व ज़िम्मेदारों और मुमलिकत के बड़ों, सैनिक अफ़सरों के लिए तोहफ़ाए क़ुदरत बताते हैं। अगर कोई सख़्त मुहिम या बीमारी हो ख़तरनाक रास्तों में जाना हो तो एक हज़ार बार पढ़ने से मुहिम आसान, बीमारी से शिफ़ा हो। (तन्वीर)

या स-म-दु - इस इस्म का ज़ाकिर अल्लाह वालों में होता है। इस इस्म का पढ़ने वाला भूखा नहीं रहता या भूख प्यास की सख़्ती से बचा रहता है अक्सर आमिलीन व कामिलीन ने या अ-ह-दु या स-म-दु को इस्मे आज़म बताया है। शेख़ मग़रिब रहिमतुल्लाह फ़रमाते हैं इस्म या स-म-दु एक हज़ार बार पढ़े तो रिज़्क़ में वुसअत

और कारोबार में खैरो बरकत हो (तन्वीर) किताब मिफ़ताहुल जिनां में लिखा है कि अगर जुमे की रात में आधी रात को वुज़ू करके एक हज़ार बार दिल की गहराई के साथ पढ़े तो क़ारी में अज़ीम असरात पैदा हो जाएं। अगर कोई बुराइयों का शिकार हो तो इसके लिए तीन रोज़े रखे और हर दिन मुशतरी की घड़ी में एक हज़ार बार यह इस्म पढ़े और उसके लिए दुआ करे वह आदमी बुराइयों से तौबा कर ले। मुहब्बत के लिए चीनी की प्लेट पर लिखकर पानी से धो कर पहले तालिब पिए फिर वह पानी मतलूब को पिला दे मुहब्बत में बेचैन हो। (तन्वीर)

या क़ादिरु या क़दीरु या मुक़्तदिरु : ये असमा हर बड़े से बड़े और अहम से अहम और मुश्किल से मुश्किल मामलों में मदद करते हैं जब अपने और बेगाने दोस्त व सगे संबंधी सब अलग हो जाते हैं और कोई हामी व मददगार बात पूछने वाला भी न हो तो नफ़सा नफ़सी के मौक़े पर इन असमा में से किसी इस्म का भी ज़िक्र उसकी किश्तीए हयात को साहिल पर लगाने के लिए काफ़ी है ख़ास कर नुजूमी जिस वक़्त वहशत भरी ख़बरें देकर इन्सानों को वहशत का शिकार बना दें उनके खुद साख़्ता दावों को झुठलाने और सितारों के असराते बद से महफ़ूज़ रहने के लिए इन असमा में से किसी इस्म का ज़िक्र बेहतर है। (शरह असमाए बारी)

या मुक़द्दिमु- इस इस्म की बरकत से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने तूर पर कलाम किया। इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ब वक़्ते ख़्वाब इस इस्म को पढ़े। दुश्मनों के हमले, चोरी के ख़ौफ़, मकान के गिरने, जहाज़ के डूबने से बचा रहे। (तन्वीर)

या मुअख़्ख़िरु- शेख बोनी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि जब इन्सान की उम्र ख़त्म होने को पहुंचे और आमाले ख़ैर कुछ भी न हों गुनाहों की कसरत हो क़ब्र व हश्र का खौफ़ दामन गीर हो तो इस इस्म की मदावमत करे हक़ तआला गुनाहों को माफ़ फ़रमाए और उम्र को दराज़ करे ताकि नेक आमाल कर सके (तन्वीर) इसी लिए आमिलीन इस

या हामिदु या महमूदु या हमीदु : इस इस्म पाक की जितनी भी तारीफ़ की जाए कम है इस इस्म का आमिल आलमे महवियत में गुम होकर पढ़े और ख़ालिस हम्द व सना की नीयत रखे तो सिफ़ात महमूदा से मुत्तसिफ़ हो जाता है। इस इस्म के पढ़ने वाले की हाज़िर व गायब तारीफ़ होगी यह अमल तसख़ीर व मुहब्बत और बुरे कामों से बचाने में बड़ा असर रखता है। इनमें से कोई इस्म या तीनों को लिखकर पिलाए जाएं तो सारी बुरी आदते छुट जाएं (तन्वीर) शरीर, बद चलन नाफ़रमान बच्चों के लिए प्याले पर यह इबारत लिखकर रख ले इसी में पानी पिलाए।

(ज़फ़र जलील)

या मोहसि– इस इस्म का पढ़ने वाला क़ब्र के अज़ाब व हश्र से अमान पाता है अगर जुमा के दिन या जुमे की रात में एक हज़ार बार पढ़े हिसाब उसका आफ़ियत से हो आसान हो (तन्वीर) यह इस्म एकाउन्टेंट व क्लर्कों के लिए आबे हयात है कितना ही काम हो करना आसान हो जाए और हिसाब किताब में अगर गलती हो तो फ़ौरन महसूस हो जाए जो इल्म हिसाब पढ़ता हो या इम्तिहान देता हो या जिसके हिसाब में गलतियां ज़्यादा हों वह इसका विर्द करे। *(तन्वीर)*

या मुबदी या मुईद– जिस मुश्किल काम या मकान दुकान की तामीर दुकान कारख़ाना वगैरह गरज़ किसी भी काम की इब्तिदा करते वक़्त इस इस्म को 56 बार पढ़कर आगाज़ किया जाए। बहुस्ने ख़ूबी अंजाम को पहुंचे (तन्वीर) शेख अब्दुल मजीद मगरिबी फ़रमाते हैं अगर तालिब फ़रज़न्द सोहबत से पहले 56 बार मर्द व औरत पढ़ें अल्लाह अपनी कुदरते कामिला से फ़रज़न्द अता फ़रमाए अगर हामला विर्द में रखे, बच्चा सही सालिम पैदा हो और पैदाइश के वक़्त तकलीफ़ न हो।

(तन्वीर)

या मोहयी या हय्यु– यह इस्म मुबारक मोर्चे पर जाने वाले फ़ौजी सिपाही, समुन्द्र में गोता लगाने वाले, बस टैक्सी रिक्शा ड्राइवरों ख़ास तौर से पहाड़ी इलाक़ों में सफ़र करने वालों या पहाड़ी इलाक़ों में काम

करने वालों पुल सुरंगे बिछाने वालों मतलब यह कि हर वह काम जिसमें मौत का ख़तरा हो यह इस्म पाक 9? बार पढ़ कर घर से निकले। सही सलामत घर वापस आएगा जो लोग दरिया के पास रहते हैं सीलाब या जलज़ ले का ख़तरा रहता हो वे इसका विर्द रखें जान व माल के नुक्सान से बचे रहेंगे।

(तन्वीर)

या मुमीतु– यह इस्म पीराने तरीक़त और रहनुमायाने शरीअत के लिए ज़रूरी है कि इस इस्म की बरकत से नफ़स अम्मारा मुतीअ व मुसख़्ख़र हो जाता है। इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़्वाब के वक़्त अपने दोनों हाथ सीने पर रखकर 490 बार या मुमीतु पढ़े इसके बाद सो जाए हक़ तआला उसके नफ़स अम्मारा को मुतीअ व मुसख़्ख़र कर दें (तन्वीर) इसके अलावा हलाकी व बर्बादी दुश्मन के लिए भी यह इस्म ख़ास है। शेख़ बोनी रहिमतुल्लाह फ़रमाते हैं कि ये पांच इस्म या मुसव्विरु, या मुबदी, या मुईद, या मोहयी, या मुमीत अगर तालिब इल्म इन असमा का विर्द करे तो आलिम हो जाए परवरदिगार आलम फ़हम व इदराक अक़्ल न ज़ेहन लतीफ़ अता फ़रमाए तमाम मुश्किलों में आसानियां पैदा हों। *(तन्वीर)*

या क़य्यूमु– इस इस्म की मदावमत की बरकत से उम्र दराज़ होती है मुरादात में कामयाबी, दुश्मनों पर गलबा और दिलों पर तसर्रुफ़ हासिल होता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सख़्ती के वक़्त या हय्यु या क़य्यूमु कहा और फ़ौरन राहत मिल गयी। जो आदमी इज़्ज़त व जाह का तालिब हो और कारोबार की तरक़्क़ी चाहता हो कुदरत व सुरअत व इजाबत क़ज़ाए हाजात व हुसूल मक़ासिद व फ़तह मुक़दमात इस इस्म मुबारक में सब तासीरे मौजूद हैं। शेख़ बोनी रहिमतुल्लाह फ़रमाते हैं जादू के वक़्त इस इस्म का विर्द करे तो ख़ल्क़ मुसख़्ख़र हो। अक्सर अकाबिरीन ने इस्म या हय्यु या क़य्यूम को इस्मे आज़म क़रार दिया है।

(तन्वीर)

या वाजिदु या गनी या मुगनी : ये असमाए इलाही दौलत के हुसूल

अब्दुल मजीद मग़रिबी फ़रमाते हैं कि बाजिसु ही है जो परेशानियों को दफ़अ करता है। इस इस्म में सिर्रे अकबर है इसका ज़िक्र उस फ़र्द के लिए बड़ा ही मुनासिब है जिसकी हिम्मत पस्त हो चुकी हो। ज़िन्दगानी और सेहत व हिफ़ज़ कुवाए जिस्मानी व रूहानी की अजीब व ग़रीब तासीर इस इस्म में मौजूद है। (तन्वीर)

या शहीदु या शाहिदु – अहले हक़ीक़त ने फ़रमाया है कि इस इस्म के ज़ाकिर को बुरे अफ़आल और दुरूग़ गोई से बचना ज़रूरी है जो आदमी रोज़ाना आदाद इस्म के मुताबिक़ विर्द में रखे उसके अहल व अयाल हर बला और बुराई से महफ़ूज़ रहे अगर किसी की बीवी या बच्चा नाफ़रमान या शरीर हो तो रोज़ाना सुबह को उसकी पेशानी पर हाथ रखकर 21 बार यह इस्म पढ़कर दम करे। मुतीअ व फ़रमां बरदार हो (ज़फ़र जलील) अगर नमाज़ के बाद आदाद इस्म के मुताबिक़ पढ़े तो क़ल्ब ज़ाकिर से हिजाब उठ जाएं। (तन्वीर)

या हक़्कु – किसी से लड़ाई झगड़ा हो या किसी क़िस्म के लेन देन का मामला हो या मुक़दमा हो या पंचायत के तौर पर फ़ैसले के लिए कुछ लोग जमा होने वाले हों और खुद का हक़ पर होने का शरई यक़ीन हो साथ ही यह भी गुमान हो कि फ़ैसला मेरे ख़िलाफ़ होगा तो इस इस्म का विर्द करे (तन्वीर) शेख मग़रिब रहिमतुल्लाह ने तहरीर फ़रमाया है कि गुमशिदा चीज़ को पाने के लिए एक कागज़ के कोनों पर गुमशिदा का नाम और बीच में या हक़्कु तहरीर करे वह मिल जाए (तन्वीर) और ज़फ़र जलील में इतना इज़ाफ़ा किया है कि उस कागज़ को अपनी हथेली पर रखे और हाथों को दुआ की तरह उठाए और नज़र आसमान की तरफ़ हो फिर इस इस्म को शफ़ी लाए यानि इसका विर्द आदाद इस्म के मुताबिक़ करे या वही चीज़ मिले या उससे बेहतर। अगर क़ैदी आधी रात को सर नंगा करके एक सौ आठ बार पढ़े तो रिहाई पाए।

या वकीलु – इस इस्म के ज़ाकिर को यह यक़ीन करना चाहिए कि हक़ तआला जमीअ मख़लूक़ात की किफ़ालत करने वाला है। इस इस्म

का ज़ाकिर हर तरह के ख़ौफ़ से मामून रहे अगर ख़ौफ़ की जगह तिलावत करे चाहे ख़ौफ़ बहाइम हो या ख़ौफ़ बर्क़ व राअद या ख़ौफ़ ज़लज़ला अल्लाह महफ़ूज़ रखे (तन्वीर) शेख़ बोनी रहिमतुल्लाह फ़रमाते हैं इस इस्म में हुसूल मुरादात की तासीर कुल्ली मौजूद है जो आदमी इस इस्म मुबारक की तिलावत करे अगर मुसाफ़िर है ख़ैरियत के साथ वतन वापस आए क़ैद है तो नजात पाए मक़रूज़ है तो क़र्ज़ अदा हो अगर ब नीयत दफ़अ दुश्मन पढ़े तो मक़दूर हो। (तन्वीर)

या क़विय्यु– यह इस्म बड़ा क़ुवियुल असर है इसकी तिलावत का असर फ़ौरन ज़ाहिर होता है इसके आमिल पर एक दो नहीं हज़ारों दुश्मन बल्कि पूरी फ़ौज भी ग़लबा हासिल करके नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती। दफ़अ बीमारी के बाद की कमज़ोरी के लिए या वक़्त से पहले बूढ़े या कमज़ोर और चलने फिरने से माज़ूर हो जाने वाले या माज़ूर हो जाने का ख़तरा हो या क़ादिर या क़वी या क़ाइम या दाइम चीनी की प्लेट पर लिखकर पानी से धोकर पीना चाहिए।

(इक़बाल अहमद)

शारिहीन किराम ने मुसतनद तरीक़ा दुश्मन से महफ़ूज़ रहने का बताया है कि आटा ख़मीर करके एक हज़ार गोलियां बनाए और हर गोली पर यह इस्म एक बार पढ़ता जाए और दम करता जाए और परिन्दों को खिलाता जाए और दुश्मन का तसव्वुर रखे उसके शर से महफ़ूज़ रहेंगे। (तन्वीर)

या मतीनु– इस इस्म का आमिल अगर अपनी आंख को ना मेहरम से महफ़ूज़ रखे तो उसकी मुहब्बत व हैबत दोस्त दुश्मन पर हर एक के दिल में खून की गर्दिश के साथ दौड़ने लगे। अगर किसी ख़ास ज़ात को मुसख़्ख़र करना हो तो खुश्बूदार फूल या मेवे या दम करके दे दो वह खुश्बू सूंघे या मेवा खाए तो मेहरबान हो (तन्वीर) जो बच्चा चलने से माज़ूर हो इस इस्म का नक़्श बांधे चलने लगेगा। बच्चे की मां के दूध न हो इस इस्म को लिखकर मां को पिलाए दूध बहुत हो।

(ज़फ़र जलील)

या तव्वाबु – जिस आदमी पर गुनाहों के सबब मुसीबत व तक्लीफ़ या दौलत की तंगी हो इस इस्म की बरकत से उसके गुनाह माफ़ हों। रहमत व करम की बारिश हो। 409 बार रोज़ाना विर्द में रखे और बाद फ़रागत जो दुआ करे उसकी दुआ कुबूल हो। जो दूध पीता बच्चा बहुत रोता हो उसपर सत्तर बार पढ़कर दम करे हर मर्ज़ व आफ़ात व बलिय्यात से बचा रहे ।

(तन्वीर)

इस इस्म का ज़ाकिर जो इसके मआनी व सिफ़ात में ग़र्क होकर पढ़े औलियाए किराम में शुमार हो गुनाह व फ़्वाहिश से उसका दिल मुतनफ़्फ़िर हो जाए।

(शरह असमा)

या मुन्तक़िमु– बराए फ़तह व ज़फ़र ख़ास कर जिन लोगों के कारोबार, कारखानों दुकानों को ब वजह हसद सिफ़ली के ज़रिए बांध दिया जाता है या जो लोग बुरे दोस्तों या नफ़स के फ़रेब में आकर अपनी इज़्ज़त व दौलत को जुवा सट्टा रेस में बर्बाद कर चुके हैं और अपनी खोयी हुई दौलत व इज़्ज़त को हासिल करना चाहते हैं तो सच्चे दिल से तौबा करके या तव्वाबु या मुन्तक़िमु का विर्द करें। इन्शा अल्लाह फिर वही दिन होंगे और वही रातें।

(शरह असमा)

या रऊफ़ु– यह इस्म मुबारक तसख़ीर मुहब्बत और दुश्मन के जुल्म से रिहाई के लिए पढ़ना चाहिए। इसके आमिल को हर आदमी मुहब्बत से देखे अगर इसके आमिल के पास एक पैसा न हो और वह बड़े से बड़े कारोबार को करना चाहे तो लोग उसे खुशी खुशी क़र्ज़ दें और तक़ाज़ा न करें क्योंकि इसके आमिल के क़र्ज़ देने वाले को अल्लाह तआला बड़ी बरकत देता है अगर कोई ख़यानत की नीयत से इस अमल को करे तो ज़लील ख़्वार हो वर्ना अजमत वक़ार उसके क़दम चूमे।

(शरह असमा)

या मोअ़ती या यामुनअमु या नाफ़ेअु या हन्नानु या मन्नानु– ये असमाए इलाही दौलत व ग़िना के हुसूल के लिए ख़ास हैं तिजारत में नफ़ा के लिए, रिज़्क़ की तरक़्क़ी, हलाल रोज़ी में इम्तियाज़ी शान

रखते हैं। बड़े बड़े वज़ाइफ़ अमलियात और मेहनते शाक़्क़ा के बाद जो चीज़ हासिल नहीं होती वह कुछ ही दिनों में इन असमाए इलाही में से किसी भी इस्म मुबारक की बरकत से हासिल हो जाती है अगर किसी को रुपया पैसा देते वक़्त या मोअ़ती का विर्द दिल में करे तो अल्लाह तआला इस इस्म की बरकत से उससे ज़्यादा अता करे। अगर ख़रीद फ़रोख़्त के वक़्त दिल में या नाफ़ेअ का विर्द करे तो इस तिजारत में नफ़ा व बरकत हो। अगर दस्तकार अपना कारख़ाना या दुकान खोलते वक़्त या मुन्अिमु का विर्द करे तो काम ज़्यादा अच्छा हो और जल्द बिकने वाला तैयार हो और दुकान पर बिक्री ज़्यादा हो। या हन्नानु फ़ज्र की नमाज़ के बाद, या मन्नानु इशा की नमाज़ के बाद आदाद इस्म के मुताबिक़ पढ़ा जाए ख़ैर कसीर और दौलत व बरकत हासिल हो।

(ज़फ़र जलील)

या मानिअु– अहले तहक़ीक़ फ़रमाते हैं जो आदमी इसका विर्द करे तो लाज़िम है कि किसी फ़र्द को तकलीफ़ न पहुंचाए ताकि हक़ तआला ज़ाकिर से बलाए दुनिया व आख़िरत को दूर फ़रमा दे। अगर किसी की बीवी नाफ़रमान हो तो सोते वक़्त इस इस्म को पढ़े मुवाफ़िक़त पैदा हो जाएगी। शेख़ मग़रिब फ़रमाते हैं कि यह इस्म ख़ौफ़ के लिए बहुत बेहतर है।

(तन्वीर)

या ज़ार्रु– इस इस्म का ज़ाकिर हर मर्ज़ व शर से बचा रहता है ख़्वाह इज़्ज़त व माल या आल औलाद का मामला हो। शेख़ मग़रिब फ़रमाते हैं अगर कोई आदमी इज़्ज़त व जाह का तालिब हो तो हर रात और इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने जुमे की रात को 100 बार पढ़ने को फ़रमाया है।

(तन्वीर)

या नूरु– इस इस्म पाक की बरकत से जिस्म व क़ल्ब मुनव्वर रहता है अल्लाह के नूर की बारिश होती है। इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि 256 बार इस इस्म को रोज़ाना विर्द में रखे तो दिल नूरानी हो और आंखे अल्लाह के नूर से रोशन हो जाएं। इसके क़ारी से हर आदमी इज़्ज़त व एहतराम से पेश आए। शेख़ बोनी

रहिमतुल्लाह इर्शाद फ़रमाते हैं कि जो इसका विर्द करे ईमान के नूर से उसका दिल मुनव्वर हो जाए। *(तन्वीर)*

या हादी- इस इस्म पाक को आमिलीन हरकारा कहते हैं यानि हर काम इस इस्म पाक की बरकत से अंजाम पाता है शीर ख़्वार बच्चों का रोना, शरीर व ना फ़रमान बच्चों, कज ख़ल्क़ बद किरदार मर्द औरतों के सुधारने के लिए ख़ास तौर पर इसके अमल किए जाते हैं और नक़्श दिए जोते हैं। सय्यदी मुर्शदी हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द मद्द ज़िल्लहु हर ग़ैर मुस्लिम को चाहे वह किसी भी हाजत को लेकर आया हो दीगर नुक़ूश के साथ आदाद में इस नक़्श को ज़रूर देते थे। *(इक़बाल इहमद)*

या बदीउ- अगर इस इस्म को दुआ के वक़्त सत्तर बार पढ़े तो दुआ मुस्तजाब हो। जिस आदमी से उसकी कोई महबूब चीज़ छीन ली गयी हो या कोई किसी अमर मुश्किला में सर गश्ता हो या किसी मामले में परेशान हो या कोई वाली व हाकिम अपने ओहदे से माज़ूल कर दिया गया हो तो गुस्ल करके पाक कपड़े पहने और हलाल रिज़्क़ से सदक़ा दे और बाद तसद्दुक़ दो रकअत नमाज़ अदा करे और 70 बार يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ और एक हज़ार बार पढ़े يَا بَدِيْعُ इन्शा अल्लाह मक़सद में कामयाबी हासिल हो। *(तन्वीर)*

या बाक़ी- इसी इस्म की बरकत थी क्रि हजरत जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैहि जबकि पहलवानी किया करते थे किसी ने आपकी पुश्त को ख़त्म नहीं किया और इसी की बरकत से मन्सब विलायत से सरफ़राज़ फ़रमाए गए। शेख़ बोनी रहमतुल्लाह फ़रमाते हैं कि इस इस्म का ज़ाकिर कभी बीमार नहीं होता अगर बादशाह ज़िक्र करे तो मुल्क पर ज़वाल न आए। शेख़ मग़रिब फ़रमाते हैं कि अगर हर रात 100 बार और जुमे कि रात एक हजार बार पढ़े तो दुआ क़ुबूल हो।

या वारिसु- इस इस्म पाक की बरकत से इसका ज़ाकिर क़ौम में सरदार व मुअज़्ज़म हो, साहिबे औलाद हो, अमवाल में बरकत हो, रोज़ी कुशादा हो। शेख़ बोनी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि रिज़्क़ की तरक़्क़ी के लिए इसकी तिलावत मुफ़ीद है और कोई आदमी इस इस्म के दरियाए वुसअत मआनी में डूब कर यानि साहिबे कमाल पढ़े तो क़बीले की सरदारी हासिल हो औलाद में कसरत, माल में बरकत हो। *(तन्वीर)*

या रशीदु- इस इस्म का आमिल किसी क़ौम का लीडर या रहनुमा हो तो वह क़ौम सरफ़राज़ हो उसके मश्विरे और उसके हुक्म की तालीम से वह क़ौम या क़बीला तरक़्क़ी की मनाज़िल पर गामज़न हो। उल्लूव व मर्तबते अज़मत शोहरत का चर्चा हो। हज़रत इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जो इसका विर्द करे उसके सारे काम बड़ी आसानी से अंजाम पाए और शेख़ अहमद फ़रमाते हैं कि सुबह की नमाज़ के बाद व मग़रिब की नमाज़ के बाद खड़े होकर एक हज़ार बार पढ़े तो मुहिम्मात में बिना कोशिश कामयाबी नसीब हो। अगर इस्तिख़ारे की नीयत से पढ़े तो हर काम का अंजाम और नफ़ा व नुक़सान का हाल ख्वाब की हलात में या जागने की हालत में मालूम हो। *(तन्वीर)*

या सबूरु- इस पाक इस्म के ज़िक्र से सख़्तियों पर सब्र हासिल होता है और इस इस्म का ज़ाकिर कोई सख़्त काम करने से नहीं आजिज़ होता। अगर किसी अज़ीम सदमे औलाद या किसी अज़ीज़ व महबूब के इन्तिक़ाल की वजह से खलल दिमाग़ हाफ़िज़े की ख़राबी वग़ैरा उमूर लाहक़ हो जाएं तो इस इस्म के नक़्श को धोकर पिलाएं (तन्वीर) अगर किसी रंज व ग़म और दर्द मुशक़्क़त के मौक़े पर ख़ौफ़ दहशत के वक़्त या दुश्मना न व हासिदान की ज़बानी अपनी बदगोई से बन्द करना हो तो एक हज़ार तीस बार पढ़े। *(ज़फ़र जलील)*

इस्मे आज़म से मुताल्लिक़ ज़रूरी नोट

कुछ असमाए बारी तआला जल्ले शानहु के मुख़्तसर ख़्वास जो कुतुब से हासिल कर सके आम लोगों के फ़ायदे के लिए नक़ल कर दिए गए हैं। जो असमाए बारी तआला लिखने से रह गए या जो लिखे तो गए मगर उनके ख़्वास इन सफ़हात में दर्ज न हो सके उनके लिए सिर्फ़ इतना काफ़ी है कि आपके नाम के आदाद के मुताबिक़ एक या दो असमाए इलाही जो आपका इस्मे आज़म है अगर आपके इस्म आज़म में कोई ऐसा इस्म आए जिसके औसाफ़ इस किताब में दर्ज न हों तो मायूस न हों बल्कि जिन असमाए ज़ात व सिफ़ात की शरह दर्ज है उनको ग़ौर से पढ़कर यक़ीन कामिल रखें कि जो मेरे नाम के आदाद के मुताबिक़ मेरा जो इस्मे आज़म है उसमें तमाम वे औसाफ़ मौजूद हैं जो दीगर असमा के तहत बयान हुए।

जिस तरह कि इस्म या सुबहान कि इसकी शरह दर्ज नहीं मगर मेरा इस्मे आज़म सुबहानल्लाह है यह इसी इस्मे आज़म की बरकत है कि शमा शबिस्ताने रज़ा का दूसरा हिस्सा जो आपके सामने है सिर्फ़ 17 दिन की मेहनत का नतीजा है। मैं मसविदा तैयार करता जा रहा हूं और कातिब साहब किताबत कर रहे हैं इसी इस्म पर भरोसा करते हुए कातिब साहब से वायदा कर लिया है कि आपका हाथ न रुकने दूंगा। سبحان اللہ والحمد للہ وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وصحبہ وبارک وسلم

असमाए बारी तआला के जुदा जुदा ख़्वास लिखने की ज़रूरत इसलिए महसूस हुई कि किसी फ़र्द को इस्मे आज़म की तलाश न हो या उसके नाम के आदाद इतने ज़्यादा हों कि उससे दोचन्द रोज़ाना विर्द में रखने का उसके पास वक़्त न हो तो वह किसी अहम ज़रूरत पर अपने हसबे हाल किसी इस्म का इन्तख़ाब करके उससे फ़ायदा उठा सके।

ज़कात की क़िस्में

यह एक ऐसा राज़ पोशीदा है जिससे हज़ारों आमिलीन वाकिफ़ नहीं। सिर्फ़ कामिलीन के इर्शाद के मुताबिक़ अमल करते रहे और इसी की तामील दूसरों को देते रहे ज़्यादा से ज़्यादा किसी साइल के जवाब में यह फ़रमा देते कि किसी आयत या इस्म की ज़कात सवा लाख है जो 41 दिन में पूरी होती है इसके सिवा यह इल्म नहीं कि सवा लाख की तादाद हर आयत या हर इस्म की है और वह ज़कात की क़िस्मों में से किस क़िस्म की ज़कात है आया सवा लाख की ज़कात अदा करने के बाद इस अमल से उम्र भर काम ले सकते हैं या वक़्ती तौर पर अगर उम्र भर के लिए आमिल हो जाएगा तो हर दिन किसी ख़ास तादाद में पढ़ने की ज़रूरत है या नहीं।

पहली क़िस्म– आमिल अपने नाम के आदाद के मुताबिक़ 41 दिन रोज़ाना पढे तो वह अमल एक बार काम देगा हमेशा नहीं।

दूसरी क़िस्म– जो अमल पढ़ना हो उसके हरुफ़ की तादाद जितनी हो उतने हज़ार बार रोज़ाना 41 दिन तक पढ़े तो हमेशा के लिए आमिल हो जाएगा। आमिल उसका सेफ़ ज़बान हो जाता है फिर ज़रूरत के वक़्त सिर्फ़ एक बार पढ़ना काफ़ी होता है।

तीसरी क़िस्म– अमल के जितने हरुफ़ हों उतने सौ बार रोज़ यह ज़कात भी एक ही बार काम देती है मगर पहली क़िस्म से बेहतर है।

चौथी क़िस्म– ज़कात सग़ीर– अमल के क़वाइद क़मरी जितने हों उतनी ही बार रोज़ाना पढ़े। यह ज़कात असली है और मोतबर भी।

पांचवी क़िस्म– ज़कात कबीर– अमल के आदाद क़मरी को हरुफ़े अमल

से ज़रब दो और हासिल ज़रब को रोज़ाना पढ़ो। यह जकात सगीर से ज्यादा कवी है हमेशा के लिए आमिल हो जाएगा।

छटी क़िस्म- जकात अकबर अमल कबीर के आदाद को फिर हरूफ की तादाद से ज़रब देकर रोज़ पढ़ें। यह बकीर से भी ज्यादा कवी है कि इस इस्म के मुवक्किल सामने आकर आमिल से मुलाकात करेंगे।

सातवीं क़िस्म- जकात कबाइर- अमल अकबर की तादाद को फिर हरूफ के आदाद से ज़रब देकर पढ़ें यह अकबर से भी ज्यादा कवी है। इस इस्म के मुवक्किल ख़ादिम होकर हर वक्त साथ रहेंगे।

आठवीं क़िस्म- जकात अकबरुल कबाइर- यह आखिरी जकात है यानि अमल अकबर की तादाद को फिर हरुफ के तादाद से ज़रब देकर पढ़े इसे किबरियत अहमद या लाल सफेद कहते हैं इसी तादाद को इस इस्म का निसाब कहते हैं।

नोट- इस इकसाम में तादाद अमल कसीर हो जाती है असमाए बारी तआला की तिलावत तो मुमकिन है मगर आयाते कुरआनी की जकात सग़ीर भी अदा करना मुमकिन नहीं। इसके लिए अकाबिरीन ने यह तरीक़ा दर्ज फ़रमाया है जिसकी 5 क़िस्में हैं।

(1) **उश्र-** निसाब की आधी तादाद को कहते हैं

(2) **दूर मदूर-** उश्र के आधे को कहते हैं,

(3) **क़फ़ल-** दूर मदूर के आधे को कहते हैं।

(4) **बज़ल-** क़फ़ल के आधे को कहते हैं

(5) **खत्म-** बज़ल के आधे को कहते हैं।

बिल्कुल मामूली तरीके पर जकात की किस्में और भी हैं मगर उनमें यह ख़तरा रहता है कि अमल कभी फ़ायदा करता है कभी नहीं या सिर्फ़ एक बार ही अमल काम देता है हां यह एक फ़ायदा यकीनी है कि किसी अमल के आदाद इतने ज्यादा हैं कि जकात सगीर ही अदा करना मुश्किल हो तो वहां यह तरीक़ा काम देगा।

असग़र- यानि तादाद सगीर का आधा करके पढ़े इसे असगर कहते हैं।

सग़ाइर- अगर असगर की तादाद मे पढ़ना दुश्वार हो तो असगर का आधा करके पढ़े। इसे सगाइर कहते हैं।

असग़रुस्सग़ाइर- सगाइर के आधे को असगरुस्सगाइर कहते हैं।

ये जकात की अदना किस्म है इससे कमतर नहीं जकात कबीर और जकात अकबर- कबाइर और अकबरुल कबाइर- इन किस्मों के लिए यह ज़रूरी नहीं कि एक नशिस्त में यह तादाद पूरी की जाए या हर दिन इतनी तादाद मे अमल पढ़ा जाए बल्कि 41 से तक्सीम करके हासिल अदद के मुताबिक 41 दिन में इस तादाद को पूरा किया जा सकता है।

सूरह इख़्लास 7 बार दरूदे ग़ौसिया 3 बार पढ़कर सय्यदुल अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम व सहाबा किराम अहले बैत इतहार व सय्यदना ग़ौस आज़म और सलातीन अरबअ रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की अर्वाह पाक को सवाब बख़्शे।

11- 41 दिन बाद चिल्ला पूरा होने के हर दिन बाद मग़रिब की नमाज़ के बाद दरूदे ग़ौसिया 3 बार दुआ नम्बर 4 एक बार दुआ नम्बर 6 एक बार दुआ नम्बर 8 एक बार दुआ नम्बर 10 175 बार। दरूदे ग़ौसिया एक बार पढ़ता रहे और हर साल रजब की 4 तारीख़ को फ़ातिहा सलातीन अरबअ एहतमाम के साथ करता रहे। कभी मुफ़लिस और किसी का दस्ते नगर न रहेगा। अल्लाह तआला ब इज़्ज़त फ़राख़ रोज़ी अता फ़रमाएगा। कारोबार तरक़्क़ी करेगा। मुलाज़िम है तो तन्ख़ाह और ओहदे में तरक़्क़ी होगी। यह अमल बूढ़े मुफ़लिस बे सहारा मजबूर हज़रात के लिए पेश क़ीमत ख़ज़ाना है।

क़ज़ाए हाजात के लिए तीर बहदफ़ नमाज़ें

(अज़ अहसनुलवआ)

तरकीब अव्वल- ताज़ा वुज़ अच्छी तरह करे दो रकअत नमाज़ नफ़ल पढ़े सलाम के बाद अर्ज़ करे। اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡئَلُكَ اَتَوَجَّهُ اِلَيۡكَ بِنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ نَبِيِّ الرَّحۡمَةِ يَارَسُوۡلَ اللّٰهِ اِنِّىۡ اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلٰى رَبِّىۡ فَيَقۡضِىۡ حَاجَتِىۡ और अपनी हाजत बयान करे। यह दुआ सही हदीस में तालीम फ़रमायी। قَالَ الرِّضَا एक नाबीना ख़िदमते अक़दस में हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हाज़िर होकर अपनी ना बीनाई का शाकी हुआ। हुज़ूर ने यह नमाज़ व दुआ इर्शाद फ़रमायी। उन्होंने मस्जिद में जाकर पढ़ी। कुछ देर न गुज़री थी कि दोनों आंखें खुल गयीं मानो कभी अंधे न थे। इस दुआ के अव्वल व आख़िर हम्द इलाही व दरूदे रिसालत पनाही सलवातुल्लाह व सलामा अलैहि और आमीन

पर ख़त्म और शुरु में अल्लाह तआला को असमाए तय्यबा से निदा करे। बेहतर है कि ज़िक्र असमाए हुसना में जो दुआ लिखी है अव्वल आख़िर पढ़े।

तरकीब दोम - नमीरी व इब्ने बशकवाल वहीब बिन वर्द से रिवायत करते हैं जो बन्दा बारह रकअत में सूर: फ़ातिहा व आयतल कुर्सी व सूरह इख़्लास पढ़े फिर सज्दे में ये कलिमात कहे-

سُبۡحَانَ الَّذِىۡ لَبِسَ الۡعِزَّ وَقَالَ بِهٖ ۝ سُبۡحَانَ الَّذِىۡ تَعَطَّفَ بِالۡمَجۡدِ وَتَكَرَّمَ بِهٖ
سُبۡحَانَ الَّذِىۡ اَحۡصٰى كُلَّ شَىۡءٍ بِعِلۡمِهٖ ۝ سُبۡحَانَ الَّذِىۡ لَا يَنۡبَغِى التَّسۡبِيۡحُ اِلَّا لَهٗ ۝
سُبۡحَانَ الۡمَنِّ وَالۡفَضۡلِ ۝ سُبۡحَانَ ذِى الۡعِزِّ وَالۡكَرَمِ ۝ سُبۡحَانَ ذِى الطَّوۡلِ وَالنِّعَمِ
اَسۡئَلُكَ بِمَعَاقِدِ الۡعِزِّ مِنۡ عَرۡشِكَ وَ مُنۡتَهَى الرَّحۡمَةِ مِنۡ كِتَابِكَ وَبِاسۡمِكَ
الۡعَظِيۡمِ الۡاَعۡظَمِ وَجَدِّكَ الۡاَعۡلٰى وَكَلِمَاتِكَ التَّامَّاتِ كُلِّهَا الَّا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ
وَّلَا فَاجِرٌ اَنۡ تُصَلِّىَ عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ ۝

फिर ख़ुदा तआला से वह सवाल करे जिसमें गुनाह नहीं जैसे कहे اَنۡ تَقۡضِىَ حَاجَتِىۡ هٰذِهٖ और इस हाजत का ज़िक्र करे अल्लाह तआला रवा फ़रमाए। वहब कहते हैं हमें पहुंचा है कि यह तरकीब अपने बेवक़ूफ़ों और जाहिलों को न सिखाओ कि गुनाहों पर दिलैरी न करें।

तरकीब सोम- अब्दुर्रज़ाक़ ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो आदमी ख़ुदा से जो हाजत रखता हो तन्हा मकान में बावुज़ू चार रकअत पढ़े। पहली रकअत में फ़ातिहा के बाद सूरह इख़्लास दस बार दूसरी में 20 बार तीसरी व चौथी में चालीस बार पढ़े फिर पचास बार सूरह इख़्लास और सत्तर बार ला हवला पढ़े। अगर इस पर क़र्ज़ हो अदा हो जाए और जो वतन से दूर हो ख़ुदा तआला उसे घर पहुचाए और जो आसमान के बराबर गुनाह रखता हो और इस्तिग़फ़ार करे ख़ुदा

الصلوٰۃ وَاٰتُوا الزَّکوٰۃَ وَاَقْرِضُوا اللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا ۔ اَلَا اِلَی اللّٰہِ تَصِیْرُ الْاُمُوْرُ ط 21 बार एक सांस में وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِکُمْ مِّنْ خَیْرٍ تَجِدُوْہُ عِنْدَ اللّٰہِ ھُوَ خَیْرًا وَّ اَعْظَمَ اَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰہَ ط اِنَّ اللّٰہَ غَفُوْرٌ رَّحِیْم दरूद शरीफ़ 10 बार। फिर सज्दे में जाकर यह दुआ 70 बार पढ़े اَللّٰھُمَّ یَا مُفَتِّحُ فَتِّحْ یَا مُسَبِّبُ سَبِّبْ یَا مُفَرِّجُ فَرِّجْ یَا مُسَھِّلُ سَھِّلْ وَیَا مُیَسِّرُ یَسِّرْ وَیَا مُدَبِّرُ دَبِّرْ وَیَا مُتَمِّمُ تَمِّمْ بِالْخَیْرِ ط

बेहतर होगा कि अव्वल 40 दिन तक पहली तादाद के पढ़ लें। 40 दिन के बाद से कम वाली तादाद से हमेशा विर्द में रखें अगर अब भी कोई बात मालूम करना हो तो जवाबी ख़त से मालूम कर सकते हैं।

(इक़बाल अहमद नूरी)

रोज़ाना खर्च करे मगर जेब ख़ाली न रहे : यह नक़्श मुश्क व ज़ाफ़रान से भोज पत्तर पर लिखे अगर न मिल सके तो मजबूरी में कागज़ पर लिखे और बीच के खाने में खर्च यौमिया लिखे और मोम जामा करके अपने बाज़ू पर बांध ले इसके बाद अमल मुज़्ज़म्मिल शरीफ़ शुरु करे अगर इसे चांदी के पत्तर पर कुन्दा कराके अपने पास रखे एक तरफ़ यह नक़्श दूसरी तरफ़ तकसीर जिन्ना तो इस नक़्श से बहुत से फ़वाइद हासिल हो सकते हैं फ़रमाइश आने पर तैयार करके भेजा जा सकता है। हदया चांदी पर पन्द्रह रुपए अलावा महसूल डाक।

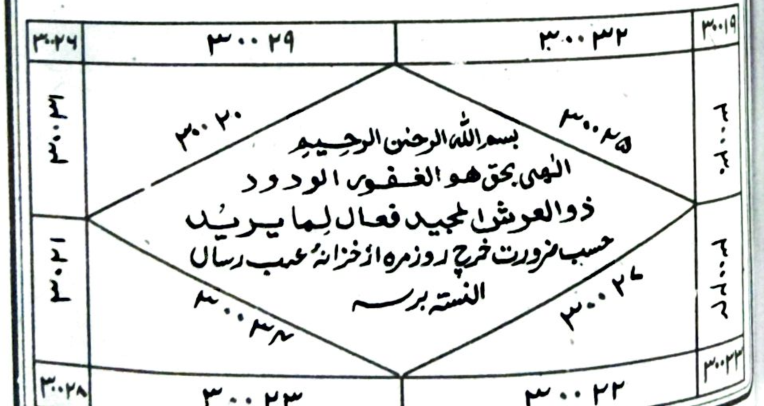

चराग़ खुर्द बराए वुसअत रिज़्क़ व हुसूल दौलत व ग़िना

1- माह साबित या हर उरूज माह में मग़रिब की नमाज़ के बाद अकेले में अमल शुरु किया जाएगा और 41 दिन का चिल्ला होगा।

2- चराग़ को ऐसी जगह रखें कि चराग़ और काबा की तरफ़ आपका मुंह रहे और चराग़ किसी मेज़ या स्टूल पर रखें कि सीने के सामने रहे चारों कोनों में रूई की बत्तियां रखें और खुश्बूदार तेल या उमदा घी डालें।

3- चराग़ की बत्ती के एक निशान पर पच्छिम खुदा हुआ है ख्याल रहे कि वह बत्ती पच्छिम ही की तरफ़ रहे।

4- मग़रिब की नमाज़ के बाद ताज़ा वुज़ू करे फिर یَا غَوْثَ الثَّقَلَیْنِ یَا کَرِیْمَ الطَّرَفَیْنِ اَغِثْنِیْ وَاَمْدُدْنِیْ فِیْ قَضَاءِ حَاجَتِیْ یَا قَاضِیَ الْحَاجَات बे गिनती कुछ बार पढ़े फिर दो रकअत नमाज़ नफ़्ल सलातुल इसरार की नीयत से पढ़े जिसकी तरकीब आगे आ रही है।

5- नमाज़ के बाद चराग़ के सामने बैठकर 11 बार दरूदे ग़ौसिया पढ़े- اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ مَّعْدَنِ الْجُوْدِ وَالْکَرَمِ وَاٰلِہٖ بَارِکْ وَسَلِّمْ

6- एक बार یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ یَا نَبِیَّ اللّٰہِ اَغِثْنِیْ وَاَمْدُدْنِیْ فِیْ قَضَاءِ حَاجَتِیْ یَا قَاضِیَ الْحَاجَاتِ पढ़े

7- 3 बार अपना मक़सद बयान करके अल्लाह की बारगाह में दुआ करके चराग़ रोशन करे फिर 11 बार दरूदे ग़ौसिया।

8- 16 बार یَا سَادَاتَنَا عَبْدَ الْکَرِیْمِ الْغَرْبِیْ وَعَبْدَ الْجَلِیْلِ الْجَنُوْبِیْ وَعَبْدَ الرَّحِیْمِ الْمَشْرِقِیْ وَعَبْدَ الرَّشِیْدِ الشِّمَالِیْ اَغِیْثُوْنِیْ بِحَقِّ غَوْثِنَا وَغَوْثِکُمُ الشَّیْخِ عَبْدَ الْقَادِرِ الْجِیْلَانِیْ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ۔ पढ़े।

9- 11 बार یَا شَیْخَ عَبْدَ الْقَادِرِ الْجِیْلَانِیْ شَیْئًا لِلّٰہِ पढ़े।

10- 1543 बार یَا غَنِیُّ یَا کَرِیْمُ یَا اَحَدُ یَا مُنْعِمُ पढ़े फिर दरूदे ग़ौसिया 11 बार। अलहम्दु शरीफ़ एक बार आयतल कुर्सी एक बार

सवार हो और बिना हिसाब व अज़ाब के जन्नत में जा और जिसकी शफ़ाअत करे उसे बख़्शूं। जब उस आदमी को इस तरह ताज व ख़िलअत से नवाज़ा देखकर क़ियामत के दिन लोग देखेंगे कि मुंह चौदहवीं रात के चांद जैसा होगा। यह कर्रो फ़र देखकर हश्र के मैदान में ग़ुल मचा होगा कि यह कोई पैग़म्बर या कोई सिद्दीक़ या बुज़ुर्ग है कि ऐसी शान बुज़ुर्गी से आता है। फ़रिश्ता जन्नत का निगहबान कहेगा कि कोई पैग़म्बर नहीं है बल्कि एक बन्दा ख़ुदा और मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उम्मती है। दुनिया में अहदनामा अपने साथ रखता था और हर दिन इसका विर्द करता था। इसी का यह सारा फ़ैज़ व नूर और बरकत है तब ख़लक़त कफ़े अफ़सोस मलेगी कि इतनी मुद्दत हम दुनिया में रहे मगर अफ़सोस कि इस अहदनामे से ग़ाफ़िल रहे। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

बराए वुसअत रिज़्क़, अमल सूरह मुज़्ज़म्मिल शरीफ़ :

अगर आप चाहते हैं कि आपके रिज़्क़ में फ़राख़ी हो पैसे से कभी जेब ख़ाली न रहे। दीनी और दुनियावी जायज़ ज़रूरतें हसबे मन्शा पूरी होती रहें और कभी किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े बल्कि वक़्त आने से पहले ग़ैब से समान हो जाया करे तो सूरह मुज़्ज़म्मिल शरीफ़ हमारे बताए हुए तरीक़े से रोज़ाना बाद नमाज़ फ़ज्र सिर्फ़ एक बार पढ़ लिया करें।

तक़रीबन दस-ग्यारह साल से वालिद माजिद हज़रत क़िबला सूफ़ी साहब मदारुर्रसूल के भी अमल में है और वालिद साहब क़िब्ला की तरफ़ से आम सुन्नी हज़रात को इसके पढ़ने की इजाज़त है। पढ़ने का ख़ास तरीक़ा और-

तरकीब- अव्वल दरूद शरीफ़ 10 बार आयतुल कुर्सी एक बार اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ 70 बार या 7 बार
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ (एक सांस में 7 बार)
قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۔ نِّصْفَهٗ 3 बार زَمِّلْنِيْ بِلُطْفِكَ الْخَفِيِّ

اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ
اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ
قَدْرًا ۔ 50 बार या 5 बार اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ
قَوْلًا ثَقِيْلًا اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ؕ اِنَّ
لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ؕ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ
تَبْتِيْلًا ؕ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۔
100 बार या 10 बार رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً
مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ
خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۔ (30 बार या 20 बार) (۳۰ بار یا ۲۰ بار) وَاصْبِرْ
عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ۙ وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ
وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ۔ اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۙ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ۙ
يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ۔ اِنَّآ
اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا
فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ۔ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ
كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ۖ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ
كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ۔ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى
رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۔ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا
عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ
(30 बार या 3 बार) اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ
تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ
مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ
مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ
اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا

अहद नामा मय असनाद व फ़वाइद

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ
الرَّحِيْمُ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعْهَدُ اِلَيْكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا اَشْهَدُ اَنْ لَّا
اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَ
رَسُوْلُكَ فَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ فَاِنَّكَ اِنْ تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ تُقَرِّبْنِيْ
اِلَى الشَّرِّ وَتُبَاعِدْ مِنَ الْخَيْرِ وَاِنِّيْ لَا اَثِقُ اِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاجْعَلْ
لِّيْ عِنْدَكَ عَهْدًا تُوَفِّيْهِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ وَ
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ
يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

असनाद व फ़वाइद अहदनामा- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो कोई इस अहदनामे को सारी उम्र में एक बार पढ़े खुदा चाहे तो ईमान के साथ जावे। और उसके जन्नती होने का मैं ज़मानती हूं।

जुमला अमराज़ से महफूज़ी- और जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना कि आदमी के बदन में तीन हज़ार बीमारियां हैं एक हज़ार को हकीम जानते हैं और दो हज़ार की दवा कोई नहीं जानता। जो कोई इस अहदनामे को अपने पास रखे खुदा तआला 3 हज़ार बीमारियां से बचाकर रखे।

सांप बिच्छू सेहर जादू व बदगोयों की बदगोई से महफूज़ी- हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना कि जो कोई अहदनामे को अपने पास रखे

वह सांप व बिच्छू से अम्न में रहे और जादू उसपर कारगर न हो और बदगोयों की ज़बान बन्द हो जाए और अगर चीनी की प्लेट पर लिखकर पानी से धोकर या कागज़ पर लिखकर पानी में घोल कर किसी दर्दमन्द को पिलाए तो शिफ़ा हो जाए।

अहदनामा का तवस्सुत जुमला हाजात का ज़ामिन है- हज़रत सय्यदा खातूने जन्नत रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैंने सुना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कि जो कोई अहदनामे को शफ़ी लाए और इसके वसीले से दुआ करे हाजत उसकी अल्लाह पूरी करे और अगर मुश्क व ज़ाफ़रान से लिखकर बारिश के पानी से धोकर जिसे तीन या सात दिन पिलाए अक्ल ज़्यादा तेज़ हो और जो कुछ याद हो न भूले यानि हाफ़िज़ा तेज़ हो जाए।

क़ब्र की कुशादगी व नूरानी और मुन्किर नकीर के सवाल व जवाब में आसानी के लिए मुर्जरब है- हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने सुना नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कि जो कोई इस अहदनामे करो 41 बार पढ़कर मुर्दे के नाम बख्शे क़ब्र उसकी मश्रिक़ से मग़रिब तक कुशादा और पुर नूर हो जाए। और अगर मुर्दे की क़ब्र में रखे तो उस मुर्दे को सात पैग़म्बरों का सवाब मिले और सवाल मुन्किर नकीर आसान हो और अल्लाह एक लाख गज़ दाएं से और 40 हज़ार गज़ बाएं से और 40 हज़ार गज़ पांव की तरफ़ से अज़ाब दूर करे और क़ब्र उसकी ऐसी कुशादा हो कि आंख काम न कर सके यानि उसका इहाता न कर सके।

अहद नामे का विर्द मुत-शक्ल होकर क़ब्र में मौजूद हो: अहद नामे की अल्लाह ने एक सूरत बतायी है कि क़ब्र में पास रहेगी और जब क़ियामत के दिन साहिबे क़ब्र उठेगा तो यह फ़रिश्ता बनकर सामने आएगी और जन्नत का लिबास लाकर पहनाएगी और बुराक़ पर सवार करेगी। हक़ तआला फ़रमाएगा ऐ बन्दए मोमिन तेरे साथ अहदनामा है तू खुश हो कि दुनिया में हर दिन पढ़ा है आज मैं इस अहद को वफ़ा करता हूं ताज सर पर रखकर जन्नती लिबास पहन बुराक़ पर

उसके गुनाह बख़्शे और जो औलाद न रखता हो खुदा उसे औलाद दे और जो दुआ करे खुदा उसकी दुआ क़ुबूल करे और जो खुदा से दुआ नहीं करता खुदा उससे नाराज़ होता है। अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं अपने अहमक़ों को यह दुआ न सिखाओ कि उससे ना फ़रमानी पर इस्तिआनत करेंगे।

तरकीब चहारुम- इमाम अहमद अपनी मुसनद में अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी है मैंने हुज़ूर सययदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते सुना जो वुज़ू कामिल तौर पर करे यानि सुनन व आदाब की रिवायत के साथ फिर दो रकअतें पढ़े यानि पूरी कामिल तौर पर दिल की गहराई के साथ फिर जो कुछ अल्लाह से मांगे आजिल या आजल अल्लाह तआला उसे अता फ़रमाए। इमाम हाफ़िज़ इब्ने हजर असक़लानी फिर इमाम जलालुद्दीन सीवती फ़रमाते हैं इसकी सनद हसन है।

तरकीब पन्जुम- तिर्मिज़ी व नसई व इब्ने ख़ज़ीमा व इब्ने हिबान व हाकिम हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि उनकी वालिदा उम्मे सलीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा एक दिन सुबह को खिदमते अक़दस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हाज़िर हुई और अर्ज़ की कि हुज़ूर मुझे कुछ ऐसे कलिमात तालीम फ़रमावें कि मैं नमाज़ में पढ़ा करूं। इर्शाद फ़रमाया- दस बार अल्लाहु अकबर दस बार सुबहानल्लाह दस बार अलहम्दुल्लिाह कह फिर जो चाहे मांग अल्लाह अज़्ज़ो जल फ़रमाएगा अच्छा अच्छा इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं यह हदीस हसन है। इब्ने ख़ज़ीमा व इब्न हिबान फ़रमाते हैं सही है हाकिम ने कहा ब शराइत हदीस सही मुस्लिम सही है-

अक़्वाल- इसका तरीक़ा यों हों कि दो रकअत नफ़ल ताज़ा वुज़ू दिल की गहराई से पढ़े। क़ाअदे में दरूद शरीफ़ اَللّٰہُ اَکْبَرُ سُبْحَانَ اللّٰہِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ दस दस बार कह कर दुआए मक़सूद ऐसे लफ़्ज़ों से करे जो नमाज़ में ख़लल न पैदा करें जैसे-

اَسْئَلُکَ اَنْ تَقْضِیَ لِیْ حَاجَاتِیْ کُلَّھَا فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ مَاکَانَ مِنْھَا اِلٰی خَیْرٍ وَلَکَ رِضًا یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ۔ اٰمِیْنَ

तरकीब शशुम- तिर्मिज़ी व इब्ने माजा व हाकिम हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी ओफ़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं जिसे अल्लाह तआला या किसी आदमी की तरफ़ चाहत हो चाहिए कि अच्छी तरह वुज़ू करके दो रकअत पढ़े फिर अल्लाह तआला की तरफ़ सना करके और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजे फिर कहे-

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَکِیْمُ الْکَرِیْمُ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ۔ اَسْئَلُکَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِکَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِکَ وَالْغَنِیْمَۃَ مِنْ کُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلَامَۃَ مِنْ کُلِّ اِثْمٍ، لَا تَدَعْ لِیْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَہٗ وَلَا ھَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَہٗ وَلَا حَاجَۃً ھِیَ لَکَ رِضًی اِلَّا قَضَیْتَھَا یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

तरकीब हफ़्तुम- इस्बिहानी अनम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मौला अली करमल्लाहु तआला से फ़रमाया। ऐ अली क्या मैं तुम्हें वह दुआ न बता दूं कि जब तुम्हें कोई ग़म या परेशानी हो इसे अमल में लाओ तो बि इज़्निल्लाह तआला तुम्हारी दुआ क़ुबूल और ग़म दूर हो। वुज़ू के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़ो और अल्लाह तआला की हम्द व सना अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद ख़्वानी और अपने सब मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों के लिए इस्तिग़फ़ार करो फिर कहो-

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ تَحْکُمُ بَیْنَ عِبَادِکَ فِیْمَا کَانُوْا فِیْہِ یَخْتَلِفُوْنَ. لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ، لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ، سُبْحَانَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوَاتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ، اَللّٰھُمَّ کَاشِفَ الْغَمِّ مُفَرِّجَ الْھَمِّ مُجِیْبَ دَعْوَۃِ الْمُضْطَرِّیْنَ اَدْعُوْکَ رَحْمٰنَ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ وَرَحِیْمَھُمَا فَارْحَمْنِیْ فِیْ حَاجَتِیْ ھٰذِہٖ بِقَضَائِھَا وَنَجَاحِھَا رَحْمَۃً تُغْنِیْنِیْ بِھَا عَنْ رَحْمَۃِ مَنْ سِوَاکَ

तरकीब हशतुम- हाकिम हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं रात या दिन में 12 रकअतें हर दो रकअत पर अत्तहियात पढ़कर पिछली अत्तहियात के बाद अल्लाह तआला की सना और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद बजा लाओ फिर सज्दे में फ़ातिहा सात बार आयतल कुर्सी सात बार لا الٰہ الا اللہ وحدہٗ لا شریک لہٗ لہ الملک ولہ الحمد وھو علیٰ کل شیٍٔ قدیرٌ दस बार पढ़ फिर कह اللّٰھم انی اسئلک منتھی الرحمۃ من کتابک واسمک الاعظم وجدک الاعلیٰ وکلماتک التامۃ۔ फिर अपनी हाजत मांग फिर सर उठाकर दाएं बाएं सलाम फेर इस दुआ को बेवकूफ़ों को न सिखाओ कि वे इसके ज़रिए दुआ मांगेंगे तो कुबूल होगी। अहमद बिन हर्ब व इबराहीम बिन अली व अबु ज़करिय्या व हाकिम ने कहा हमने इसका तजुर्बा किया तो हक़ पाया। फ़क़ीर कहता है फ़क़ीर ने भी कुछ बार तजुर्बा किया तीर बे ख़ता यहा तक कि कुछ अज़िज़्ज़ा के मर्ज़ को इमतिदाद शदीद व इश्तदादीद हुआ यहा तक कि एक दिन बिल्कुल नज़अ के आसार तारी हो गए। सब रिश्तेदार रोने लगे फ़क़ीर इन सब को रोता छोड़कर दरवाज़ए करीम पर हाज़िर हुआ। यह नमाज़ पढ़ी इसके बाद मरीज़ की तरफ़ चला वसवसा था कि शायद कि ख़बर नोअ दगर सुनने में आए वहा गया तो बहमदु लिल्लाह तआला मरीज़ को बैठा बातें करता पाया। मर्ज़ जाता रहा। कुछ दिन में ताक़त आ गयी व लिल्लाहिल हम्द। इसकी कामिल तरकीब पंज सूरह रिजवियह में लिखी है।

तरकीब नहुम- हाफ़िज़ अबुल फ़रज इब्नुल जूज़ी बतरीक़ इबान बिन अबी अब्बास अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसे अल्लाह से कोई हाजत दुनिया व आख़िरत की हो। पहले वह कुछ सदक़ा दे फिर बुध जुमरात व जुमा का रोज़ा फिर जुमा को मस्जिद जामा में जाकर 12

रकअतें पढ़े। इस रकअतों में अलहम्दु एक बार आयतल कुर्सी दस बार और आख़िर की दो में अल्हम्दु एक बार कुल हवल्लाहु पचास बार फिर अल्लाह से अपनी हाजत मांगे तो जो भी हाजत हो दुनिया या आख़िरत की अल्लाह तआला पूरी फ़रमाए।

तरकीब दहुम- इमाम अबुल हसन नूरुद्दीन अली बिन जरीर लहमी शतनूफ़ी क़दस सिर्रहुल अज़ीज़ बहजतुल इसरार शरीफ़ में ब सनद सही हुज़ूर सय्यदना गौस आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी कि इर्शाद फ़रमाते है من استغاث بی فی کربۃ کشفت عنہ जो किसी सख़्ती में मेरी दुहाई दे वह सख़्ती दूर हो जाए ومن نادانی باسمی فی شدۃ فرجت عنہ और किसी मुश्किल में मेरा नाम लेकर निदा करे वह मुश्किल हल हो जाए- ومن توسل بی الی اللہ عزوجل فی حاجۃ قضیت لہ और किसी हाजत में अल्लाह अज़्ज़ो जल की तरफ़ मुझसे तवस्सुल करे वह हाजत रवा हो जाए और जो आदमी दो रकअत नमाज़ पढ़े। हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह इख़्लास 11 बार फिर सलाम के बाद नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजे ویذکرنی ثم یخطو الی جھۃ العراق احدی عشرۃ خطوۃ ویذکر اسمی ویذکر حاجتہ فانھا تقضی باذن اللہ تعالیٰ और मुझे याद करे फिर इराक़ शरीफ़ की तरफ़ 11 क़दम चले और मेरा नाम लेता जाए फिर अपनी हाजत ज़िक्र करे तो बेशक वह हाजत अल्लाह के हुक्म से पूरी हो जाए। यह मुबारक नमाज़ उस सुलतान बन्दा नवाज़ अकाबिर आइम्मा दीन जैसे इमाम जहज़म व इमाम याफ़ई व मौलाना अली क़ारी व मौलाना शेख़ मुहक़्क़िक़ मुहद्दिस देहलवी वग़ैरहम रहमतुल्लाह अलैहिम ने नक़ल व रिवायत फ़रमायी और फ़क़ीर ने एक मबसूत रिसाला उसकी तहक़ीक़ व असबात व रद्द शकूक व शुबहात में मुसम्मा बनाम तारीख़ी انھار الانوار من یم صلوٰۃ الاسرار ملقب بہ الحجج البھیۃ لمجیب الصلوٰۃ الغوثیہ और दूसरा रिसाला (1305 हिजरी) अरबी मुख़्तसर इसकी तरकीब

व कैफ़ियत व तरीक़ा हज़रात मशाइख़ क़दस्त इसरार हम में मुसम्मा बनाम तारीखी ازہار الانوار من صبا صلوٰۃ الاسرار लिखा।

तरकीब सलातुल असरार शरीफ़- जिसे दीनी या दुनियावी हाजत हो वह मग़रिब की सुन्नतों के बाद सलातुल इसरार की नीयत से अल्लाह के क़ुर्ब के लिए और सय्यदना ग़ौस आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हदिया पेश करने के लिए दो रकअत नमाज़ पढ़े। अगर ताज़ा वुज़ू कर लें तो बेहतर है और अगर पहले कुछ सदक़ा दे दें तो जल्द मतलब हल हो और रद्द बला का सबब हो। नमाज़ में फ़ातिहा के बाद जो कुरआन याद हो वह पढ़ें अगर क़ुल हुवल्लाहु शरीफ़ 11 बार पढ़े तो बेहतर है। हस्बे दस्तूर नमाज़ पूरी करे फिर क़िब्ला रू खड़े होकर सूरह फ़ातिहा एक बार आयतल कुर्सी 7 बार इसके बाद दरूद शरीफ़-

اللّٰہمّ صل علیٰ سیّدِنا و مولٰینا محمد معدن الجُودِ والکرم والہٖ وابنہ الکریم وامّتہ الکریمۃ یا اکرم الاکرمین وبارِک وسلّم۔

पढ़े फिर अपने दिल को मदीने की तरफ़ मुतवज्जोह करके 11 बार कहे یارسول اللہ یانبی اللہ اغثنی وامددنی فی قضاء حاجتی یاقاضی الحاجات फिर इराक़ की तरफ़ 11 क़दम चले (मोअतदिल) ख़ुज़ूअ व अदब मलहूज़ रहे और यह ख़्याल करे कि गोया बग़दाद में हाज़िर हूं और रोज़ए पाक मेरे सामने है और सरकार इसमें क़िबला रू आराम फ़रमा हैं और चाहिए कि उनके करम पर एतमाद रखे और यह समझे कि वह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु देख रहे हैं और हर क़दम पर यह कहता जाए-

یاغوث الثقلین یاکریم الطرفین اغثنی وامددنی فی قضاء حاجتی یا قاضی الحاجات پھر اللہ سبحانہٗ تعالیٰ سے عرض کرے یا ارحم الراحمین ۳ بار یا بدیع السمٰوات والارض یا ذا الجلال والاکرام بجاہ سید المرسلین وبجاہ ابنہٖ ھٰذا السید الکریم غوثنا الاعظم رضی اللہ عنہ اب مطلب کہے پھر تین بار آمین کہے پھر درود شریف ۲ بار پڑھے بہتر یہ ہے الصلوٰۃ والسلام علیٰ خاتم النبیین والحمد للہ رب العٰلمین

पर ख़त्म करे और बकोशिश रोए और रोना न आए रोना सा मुहं बनाकर अल्लाह से दुआ मांगे अल्लाह उसकी हाजत पूरी फ़रमा देगा।

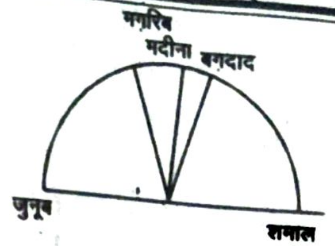

अमल बे नज़ीर क़ज़ाए हाजात : जिसका पढ़ने वाला कभी अपने मक़सद में नाकाम नहीं रहता احب یا جبرئیل بحق بسم اللہ الرحمٰن الرحیم। 786 बार रोज़ाना इशा की नमाज़ के बाद 40 दिन तक बिना नाग़ा पढ़ते रहें और यह नक़्श बिस्मिल्लाह शरीफ़ का चांदी की तख़्ती पर कन्दा करा के पढ़ते वक़्त सामने रखें अव्वल आख़िर 11-11 बार दरूद शरीफ़ और हर दिन जब यह अमल ख़त्म करें तो इसी नक़्श को रोज़ाना ज़ाफ़रान से चीनी की प्लेट पर लिखकर पानी से धोकर पी लिया करें। जब चिल्ला पूरा हो जाए तो एक नक़्श रोज़ाना काग़ज़ पर लिखकर रखें ताकि अमल क़ायम रहे। यह नक़्श हरेक को दे सकते हैं और कन्दा शुदा नक़्श आमिल अपने पास रखे। इन्शा अल्लाह इस अमल का पढ़ने वाला बे शुमार फ़ायदा देखेगा। इसके सैंकड़ों दुश्मन क्यों न हों। इनके शर से महफ़ूज़ रहेगा। हर आदमी मुसख़्ख़र हो दौलत क़दम चूमे बा इज़्ज़त रहे हर दिल अज़ीज़ हो। जो ज़बान से कह दे पत्थर की लकीर हो।

١٩۴	۴۲۴	۴۴
١٣٢	٢٦٢	٣٩٢
۴۶٨	اجب یا جبرئیل بحق بسم اللہ الرحمٰن الرحیم بجملہ حاجات سوا گردانی و مقصود ما دا حسب المدعا بر آوردہ و عزیز گردانی بجملہ مشکلات حل گردانی	٣٢٨

हर मुहिम की आसानी के लिए सिर्फ़ एक रात का अमल

तीर बहदफ़ : दिन को रोज़ा रखे रात को इशा की नमाज़ के बाद

ताज़ा वुज़ू करके बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को एक ही जलसे में 12 हज़ार बार इस तरह पढ़े कि हर हज़ार बार पढ़ने के बाद 2 रकअत नमाज़ नफ़ल पढ़ता जाए इस तरह गोया 24 रकअत नमाज़ नफ़्ल और 12 हज़ार बार बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ी जाएगी। जब यह अमल ख़त्म हो तो 90 बार मन्दरजा ज़ैल क़सम आख़िर तक पढ़े इन्शा अल्लाहु त मवला अलकरीम बड़ी से बड़ी मुश्किल आसान हो जाए। दुआए क़सम यह है- 90 बार पढ़े-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ يَا حَلِيْمُ يَا عَلِيْمُ يَا عَلِيُّ يَا عَظِيْمُ يَا قَيُّوْمُ يَا دَائِمُ
يَا مَنَّانُ يَا سُبُّوْحُ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِفَضْلِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِحَقِّ بِسْمِ اللّٰهِ
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِهَيْبَةِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِمَنْزِلَةِ بِسْمِ اللّٰهِ
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اِرْفَعْ قَدْرِيْ يَا اَللّٰهُ وَيَسِّرْ اَمْرِيْ يَا اَللّٰهُ وَاشْرَحْ صَدْرِيْ
يَا اَللّٰهُ وَاجْبُرْ كَسْرِيْ وَاَغْنِ فَقْرِيْ وَطَوِّلْ فِيْ طَاعَتِكَ عُمْرِيْ وَيَسِّرْ اَمْرِيْ وَمَتِّعْنِيْ
بِسَمْعِيْ وَبَصَرِيْ يَا مَنْ هُوَ كٓهٰيٰعٓصٓ حٰمٓ عٓسٓقٓ الٓمٓ الٓمٓصٓ الٓرٰ الرحم اللّٰهُ
لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ بِاِسْمِ الْهَيْبَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْقُوَّةِ وَبِاِسْمِ الْجَبَرُوْتِ
وَالْعَظَمَةِ وَاَنْ تَجْعَلَنِيْ مِنْ عِبَادِكَ الْمُتَّقِيْنَ وَاَهْلِ طَاعَتِكَ الْمُحِبِّيْنَ
وَاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا وَّنَصْرًا مُّعِيْنًا وَّمَخْرَجًا فِي الدَّارَيْنِ
يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ بِفَضْلِكَ وَبِرَحْمَتِكَ
يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
اَجْمَعِيْنَ

नमाज़ क़ज़ाए हाजत : यह वह नमाज़ है जिसको नमाज़ इशराक़ कहते हैं इसके लिए शर्त यह है कि नमाज़ फ़ज्र के बाद वहीं बैठा ज़िक्रे इलाही करता रहे। और जब सूरज निकलने को 20 मिनट गुज़र जाए तो अपने मक़सद के लिए 4 रकअत नमाज़ इशराक़ की नीयत से इस तरह पढ़े कि पहली रकअत में अलहम्दु के बाद सूरह वश शम्स दूसरी

रकअत में सूरह लैल तीसरी में वज़्ज़ुहा और चौथी में अलम नशरह पढ़कर रकआत पूरी करे और सलाम फेर कर अपने मक़सद की दुआ करे।

अमल हल्लल मुश्किलात : يَا فَتَّاحُ الَّذِيْ فَتَحَ كُلَّ الْاَبْوَابِ 111 बार अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ 11-11 बार पढ़े। 3 या 7 बार या 11 दिन में वर्ना ज़्यादा से ज़्यादा 22 दिन में मक़सद पूरा हो इसके लिए वक़्त इशा के बाद का बेहतर है।

20 का नक़्श हर काम के लिए मुजर्रब है

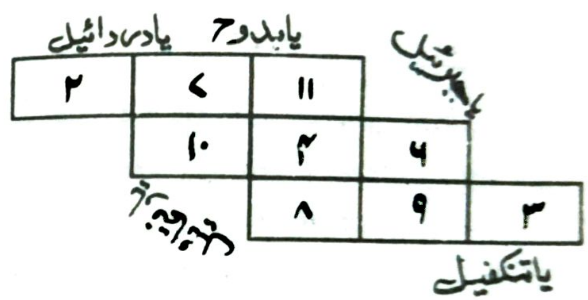

दाना सुलेमानी हासिल करने का मुजर्रब अमल : यह अमल हर मतलब के पूरा करने के लिए बज़रए ग़ैबी इमदाद मुफ़ीद और मुअस्सिर है। चाहिए कि इस अज़ीमत को जिसके आदाद 1093 हैं इसी तादाद से यह अज़ीमत 40 दिन तक तर्क हैवानात के साथ पढ़े जब चालीसवां दिन आए तो उस दिन ख़ाली हुजरे में ख़ूब लोबान वग़ैरह सिलगाए और इस अज़ीमत को हसबे मामूल पढ़े। पढ़ते-पढ़ते नागाह इसका मुवक्किल सफ़राईल जो दानाए सुलेमानी का मुहाफ़िज़ है इस अजीमत का ताबेअ होकर अच्छी तरह ज़ाहिर होगा और सलाम करेगा। चाहिए कि सलाम का जवाब देने के और कोई कलाम न करे जब तक कि 1093 बार अज़ीमत की तादाद पूरी न कर ले यहां तक

जिसके पास होगा उस पर तीर व तुफ़ंग व तलवार वग़ैरह असर न करेगी और किसी तरह का जादू वग़ैरह उसपर कारगर न होगा। जुमला आफ़ात व बलिय्यात से महफ़ूज़ रहेगा। खुशी व शादमानी मयस्सर होगी। हर शख़्स मुतीअ व मुसख़्ख़र रहेगा। मुजर्रब है।

नक़्श सूरह जिन्न : इस नक़्श से आमिल हर क़िस्म के जिन्न आसेब जादू वग़ैरह को दफ़अ कर सकता है।

۲۳۳۵۲	۲۳۳۴۵	۲۳۳۵۰
۲۳۳۴۷	۲۳۳۴۹	۲۳۳۵۱
۲۳۳۴۸	۲۳۳۵۳	۲۳۳۴۶

(1) चाहिए कि एक नक़्श लिखकर गले में डाले।
(2) पलेट पर लिखकर ताज़ा पानी से धोकर मरीज़ को पिलाए।
(3) आसेब या जिन्न ज़्यादा सरकश हो तो चराग़ में इस नक़्श को कन्दा कराकर मरीज़ के सामने रोशन करे कि मरीज़ इसकी रोशनी में बैठे। इन्शा अल्लाह शिफ़ा कामिल हो।

बराए जमीअ मुहिम्मात ख़त्म सग़ीर हुज़ूर : अव्वल 111 बार दुरूद शरीफ़, कलिमा तमजीद 111 बार या शेख अब्दुल कादिर शयअन लिल्लाह 111 बार इसके बाद सूरह अलम नशरह 141 बार फिर सूरह यासीन एक बार पढ़े। उरूज माह में जुमरात से शुरु करे। इन्शाअल्लाह तआला एक हफ़्ता पढ़ने से जुमला मुहिम्मात हस्बे मन्शा हल होंगे। मुजर्रब व आज़मूदा है।

दर हुसूल ईमान व वुसअत रिज़्क़ मुजर्रब है : हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद फ़ौरन बिना बात किए आयतुल कुर्सी पढ़कर यह आयते करीमा एक बार पढ़े-

الکبارہے وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ط اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ط

फिर एक बार सूरह फ़ातिहा, 3 बार सूरह इख़्लास 3 बार दरूद शरीफ़ पढ़कर आसमान की तरफ़ दम करे।

फ़ायदा- हक़ तआला उसकी रूह बिना तवस्सुते मलकुल मौत क़ब्ज़ फ़रमाए और उसी वक़्त जन्नत में दाखिल कर देगा और ज़िन्दगी में रोज़ी उसकी फ़राख़ होगी सकरात मौत में आसानी और क़ब्र में कुशादगी व राहत होगी। ईमान पर खात्मा होगा- इन्शा अल्लाह।

बराए वस्ल दोस्त और भागे व पिछड़े हुए से मुलाक़ात के लिए सिर्फ़ एक दिन का तजुर्बा शुदा हल : चाहिए कि यह इस्म आज़म एक हज़ार एक बार बराए मुलाक़ात वस्ल दोस्त एक ही नशिस्त में पढ़े। बिला तवक़्क़ुफ़ वस्ल हो। आज़मूदा है। इस्म आज़म यह है। اَلْجَمِيْعُ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ الْجَمِيْعِ يَا جَامِعُ كُلِّ شَيْءٍ عَنْ صِفَاتِهٖ لِلْجَامِعِ बाद तमाम इस अमल के 100 बार या जामिउ पढ़े।

कै़द से ख़लासी के लिए मुजर्रब व आज़मूदा 11 दिन का अमल : بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم سُبْحَانَ الْقَادِرِ الْقَاهِرِ الْقَوِيِّ الْكَافِيْ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ وصل اللّٰه عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

रोज़ाना बाद नमाज़ फ़ज्र 100 बार पढ़े। अव्वल आख़िर 3-3 बार दरूद शरीफ़ 7 बार पढ़ने के दौरान किसी से बात चीत न करे। इन्शा अल्लाह 11 दिन न गुज़रने न पाएंगे कि रिहाई की चिट्ठी मिल जाएगी।

हर वह बीमारी जिससे अतिब्बा और मरीज़ आजिज़ आ चुके हों शिफ़ा पाने का मुजर्रब अमल : सूरह काफ़िरून मय बिस्मिल्लाह एक हज़ार एक बार पढ़कर सरसों का तेल एक बोतल पर दम करके महफ़ूज़ रखे। जब कोई मरीज़ किसी क़िस्म के दर्द या तक्लीफ़ का आमिल के पास आए तो ज़रा सा तेल उसमें से दिया जाए और कह दिया जाए कि एक एक क़तरा सोते वक़्त मरीज़ के

किसी मकान में इस किस्म का असर हो तो निहायत खुशख़त लिख कर मकान व दुकान में लटकाएं फ़ौरन आसेब जिन्न व परी वग़ैरह दफ़अ हो मुर्जरब है।

बराए बवासीर खूनी : यह नक़्श पान पर लिखकर गुड़ में लपेट कर मरीज़ को चालीस रोज़ खिलाए। इन्शा अल्लाह

٢٨٩	٢٩٣	٦٦	١٥٢
٢٨٩	٢٩٣	٦٦	١٥٢
٢٨٩	٢٩٣	٦٦	١٥٢

ख़ातिर ख्वाह शिफ़ा हो। नक़्श मुर्जरबात से है चाहिए कि बुद के दिन से यह अमल शुरु करे।

नक़्श जामिअुल कमालात : यह नक़्श सोने के पत्तर पर और मजबूरी में चांदी पर शर्फ़ आफ़ताब यानि जब आफ़ताब बुरुज हमल में हो और क़मर ब नज़र साअद नाज़िर हो कन्दा

٢٥٨	٢٩٢	١٣٧	سلام ١٣١
١٣٦	١٣٢	٢٥٧	٢٩٣
١٣٣	١٣٩	٢٩٠	٢٥٦
٢٩١	٢٥٥	١٣٤	١٣٨

करके जो अपने पास रखे बेहद नफ़ा दीनी व दुनियावी से बहरहयाब हो। इस नक़्श की तारीफ़ व ख़ासियत लिखने से क़लम आजिज़ व ज़बान क़ासिर है।

बराए सरअ यानी मिरगी मुजर्रबुल मुजर्रब : मिरगी का मरज़ बड़ा मूज़ी मरज़ है। इससे बचने के लिए हजारों तदबीरें अख़्तियार करने के बावजूद पूरी तरह कामयाबी नहीं होती मगर आप यक़ीन रखें कि इस नक़्श मुअज़्ज़म की बरकत से मुकम्मल शिफ़ा होगी इन्शा अल्लाह तआला।

तरकीब- हफ़ता या मंगल के दिन सफ़ेद मुर्ग के खून से यह नक़्श

काग़ज़ पर लिखा जाएगा और मरीज़ के गले में मोमजामा करके पहनाया जाएगा। मुर्ग का रंग मुकम्मल सफ़ेद हो किसी और रंग का दाग़ धब्बा न हो। तावीज़ लिखने से

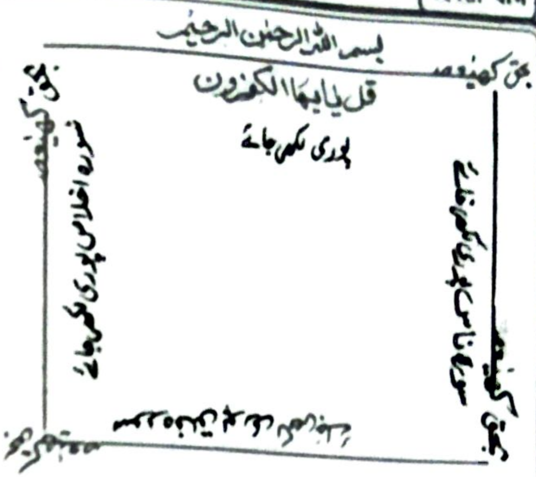

पहले गुस्ल करें और दो रकअत नमाज़ दोगाना पढ़कर 11 अदद शीरीनी लड्डू हों या इमरती या बालूशाही या पेड़े वग़ैरह जो भी अच्छी और पसन्द हो किसी मुसलमान की दुकान से लाकर पहले रख लें। नमाज़ दोगाना पढ़कर फ़ातिहा दें और नफ़ल व फ़ातिहा व शीरीनी का सवाब हुज़ूर बाबा सीन और हुज़ूर ग़ौसे आज़म और हुज़ूर आला हज़रत व दीगर मशाइख़ किराम बसिलसिलए क़ादरिया की अर्वाह पाक को नज़्र करें। इसके बाद तावीज़ लिखें और शीरीनी ग़ुरबा को खास तौर से नाबालिग़ बच्चों को तक़्सीम कर दें (आयतल कुर्सी और चारों सूरतें पूरी पूरी बिल्कुल सही लिखी जाएं)

नक़्श हिफ़ाज़त तीर व तुफ़ंग वग़ैरह : रमज़ान के आख़िर महीने में जुमा के दिन अस्र व मग़रिब के बीच यह नक़्श लिखे और आख़िरी ख़ाने में उसका नाम मय वालिदा के लिखा जाए। यह नक़्श

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم اللھم صل وسلم علی سیدنا محمد والہ

الر	الر	الر	المص	الٓمٓ	الٓمٓ
طسم	طٰہٰ	کھیعص	الر	المر	المٓرٓ
الٓمٓ	الٓمٓ	الٓمٓ	الٓمٓ	طسم	طٰس
حم	حم عسق	حم	حم	ص	یٰس
فلاں ابن فلاں	ن	ق	حم	حم	حم

कि इशा की नमाज़ के बाद ख़िलवत व तन्हाई में दो रकअत नमाज़े हाजत पढ़े हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद 2 बार सूरह इख़्लास पढ़े। सलाम फेरने के बाद 3 बार दरूद शरीफ़ पढ़े और इस्म मुबारक يَاهَيُبَتُ 400 बार पढ़े फिर तीन बार दरूद शरीफ़ पढ़े इसके बाद ख़ामोश बैठा रहे और दिल में इस इस्म की तकरार करता रहे जब आधी रात गुज़रे वुज़ू करके फिर दो रकअत नमाज़े हाजत पढ़े। इसके बाद क़िब्ला रू उल्टे पांव खड़े हो और सीधे पांव के तलवे उल्टे पांव के ज़ानू पर रखे और 14 बार सीधे हाथ की उगंलियों की इस्म मज़कूर पढ़े और उल्टे हाथ की उगंलियों पर गिरहों पर शुमार करता जाए यहां तक कि 14 बार 14-14 बार होकर कुल तादाद 196 बार हो जाए फिर फ़ौरन हब ली रिज़्क़न वासिअन
14 बार पढ़कर 3 बार दरूद शरीफ़ पढ़े और उसी जगह सो जाए अगर सुबह को असर मुरत्तब हो तो दूसरी और तीसरी रात को भी इसी तरह पढ़े इन्शा अल्लाह कैसा ही मुश्किल काम क्यों न हो पूरा होगा। फिर अमल के बरक़रार रखने के लिए 400 बार अव्वल आख़िर 3-3 बार दरूद शरीफ़ बराबर रोज़ाना इस्म يَاهَيُبَتُ पढ़ता रहे। यह अमल मुजर्रबात बात से है और बारहा का तजुर्बा शुदा है। कुछ का काम फ़ौरन हुआ और कुछ का काम दूसरे दिन और कुछ का तीसरे दिन। बहरहाल इस अमल का पढ़ने वाला महरूम नहीं रहा है।

अलहम्दु शरीफ़ का अमल बराए हाजत मुजर्रब है: उम्मुल क़ुरआन यानि सूरह फ़ातिहा को एक ही जलसा में इशा की नमाज़ के बाद से सुबह की नमाज़ तक पांच हज़ार बार मय अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ 11-11 बार पढ़े। ला महाला हाजत पूरी हो। इन्शा अल्लाह तआला गोहर मुराद हासिल हो।

बड़ी से बड़ी मुश्किल हल होने का ला जवाब अमल: मन्क़ूल अज़ सय्यद जलालुद्दीन बुख़ारी रहिमतुल्लाह अलैहि बाद नमाज़

इशा ताज़ा वुज़ू करके दो हज़ार बार मय बिस्मिल्लाह शरीफ़ यह बैत एक ही जलसे में पढ़े फ़ौरन मुश्किल हल हो تَسَهَّلْ يَا اِلٰهِيْ كُلَّ صَعْبٍ بِحُرْمَةِ سَيِّدِ الْاَبْرَارِ سَهِّلْ अगर कुछ मुसलमान बैठकर एक ही जलसे में सवा लाख बार इसका ख़त्म पढ़ें तो बड़ी से बड़ी मुश्किल आसान हो।

ला जवाब इस्तिख़ारा: या يَا شَيْخ عَبْدُ الْقَادِر جِيْلَانِي شَيْئًا لِلّٰه एक हज़ार बार अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ पढ़कर सीधे हाथ की हथेली पर दम करके सर के नीचे रखकर सो जाए। इन्शा अल्लाह हर मुश्किल का हल इसी रात में मालूम हो जाएगा और जो भी जायज़ मक़सद होगा यक़ीनन हासिल होगा।

नक़्श दफ़अ जिन्न व आसेब: यह नक़्श मुअज़्ज़म चांदी के पत्तर पर कन्दा करके मरीज़ को अपने

पास रखना चाहिए और रोज़ाना इसी का पानी धोकर खुद पिए या किसी मरीज़ को पिलाए फिलफ़ौर शिफ़ा पाए।

नक़्श दफ़अ सहर आसेब देव परी मुजर्रब है: यह तावीज़ कागज़ पर लिखकर मरीज़ को दिखाएं खुदा के हुक्म से आसेब देव परी वग़ैरह फिलफ़ौर भाग जाए और मरीज़ को शिफ़ा हो। अगर

कि वह खुद कलाम करेगा और पूछेगा कि तेरा क्या मक़सद है मुझ से तलब कर इस सवाल का जवाब अज़ीमत की तादाद ख़त्म करने के बाद दे यानि यह कहे कि मेरा मक़सद तुम्हारी तसख़ीर है और मुझसे कलमए मुहम्मदी की क़सम के साथ यह अहद करो कि मैं तुम को तलब करूं फ़ौरन हाज़िर हो। जब यह अहद मुकम्मल हो जाए तो इस मुवक्किल को रुख़्सत कर दे और इस अज़ीमत को रोज़ाना 290 बार विर्द में रखे ताकि अमल क़ायम रहे।

अज़ीमत यह है : أَجِبْ يَا صَفْرَائِيلُ بِحَقِّ يَا صَمَدُ يَا قَيُّومُ يَا رَبُّ

अगर एक चिल्ला में मुवक्किल हाज़िर न हो तो तीन चिल्ले तक बराबर हसबे मामूल यह अमल पढ़ता रहे इन्शा अल्लाह तआला तीसरे चिल्ले में ज़रूर जरूर मुसख़्ख़र होगा और अहद व पैमान करेगा । इसके बाद अगर चाहे कि किसी मतलब के लिए मुवक्किल को बुलाए या दानए सुलेमानी तलब करे तो इसका तरीक़ा यह है कि गोशए तन्हाई में खूब लोबान सुलगाए और गुस्ल करके पाक जामा पहने और इस अज़ीमत को 390 बार पढ़े जब वह हाज़िर हो और सलाम करे तो सलाम का जवाब देने के बाद अपना मतलब बयान करे या दानए सुलेमानी को उससे तलब करे। फ़ौरन उस दाने को लाने के लिए वह मुवक्किल ग़ायब हो जाएगा उसके वापस आने के वक़्त तक उसी जगह आमिल ठहरा रहे यहां तक कि वह हाज़िर होकर मतलूब दाना आमिल के सामने पेश करेगा चाहिए कि ताज़ीम करे इस दाने की और इसे सर आंखों पर रखे और हैज़ व निफ़ास वाली औरत और जुनुब वाले मर्द की नज़र से पोशीदा रखे और यह भी ज़रूरी है कि इस दाने को ख़िलाफ़े शरअ काम के लिए हरगिज़ तलब न करे क्योंकि ऐसी नीयत से अगर अमल किया गया तो मुवक्किल हरगिज़ मुसख़्ख़र न होगा बल्कि नुक़सान पहुंचाएगा। इसके ज़रिए हर हर जायज़ काम लिया जा सकता है जिसका तरीक़ा वह मुवक्किल खुद बतलाएगा।

तम्बीह- यह अमल मुजर्रबात से है मगर इसमें तर्क हैवानात जलाली ज़रूरी है जिसकी तशरीह तवील है बेहतर होगा कि लौकी की तरकारी

बिना मिर्च की और जौ की रोटी खुद पकाकर खाता रहे और रोज़ाना पानी दरिया का किसी नमाज़ी आदमी से मंगा कर रख ले और अमल ख़त्म होने तक उसी को पीता रहे। मख़्लूके खुदा और दीन की खिदमत की नीयत से इस अमल को पढ़े तो इन्शा अल्लाह एक ही चिल्ले में कामयाबी की सौ फ़ीसदी उम्मीद है। अगर यही नीयत रही तो आमिल की ज़रूरियाते ज़िन्दगी उम्मीद व ख़्याल से ज़्यादा कुदरतन पूरी होंगी कि आमिल खुद हैरान रह जाएगा।

दावत या वहाब : नो चन्दी जुमरात को बशर्ते कि इस दिन क़मर दर अक़रब न हो सुबह की नमाज़ के बाद सूरज निकलने के फ़ौरन बाद दो रकअत नमाज़े हाजत ऐसे मकान में पढ़े कि कोई उसे न देखे फिर 3 बार दरूद शरीफ़ पढ़े इसके बाद दिल की गहराई से 14 हज़ार बार इस्म मुबारक يَا وَهَّابُ पढ़े (आला हज़रत क़दस सिर्रहु के पीर मुर्शिद ने इसी तरह लिखा है और इसमें किनाया है या वहाब) और इस तादाद को ख़त्म करने के बाद भी 3 बार दरूद शरीफ़ पढ़े और कोशिश करे कि शुमार में फर्क न आने पाए (शुरु करने से पहले तसबीह के दानों को गिन ले कि पूरे 100 हैं या कम ज़्यादा अगर हों तो निकाल दे और कम हों तो पूरे 100 करे ताकि तादाद में भूल न हो) इसके बाद रोज़ सुबह को और सूरज निकलने के बीच यानि सूरज निकलना शुरु न हो 14 बार सीधे हाथ की उगंलियों की में पढ़े पढ़ने का तरीक़ा यह है कि 14 इस तरह पढ़े कि सीध हाथ की छंगलया के नीचे ऊपर को हर गिरह पर यह इस्म पढ़ना शुरु करे यहां तक कि अगूंठे के बराबर वाली उंगली तक 12 बार हो जाएगा। जब 12 बार इस तरह पूरा कर चुका तो अगूंठे के दो गिरहों पर दो बार पढ़े ताकि 14 बार पूरा हो जाए। हर दिन जिस हाल में भी हो वुज़ू या बे वुज़ू यहां तक कि अगर यह डर हो कि सूरज निकल आएगा तो बहालते गुस्ल ही पढ़ ले ताकि क़ब्ल तुलू आफ़ताब की क़ैद में फ़र्क न हो। 15 दिन या 21 दिन इसी तरह पढ़ता रहे ताकि अमल में कुव्वत व असर पैदा हो जाए। किसी हाजत के लिए पढ़ना हो तो चाहिए

कान में डालें और दर्द की जगह मालिश करें। इससे हर किस्म की तकलीफ़ रफ़अ होगी। अगर सोते में तरह तरह की ख्वाबें डरावनी नज़र आती हों तो उससे नजात होगी। अगर किसी किस्म का ख़तरा आसेब वग़ैरह का होगा तो उससे नजात होगी और जो दवा मरीज़ के इस्तेमाल में आ रही थी और असर नहीं करती थी। इन्शा अल्लाह असर करेगी।

बिस्मिल्लाह शरीफ़ के पढ़ने का एक ख़ास तरीक़ा जिसके पढ़ने से ज़िन्दगी में किसी दूसरे अमल की ज़रूरत न पड़ेगी : हर दिन फ़ज्र की नमाज़ में सुन्नत व फ़र्ज़ के बीच सिर्फ़ 90 बार पढ़ लिया करें अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ 3-3 बार पढ़कर जुमला मक़ासिद की दुआ कर लिया करें। नाग़ा न करें। और सूरज निकलने व डूबने के वक़्त व ज़वाल के वक़्त 90 बार रोज़ाना का विर्द मय अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ 22-22 बार। हर वज़ीफ़े से बेनियाज़ कर देगा।

बराए वुसअत रिज़्क़ व अदाए क़र्ज़ व हुसूलयाबी क़र्ज़ के लिए मुजर्रब अमल : यह अमल सिर्फ़ तीन दिन इस तरकीब से पढ़ लें कि तीन दिन रोज़ा रखें और हर दिन इशा की नमाज़ के बाद ये दोनों आयतें 12 हज़ार बार पढ़े ताकि सेहरी तक अमल पूरा हो जाए। बाद में सेहरी खाएं। इन्शा अल्लाह ग़ैब से रोज़ी पहुंचे। क़र्ज़दार हो तो आसानी के साथ अदा हो जाए और अगर किसी पर अपना पैसा आता हो और वह न देता हो तो आसानी से वसूल हो जाए। तीन दिन बाद हर दिन बाद नमाज़ फ़ज्र 101 बार मय अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ 3-3बार पढ़ते रहें ताकि अमल क़ायम रहे। आयते दोनों ये हैं- أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۝ أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ

अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ : 11 बार

माशूक़ ख़ुद आशिक़ हो जाए : यह दुआ चीनी की प्लेट पर लिखकर पानी से धोकर चाय या शरबत में वैसे ही महबूब को पिला दें और अगर शोहर बीवी से मुहब्बत न करता हो तो काग़ज़ पर लिखकर चांदी के तावीज़ में रखकर औरत इस नक़्श को चोटी में बांधे और अगर मर्द से उसकी बीवी नफ़रत करती हो तो शोहर अपने बाज़ू पर बांधे। इन्शा अल्लाह तआला किसी दूसरे नक़्श की ज़रूरत न पड़ेगी। दुआ यह है-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ۔ یاسید یاسید یاسید ، اَللّٰھُمَّ مَوَدَّتْ وَمَحَبَّتْ بین فلاں بن فلاں علی حب فلاں بنت فلاں کَمَا بَیْنَ اٰدَمَ وَحَوَّا کَمَا بَیْنَ اِبْرَاهِیْمَ وَسَارَا کَمَا بَیْنَ یُوْسُفَ وَزُلَیْخَا کَمَا بَیْنَ مُحَمَّدٍ وَعَائِشَۃَ وَمَارِیَہ وَکَمَا بَیْنَ عَلِیٍّ وَفَاطِمَۃَ الزَّهْرَا وَبِحَقِّ یُحِبُّوْنَهُمْ کَحُبِّ اللّٰهِ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِلّٰهِ وَبِحَقِّ الرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْاٰن وَبِحَقِّ بِسْتُ حُرُوْفِ الْجد وَبِحَقِّ اٰیَۃ اسم اعظم یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْن وصلی اللّٰه علی خیر خلقہ محمد وعلی سائر الانبیاء والمرسلین وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْن ۔

बराए मुहब्बत ज़न व शोहर : यह नक़्श लिखकर अगर मर्द से बीवी मुतनफ़्फ़िर है तो मर्द अपने उल्टे बाज़ू पर बांधे और अगर बीवी से शोहर मुतनफ़्फ़िर है तो औरत अपने सीधे बाज़ू पर बांधे। मोमजामा

۷۸۶

۱۴	۲۰	۲۶	فلاں بن فلاں علی حب فلاں بنت فلاں
۲۴	۲	۱۲	۲۲
۴	۳۰	۱۶	۱۰
۱۸	۸	۶	۲۸

ज़रूरी है।

बराए उलफ़त व मुहब्बत ज़ोजैन मुजर्रब है :

بسم الله الرحمن الرحيم يحبهم ويحبونهم كحب الله و
الذين آمنوا أشد حبا لله ولو يرى الذين ظلموا إذ يرون العذاب يحبهم ويحبونهم
اللهم ألف بينهما كما ألفت بين آدم وحوا اللهم ألف بينهما كما ألفت بين يوسف
وزليخا اللهم ألف بينهما كما ألفت بين ابراهيم وسارة اللهم ألف بينهما كما ألفت
بين محمد وخديجة اللهم ألف بينهما كما ألفت بين علي وفاطمة الزهرا صلى الله
تعالى عليهم السلام ورضي الله عنهما يا سيدي يا سيدي يا سيدي الحب فلان
بن فلان على قلب فلان بن فلان .

आसेब देव परी जिन्न वग़ैरह का इलाज

असमाए बारी तआला से : आसेब देव परी जिन्न और जो कुछ भी असर हो उसके दफ़अ के लिए तजुर्बा शुदा आसान अमल- पहले धागे से 11 तार सुर्ख़ मरीज़ के क़द के बराबर लेकर गंडा बनाए और तीन गिरह लगाए। हर गिरह पर यह अज़ीमत एक बार पढ़कर दम करके गिरह लगाता जाए और निगाह रखे। अज़ीमत यह है-

بسم الله الرحمن الرحيم بسم الله واصبر وما صبرك الا بالله ولا تحزن عليهم ولا تك
في ضيق مما يمكرون ان الله مع الذين اتقوا والذين هم محسنون ......

फिर शाम के वक़्त एक महफ़ूज़ जगह को साफ़ करके गंडे को मरीज़ अगर मर्द है तो उसकी दस्तार या टोपी में पीछे की तरफ़ लपेटे और अगर औरत है तो सर की चोटी में लपेट दे और साफ़ की हुई ज़मीन पर मरीज़ को बैठाए। उसके सामने मिट्टी का एक बर्तन कोरा जिसपर

पानी न पहुंचा हो ख्वाह हांडी हो या ठिलया रखे और इसके ऊपर एक चराग़ मिट्टी का नया रखे और फ़लीते पर नयी रूई लपेट कर रोग़न कुन्जुद यानि तिल का तेल डालकर फ़लीता रोशन करे और मरीज उसकी रोशनी की तरफ़ देखता रहे लेकिन इस अमल से पहले यह हिसार पढ़कर मरीज़ पर दम कर दे- بسم الله الرحمن الرحيم والشمس والقمر والنجوم

مسخرات بامره الا له الخلق والامر تبارك الله رب العالمين ۔ ہر کس کہ در وجود
کہ در اندام و آنچہ در شکم و آنچہ در گوش و بینی و چشم فلاں بن فلاں را اگر عورت ہو تو فلاں بنت فلاں
کے ، سایہ سخت شدہ است یا بنظر سخت شدہ است آمدہ زود بسوزد بسوزد بحق سلیمان بن داؤد
علیہما السلام و بحق اھیا اشراھیا و بحق علیقا ملیقا تلیقا انت تعلم ما فی قلوبھم
و بحق لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم و بحق یا
مؤمن یا مھیمن

फिर फ़लीता रोशन करे और मरीज़ से कहो कि इसकी रोशनी को गौर से देखे तो जो कुछ आसेब होगा मरीज़ के सर पर हाज़िर होगा या उसके सामने आकर जल जाएगा। इस फ़लीते को सीधी तरफ़ से लपेटा जाए और उल्टी तरफ़ से जलाया जाए।

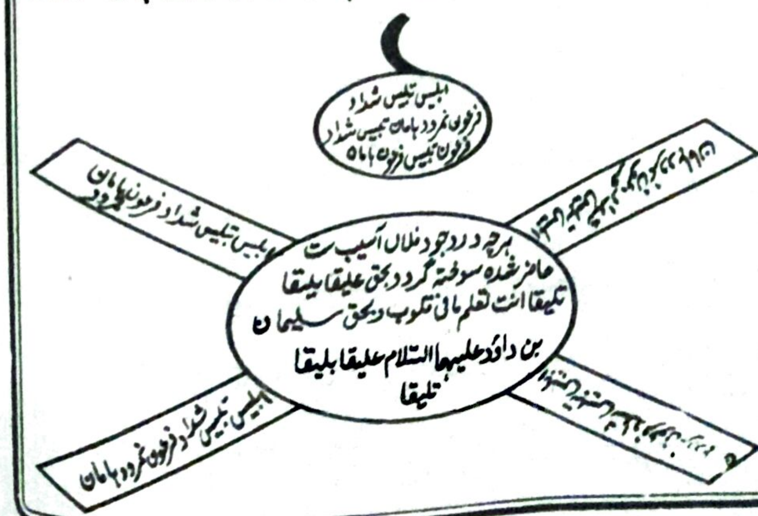

बराए दफ़अ जुनून व पागल : ब रोग़न कुन्जुद आयत करीमा قل اللّٰھم مالك الملك تا بغیر حساب मय बिस्मिल्लाह 7 बार पढ़कर दम करें और इस रोग़न को सर से लेकर नाफ़ के ऊपर तक रोज़ाना 40 दिन मालिश करें। इन्शा अल्लाह जुनून व पागलपन दफ़अ हो जाएगा।

खुद अपनी रूह को हाज़िर करने का अमल : जो कोई इस ज़िक्र की मदावमत करे अपने मुर्शिद की इजाज़त से तो अल्लाह के हुक्म से उसकी रूह हाज़िर होगी जो मक़्सद हो मालूम करे। पढ़ने का तरीक़ा यह है कि चार ज़ानू बैठे और दोनों हाथ घुटनों पर रखे और 21 बार या रब कहे। इसके बाद या रूह आसमान की तरफ़ ज़रब करे और या रूहुर्रूह दिल पर ज़रब करे यहां तक कि महवियत तारी हो। इसके बाद मुराक़बा करे और मुतवज्जह क़ल्ब हो। क़ल्ब व रूह खुद रा बसोऐ रूह मतलूब कुनद उम्मीद क़वी अस्त कि मुलाक़ी शुवद ब बरसद चीज़े कि मुराद दारद।

नक़्श ख़लासी जिन्न व आसेब वग़ैरह : अगर किसी दुकान या मकान में कोई देव, जिन्न या आसेब या कोई ऐसी शै जो तक्लीफ़ पहुंचाती हो उसे दफ़अ करने के लिए नीचे का नक़्श लिखकर मकान की दीवार में लगाए। इन्शा अल्लाह इसके शर से ख़ातिर ख़्वाह नजात हो और बे शुमार बरकत का ज़हूर हो।

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

بحق یا جبرئیل	لا الٰہ الا اللّٰہ محمد رسول اللّٰہ	بحق یا عزرائیل
[illegible]	اللّٰہ لا الٰہ الا ھو الحی القیوم لا تاخذہ سنۃ و لا نوم ۔ تا ۔ وھو العلی العظیم ۔ ۔ ابرسا سبرسا سلہسا سارسا	[illegible]
بحق یا میکائیل	[illegible]	بحق یا اسرافیل

बच्चों का असानी से दूध छुड़ाने का अमल : अक्सर बच्चों का जब दूध छुड़ाया जाता है तो वे बहुत रोते हैं और बड़ी ज़िद करते हैं कि बच्चे के मां बाप परेशान हो जाते हैं और बच्चा भी बड़ा कमज़ोर हो जाता है। यह दुआ चीनी की प्लेट पर लिखकर पानी से धोकर वह पानी बच्चे को पिला दे मौला तआला सब्र अता फ़रमाए। दुआ यह है- بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم المتین الذی یرزق من یشاء بقوۃ المتین ط برحمتك یا ارحم الراحمین

बराए तसख़ीर ख़ल्क़ अज़ हुज़ूर गौस आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु : یا رحمٰن کل شئ و راحمہ एक बार रोज़ाना मय आख़िर व अव्वल दरूद 10-10 बार पढ़ता रहे या कम से कम इस इस्म मुबारक को हर दिन 360 बार रोज़ाना मय अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ 3-3 बार विर्द में रखे। मख़लूक़ का हुजूम हो।

नक़्श दूसरे को अपनी मुहब्बत में मुब्तला करने का: अगर किसी को जायज़ उमूर के लिए मुसख़्ख़र करना हो जैसे अपने ख़ानदान में कोई लड़की है जिससे ज़ैद शादी करना चाहता है और वह लड़की या लड़की के वुरसा राज़ी नहीं होते तो चाहिए कि उस लड़की और उसकी मां के नाम के आदाद निकाले और इस आयत करीमा के आदाद मय बिस्मिल्लाह 1996

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم لقد جاءکم رسول من انفسکم عزیز علیہ ما عنتم حریص علیکم بالمؤمنین رؤف الرحیم

के आदाद में जमा करके आदाद इस आयत करीमा के 1996 हैं और उस लड़की और लड़की की मां के नाम आदाद इसमें शामिल करके नक़्श मुरब्बअ ऐसे वक़्त में मुरत्तब करे कि कमर बुरुज सोर या बुरुज सरतान में हो और ज़ुहरा या मुशतरी पांचवी या नवीं नज़र से क़मर

को देखता हो और मोमजामा करके फिर शब यकशम्बा में आधी रात गुज़र जाने के बाद वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ नफ़ल पढ़े और सूरह फ़ातिहा के बाद दोनों रकअतों में 20-20 बार

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ سے وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

तक पढ़े बाद सलाम 100 बार दरूद शरीफ़ पढ़कर अपने सर को सज्दे में रखे और 20 बार इस तरह दुआ मांगे या रहीम फलां रा बर मन मेहरबां गरदां बाद फ़रागत इन्शा अल्लाह तआला उसका दिल मेहरबान हों। इस अमल की तारीफ़ तहरीर में नहीं आ सकती मुजर्रब मुजर्रब मुजर्रब।

अमल बराए बुग्ज़ व जुदाई : अगर किसी मर्द की किसी औरत या मर्द लड़के से नाजायज़ दोस्ती व ताल्लुक़ हो उसे छुड़ाने और दोनों में जुदाई और बुग्ज़ डलवाने के लिए इस अमल को काम में लाए। इसके सिवा किसी दूसरे काम में कभी भी काम में न लाए वर्ना नुक्सान होगा चाहिए कि कच्ची ईट लाए और उस पर नीचे का नक़्श और अमल लिखे दरिया में डाल दे ख़ातिर ख्वाह जुदाई हो। मुजर्रब व आज़मूदा है नक़्श व आयत यह है- ٧٩ ١١١ ٧ ١١١ ٤ ١١١١ ک

صر ط ط ٨ ٨ ١١ ١١ ط ط ١١ م فلاں بن فلاں علی بغض فلاں بنت فلاں و ١١١ ٨ ط ٣٣ ١١ ٥ ٣

الْقَارِعَةُ مَا الْقَارِعَةُ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ فَأَمَّا مَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ نَارٌ حَامِيَةٌ بِحَقِّ اٰهِيًا اَشَرَاهِيًا وَبِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

अमल बराए मुहब्बत मुजर्रब व आज़मूदा : हर दो अमल मुजर्रब व आज़मूदा

ہردو عمل مجرب وآزمودہ است باید کہ ایں آیہ کریمہ را درمیان بر ہر خوردنی بخواند و شخصے را کہ ازروے محبت باشد اورا خوردن دہد انشاء اللہ درمیان ہردو محبت تمام پیدا شد آیۃ مذکور نیست بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ يُحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فلاں علی فلاں عاشق زار و بیقرار گردد اشد حبا للہ بعدہ صد مرتبہ یا دُرود اوّل آخر درود ۲۰۲ بار ہفت مرتبہ آیۃ مذکور را بمع اسم مذکور بر خوردنی بخواند وقت خواندہ باید کہ در دہان خود نبات یا قند یا از قسم شیرینی دیگر خوردہ باشد۔

दीगर :

हज़रत शेख़ फ़रीदुद्दीन गंज शकर की यह अफ़सूं किसी खाने की चीज़ पर सौ बार पढ़कर मतलूब को खिलाए और अगर खिलाना मुमकिन न हो तो कागज़ पर लिखकर फ़तीला बनाए और रुख उसका जानिब मकान मतलूब रखे और शहद और घी से चराग़ रोशन करे चाहिए कि ये दोनों अमल बाद नमाज़ इशा करे।

इस्तिख़ारा बराए ख़लासी महबूस व सेहत बीमारान व मालूम करना दफ़ीना वग़ैरह : चाहिए कि सोते वक़्त तन्हाई अख़्तियार करे कि इस रात कोई औरत क़रीब न आए। ताज़ा वुज़ू करे लिबास व बिस्तर पाक हो सूरह वश्शम्स वल्लैल मय बिस्मिल्लाह 7-7 बार पढ़े इसके बाद कहे اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ فَرَجًا مِّنْ اَمْرِيْ तो पहली रात या दूसरी या सातवीं रात में कोई आकर ख़बर देगा कि क़ैदी की ख़लासी किस तरह होगी या उस बीमार के लिए कौन सी दवा और कौन सी तदबीर कारगर होगी। इस अमल के ज़रिए बहुत से क़ैदियों ने ख़लासी पायी। ला इलाज बीमार शिफ़ायाब हुए। ग़ायब का हाल कि कहां है ज़िन्दा है या मुर्दा माले मदफ़ून इससे मालूम हुआ है। दूसरी रिवायत में सूरह वश्शम्स व सूरह इख़्लास का पढ़ना बताया गया है। चाहिए कि मुह किब्ला रू सीधे पहलू पर सोए। अगर महली दूसरी पांचवी अदा न हो या पढ़ने में सेहत का ख्याल न रखा या लिबास व बिस्तर में या पोशीदा मुक़ाम में नजासत का खतरा है वर्ना कोई

सिलसिले में कुछ हिदायतें दर्ज ज़ैल हैं-

पहली हिदायत- हर अमल बा मुवक्किल में तहरीर हो या न हो तर्क जलाली व जमाली ज़रूरी है जिस तरह अमल से अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ 3 बार सा 7 बार या 11 बार पढ़ना ज़रूरी है

दूसरी हिदायत- क़ल्ब व ज़बान व चश्म का ममनूआते शरअ से महफ़ूज़ रखना ज़रूरी है।

तीसरी हिदायत- पाकीज़गी व तहारत के साथ अच्छी ख़ुश्बू में बसा होना ज़रूरी है कि मुवक्किलीन पाकी व तहारत और ख़ुश्बू को बहुत पसन्द करते हैं।

चौथी हिदायत- जिस्म व लिबास की पाकी के साथ क़ल्ब व नीयत की पाकी भी शर्त है किसी नाजायज़ ख्याल को दिल में जगह न दें वर्ना नुक़्सान का ख़तरा है

अमल बा मुवक्किल का अहसन तरीक़ा : इन शराइत व हिदायतों पर अमल करने की सलाहियत व क़ाबलियत और अहलियत व क़ुदरत हो। जब भी फ़क़ीर की राय यह है कि अमल बा मुवक्किल करे तो मुवक्किल को ताबेअ व सामने हाज़िर होने की नीयत से न करे। आमिल का मक़्सद यह हो कि हमारा फ़लां आदमी जो ग़ायब है हाज़िर हो फ़लां की बीवी जो मैके गयी है शोहर के घर आ जाए वग़ैरह वग़ैरह। ये तमाम उमूर मुवक्किल की हाज़िरी के बिना भी पूरे हो सकते हैं तो फिर क्या ज़रूरत है कि मुवक्किल को अपने ताबेअ किया ही जाए। ऐसी सूरत में किसी अमल बा मुवक्किल को तीन दिन या हसबे हिदायत जितने दिनों का हो बा शराइत करें और नीयत सिर्फ़ यह हो कि हमारा फ़लां काम हो जाए या जब भी मेरा कोई काम हो और मैं उस काम के लिए इस्म पाक का विर्द करूं तो मेरा काम अंजाम दिया जाए। इन्शा अल्लाह वह काम अंजाम पाता रहेगा। और आप अमल के मुन्क़तअ होने रजअत होने तकलीफ़ व नुक़्सान उठाने से भी बचे रहेंगे। इस तरह यह भी मुमकिन है कि मुवक्किल

ख़ुद सामने आ जाए। फ़क़ीर ने इस्म या अल्लाह का अमल तीन बार किया। पहली बार जब यह अमल किया तीसरे दिन ख्वाब में फ़रमाया गया कि तेरे काम अंजाम पाते रहें। मुवक्किल को ताबेअ करके क्या करेगा। दूसरी बार कई माह बाद फिर यही अमल किया तो दूसरे ही दिन कुछ हिदायतें दी गयी जिनका खुलासा तहरीर कर दिया गया आगे आपको अख़्तियार है। मेरे एक दोस्त जिन्होंने इस अमल की इजाज़त के लिए बड़ी खुशामन्द की तो फ़क़ीर ने पूछा कि आप एक बार कोई काम कर लेना चाहते हैं या उम्र भर के लिए बोले उम्र भर के लिए। मैंने कहा कि तीन दिन बतरीक़ मज़कूर अमल कर लें इसके बाद जितना सफर और बीमारी वग़ैरह हर हालत में आसानी से निभ सके। इस्म या अल्लाह पढ़ते रहें अगरचे सौ बार ही हो या 11 ही बार बाक़ायदा बा वुज़ू बैठकर पढ़ लिया करें। ऐसा ही किया । पहले वे बड़ी तक्लीफ़ वाली ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे आज बड़े ऐश में हैं और कहते हैं कि जिस किसी चीज की ख्वाहिश होती है वह किसी न किसी ज़रिए से उसी दिन मिल जाती है। वलिल्लाहिल हम्द।

इक़बाल अहमद नूरी

25 मार्च 1973

क़दस सिर्रुहु के मज़ार मुबारक पर मुराक़बा करने से अचानक इलका हुआ कि दो इस्मों का मुरक्कब नक़्श है। बददूह और वहाब। सुबहानल्लाह क्या कहना।

٧٨٦

नक़्श चेचक जदीद बे नज़ीर : नम्बर 20 पृष्ठ 20 पर दर्ज है अगर चेचक निकल आयी हो तो यह नक़्श बांधो जिसकी बरकत से आसानी से

تدعون	بل اياه	الرحيم	الرحمن	الله	بسم
فيكشف	تدعون	بل اياه	الرحيم	الرحمن	الله
ما تدعون اليه	فيكشف	تدعون	بل اياه	الرحيم	الرحمن
ان شاء	ما تدعون اليه	فيكشف	تدعون	بل اياه	الرحيم
وتنسون	ان شاء	ما تدعون اليه	فيكشف	تدعون	بل اياه
ما تشركون	وتنسون	ان شاء	ما تدعون اليه	فيكشف	تدعون

ढल जाएगी अगर कुदरत की तरफ़ से वक़्त पूरा नहीं हुआ है तो ब सेहत व सलामत रहे क्योंकि अक्सर बच्चे चेचक में अपनी आंखें खो बैठते हैं कुछ के हाथ पांव बेकार हो जाते हैं। इन्शा इल्लाह इस से महफ़ूज़ रहेंगे। बेहतर है कि नक़्ल करके घोकर पिलाएं।

अमल बा मुवक्किल के मुताल्लिक़ खुसूसी हिदायात:

यूं तो हर अमल बा मुवक्किल होता है क्योंकि हर आयत और इस्म बल्कि हर हर्फ़ के मुवक्किल होते हैं जिसकी तिलावत करने से वह मुवक्किल जो इस हर्फ़ या इस्म के ताबेअ होते हैं अल्लाह के हुक्म से आमिल के काम को सर अंजाम देते हैं मगर इस्तिलाह आमिलीन में अमल बा मुवक्किल उसे बोलते हैं जिसके ज़रिए मुवक्किल को आमिल अपने ताबेअ बनाता है और मुवक्किल आमिल के सामने बतरीक़ अमल अच्छी या ख़ौफ़नाक शक्ल में ज़ाहिर होकर आमिल की इताअत का वायदा करता है और आगे के लिए उसे बुलाने का

तरीक़ा मालूम किया जाए तो वह तरीक़ा भी खुद ही बताता है

मुवक्किल की क़िस्में : हर इस्म के पांच मुवक्किल होते हैं। मुवक्किल अुलवी जमाली, मुवक्किल अुलवी जलाली। मुवक्किल सिफ़ली जमाली, मुवक्किल सिफ़ली जलाली, मुवक्किल क़ुदसी।

मुवक्किल क़ुदसी- अहले तक़्वा या अहलुल्लाह ही ताबेअ कर सकते है। हरेक की ताक़त से बाहर है।

मुवक्किल अुलवी जलाली व जमाली- अहले इस्लाम या दूसरे लफ़्ज़ों में सही अक़ीदा अहले सुन्नत के सिवा बद अक़ीदा मज़हब मुर्त्तद तो क्या सुलह कुल्ली क़िस्म के तज़बज़ुब सुन्नी भी इसमें कामयाब नहीं होते। बल्कि कुतुब आमाल से कोई अमल करे भी तो नुक़्सान पहुंचने का यक़ीन है।

मुवक्किल सिफ़ली जलाली व जमाली में किसी की क़ैद नहीं। हर फ़र्द कर सकता है आम तौर से अमल सिफ़ली मुवक्किल में आमिल नाजाइज़ उमूर की तरफ़ ज़्यादा माइल रहता है और मुवक्किल से भी ऐसे ही काम लेता है जिसकी वजह से अक़्ल व ख़िर्द के साथ जानी व माली नुक़्सान भी उठाना पड़ता है अगर सिर्फ़ जाइज़ उमूर में इन से काम लिया जाए तो किसी क़िस्म के नुक़्सान का ख़तरा नहीं।

अमल बा मुवक्किल अुलवी जमाली व जलाली करते वक़्त नीयत सादिक़ है तो उसका आमिल उमूर ख़ैर ही की तरफ़ माइल होता जाएगा यहां तक कि मुवक्किल इससे मानूस होकर ताबेअ हो जाते हैं।

हिदायत अमल बा मुवक्किल- आम तौर से अमल बा मुवक्किल की तरफ़ ज़्यादा नज़रें उठती हैं। शमा अव्वल में इस्म या अल्लाह का अमल बा मुवक्किल दर्ज है जो सिर्फ़ तीन दिन का है। अक्सर हज़रात की नज़रे इन्तख़ाब उस पर पड़ी कुछ ने तो बिना इजाज़त ही अमल शुरु कर दिया। नतीजा यह हुआ। कि अमल पूरा ही नहीं कर सके और बा इजाज़त किया और पूरी तरह कामयाब हुए। इस

अपने हमराह पाक चिकनी मिट्टी के 7 ढेले ले जाएं और किसी टूटी हुई क़ब्र (पुरानी) के पास इस तरह बैठें कि मुंह क़िब्ले की तरफ़ रहे और यासीन शरीफ़ एक बार पढ़कर एक ढेले पर दम करें और यह कह कर क़ब्र में डाल दें कि इलाही फ़लां इब्न फ़लां का दिल शराब या जुए या ज़िना से ऐसा ही मुर्दा हो जाए जैसा कि यह मुर्दा पड़ा है (यानि जिस क़िस्म की बुरी आदत छुड़ाना हो उसी बदकारी का नाम लें) इसी तरह फिर दूसरी बार पढ़ें और दूसरे ढेले पर दम करके वही ऊपर वाले जुमले कह कर क़ब्र में डाल दें। तीसरी बार फिर पढ़ें और ऐसा ही करें। मतलब यह कि 7 बार पढ़ें और हर बार ढेले पर दम करते जाएं और वही जुमले कह कर क़ब्र में डालते जाएं जब सात बार पढ़ चुकें उठकर चले जाएं फिर दूसरी जुमरात को इसी तरह सात ढेले लेकर जाएं और इसी तरह सात बार पढ़ें और ढेलों पर दम करके अमल करें फिर तीसरी बार फिर चौथी यानि लगातार 7 जुमरात को यह अमल करना होगा। इन्शा अल्लाह तआला इस मुबारक अमल की बरकत से बुरी से बुरी आदत छूट जाएगी। यह अमल और यह नक़्श हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द दामत बरकातहुमुल क़ुदसियह का नक़्श यह है-

بسم الله الرحمن الرحيم لاحول ولا قوة الا بالله العلى العظيم

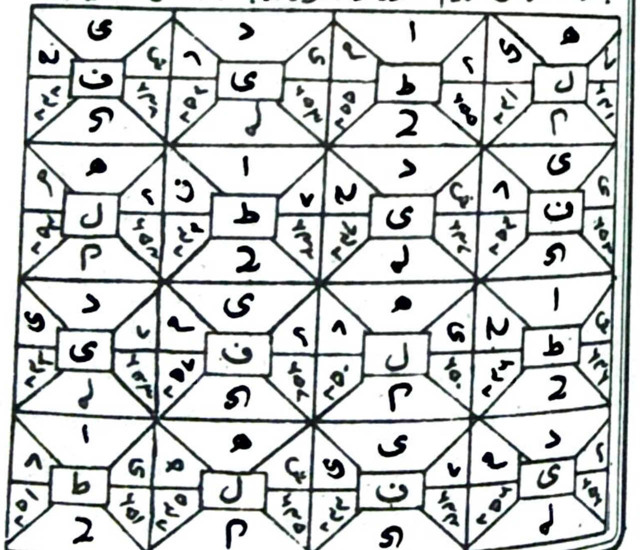

बताया हुआ और दिया हुआ है और तजुर्बा करने पर निहायत मुर्जरब साबित हुआ। यह मुबारक नक़्श बदकार को नेक बनाने में अक्सीर का हुक्म रखता है और दिक़ सिल के मरीज़ों को इसका पानी धोकर पिलाना और मरीज़ के गले में रहना इन्शाअल्लाह शिफ़ा का ज़ामिन है।

दूसरी तरफ़ यह इबारत है-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَا اللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ دِلْ مَا دَاكُنْ مُسْتَقِيْمُ بِحَقِّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ يَا لَطِيْفُ يَا نُوْرُ
يَا حَقُّ يَا هَادِيْ يَا مُبِيْنُ يَا صَبُوْرُ بِحَقِّ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ يَا حَمِيْدُ الْفَعَّالُ ذُوالْمَنِّ عَلٰى جَمِيْعِ خَلْقِهٖ بِلُطْفِهٖ يَا حَلِيْمُ يَا رَشِيْدُ رَبِّ
اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ اِلٰهِيْ عَقْلِيْ مَغْلُوْبٌ وَنَفْسِيْ مَعْيُوْبٌ
وَقَلْبِيْ مَحْجُوْبٌ وَلِسَانِيْ مُقِرٌّ بِالذُّنُوْبِ فَكَيْفَ حِيْلَتِيْ يَا سَتَّارَ الْعُيُوْبِ يَا غَفَّارَ الذُّنُوْبِ وَصَلَّى
اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمْ

यह नक़्श दिक़ और सिल के ला इलाज मरीज़ों को धोकर पिलाएं और मरीज़ के गले में पड़ा रहने दें इन्शा अल्लाह शिफ़ा कामिल हो।

नक़्श हरकारा : यानि यह नक़्श हर हर ज़रूरत में दिया जा सकता है जैसे कई दर्द हो तो दर्द की जगह बांधे। दर्द रफ़अ हो। बुख़ार में लिखकर मोमजामा करके बाज़ू पर बांधे बुख़ार से नजात मिले। जो आदमी अपने पास रखे हर दिल अज़ीज़ हो चांदी के पत्तर पर कन्दा कराके अंगुश्तरी में रखकर पहने। बे शुमार बरकतें और फ़ज़ीलतें ज़हूर में आएं। यह नक़्श 34 का है और 34 अदद चूंकि किसी इस्म बारी के नहीं हैं।

٧٨٦

٨	١١	١٣	١
٣	٢	٧	١٢
٣	١٦	٩	٦
١٠	٥	٤	١٥

बड़े ग़ौर करने पर भी यह मसला हल न हो सका चुनांचे आला हज़रत

वजह नहीं कि इस अमल से मक़सद पूरा न हो।

चोरी का माल वापस मिलने का अमल व नक़्श : या सय्यदी अहमद बिन यमन की सिम्त बुलन्द मुक़ाम पर खड़े होकर कहे गुमशिदा चीज़ मिल जाएगी और यह नक़्श भी लिखकर दे दे इसको किसी पत्थर के नीचे दबा दिया जाए।

خواجہ عبدالکریم مغربی

بستم ۸۶ مغرب دس و

٣٨٥	٣٨٨	٣٩٢	٣٧٨
٣٩١	٣٧٩	٣٨٤	٣٨٩
٣٨٠	٣٩٤	٣٨٦	٣٨٣
٣٨٧	٣٨٢	٣٨١	٣٩٣

तसख़ीर का बे नज़ीर मुजर्रब नक़्श : यह नक़्श 7 अदद ज़ीक़ाअदा के महीने के शुरु चांद में पहले यकशम्बा यानि इतवार के दिन सुबह बाद तुलूअ आफ़ताब लिखे जाएं और हर दिन एक नक़्श रूई में लपेट कर बत्ती बनाकर मिट्टी के चराग़ में तिल का तेल और थोड़ा चम्बेली का तेल डालकर रोशन करें और बत्ती का रुख़ महबूब के घर की तरफ़ रखें। हर दिन नया नक़्श बत्ती बनाकर रोशन करते रहें। इन्शा अल्लाहुल मौला अल करीम 7 दिन गुज़रने न पाएंगे कि मतलूब बेक़रार होकर हाज़िर होगा। फ़लां बिन फ़लां की जगह महबूब का नाम मय वालिदा लिखा जाए।

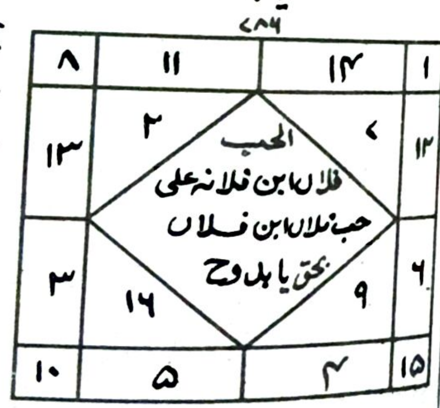

दिलों को मुसख़्ख़र करने का मुजर्रब अमल : يَا مَعْطُوْفُ ذُوالْقُوَّةِ الْمَتِيْن، اَعْطِفْ عَلٰى قَلْبِ فُلَانٍ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْن हर दिन 313 बार पढ़े मतलूब का तसव्वुर रखे। अव्वल आख़िर 11-11 बार दरूद शरीफ़ पढ़ें। 11 या 21 वर्ना 40 दिन में मतलूब हाज़िर होगा जितना तसव्वुर क़वी होगा उतना ही जल्द असर होगा। फ़लां की जगह महबूब का नाम ले।

बुज़ुर्गों की रूह से मुलाक़ात का तरीक़ा : अगर आप अपने मुर्शिद या किसी वली अल्लाह से उनके विसाल के बाद मुलाक़ात के ख़्वाहिशमन्द हैं तो उनकी क़ब्र पर हाज़िर होकर क़ब्र की पांयती को खड़े होकर यह शेअर एक हज़ार बार पढ़े अगर सफ़ाए बातिन है तो फ़ौरन मुलाक़ात होगी वर्ना तादाद पूरी करके मुराक़बा करें कि ग़फ़लत तारी हो जाए। उस वक़्त ज़रूर मुलाक़ात का शर्फ़ होगा। शेअर यह है-

تَقَلَّبِیْ وَلَا تَرُدُّ وْسُؤَالِیْ

اَغِثْنِیْ مُرْشِدِیْ مُحَمَّدْ اِبْخَالِیْ

बदकारी की आदात छुड़ाने के लिए सूरह यासीन शरीफ़ का मुजर्रब अमल

(अतिया हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द मद्द ज़िल्लहु) : आम तौर से देखा जाता है कि कुछ नौजवान तरह तरह की बदकारियों का शिकार हैं। बीवी शोहर से नाला है कि मेरा शोहर जुवा खेलता है शराब पीता है जितना पैसा कमाता है सब जुए शराब में बर्बाद कर देता है कहीं यह शिकायत सुनने में आती है कि दूसरी औरत से नाजाइज़ ताल्लुक़ात हैं वग़ैरह वग़ैरह। बस मन्दरजा ज़ैल नक़्श सिलवर पर कन्दा कराके उसका पानी पीने को दिया जाए और अगर यह किसी वजह से मुमकिन न हो यानि यह कि जिसकी बुरी आदत छुड़ाना है वह परदेस में है या नक़्श का पानी पीने से गुरेज़ करेगा तो यह तरकीब अमल में लाएं कि सात जुमरात मुतवातिर क़ब्रिस्तान में जाएं और